चित्र 'क' और 'ख' किन वस्तुओं के हैं ?

3. खाली स्थानों में उपयुक्त संख्याएं भरिए -

	1995	2033	1998
2001	1994	2011	

BP.21

पानी में आग

देश विदेश घूमता एक ज्योतिषी एक राजा के दरबार में पहुंचा। उसने राजा से मिलने की इच्छा प्रकट की। राजा को जब पता लगा कि ज्योतिष का एक प्रकांड विद्वान राज में आया हुआ है तो उसने

निककर बीच... जाइये। दो गोल पोस्ट बना... सामान तैयार हो गया।

चार चक्करों का खेल होता है। प्रत्येक चक्कर साढ़े-सात, साढ़े-सात मिनटों के होते हैं। टेनिस की गेंद होती है और उस पर झपट्टा पड़ता है। यह टीम गेम है। वैसे ही जैसे घोड़ा पोलो।

१९६८ में एक विश्व साइकिल पोलो संस्था बनी थी किन्तु यह कार्य नहीं कर सकी। हाल ही के इंग्लैंड अमेरिका और जर्मनी के दौरे में मैंने विश्व साइकिल पोलो संगठन बनाने का प्रयास किया था और उसमें हमें काफी सफलता मिली।

भारत में यह खेल लोकप्रिय हो रहा है और राजस्थान तो इस खेल में राष्ट्रीय चैम्पियन है। शीघ्र ही यह खेल अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का हो जाएगा, ऐसी उम्मीद है।

घोड़ा पोलो जिन्दा रहे या न रहे।

यूनानीमतसे विषोंका कुछ वर्ण

यद्यपि यूनानी हकीमोंके मतमें जो वस्तु चौथे द शरद या खुश्क है (अर्थात् महागर्म महाशीतल प्रायः वे सभी विष समझेजातेहैं परंतु फिरभी इनके यह किसम लिखीहैं १ प्रथम मादनी यानी (जो खानसे नि व हो) जैसे पारा, मुर्दासंग, सफेदा, संखिया, सिंगरफ, सिल, जंगाल, सिंदूर, हालचिकना, कसीस इत्यादि।

२ दूसरे नबाताती विष जो वृक्ष वनस्पति आदिकी वगैरहहों या इनसे बनाये जावें जैसे भिलावा कुचला ध कनेर वगैरह।

३ तीसरे हैवानाती जहर जो जीव जंतुवोंसे पैदा हो जैसे बिच्छूकाजहर, तथा अन्य जहरीले जानवरों का जहर जानवरोंका मांस जैसे गिरगटका मांस इत्यादि।

इन सबका यूनानी मतसे विशेष वर्णन और शांति य पुस्तकोंमें देखो ग्रंथ बहुत बढने के भयसें इसजगह नहीं लि

इति पं० मुरलीधर शर्मा राजवैद्य विरचित सर्वविषचिकित्सा

पुस्तकमिलनेकाठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापखाना-खेतवाड़ी-मुंब

सर्वविषचिकित्साकी–अनुक्रमणिका।

संख्या.	विषय.	पृष्ठांक.

पहलाप्रकरण.

स्थावरविषोंके गुणागुण और उनकी शांति.

अन्य विषोंका वर्णन.

अनुक्रमणिका।

अनुक्रमणिका।

अनुक्रमणिका।

तीसरा प्रकरण.

इति.

श्रीः ।

सर्वविषचिकित्साप्रारम्भः ।

पहलाप्रकरण-

स्थ रविषोंके वर्णनमें ।

मुख्यतासे समस्त विषोंके स्थूलरूपसे दोभेद विद्वानोंने कियेहैं एक स्थावरविष दूसरे जंगमविष ।

स्थावरविष वे समस्तविष कहलातेहैं जो पार्थिव अर्थात् पृथ्वी-सम्बन्धी खानों आदिसे उत्पन्नहोतेहैं तथा वानस्पत्य जो वनस्पतिके अवयवोंसे उत्पन्नहोतेहैं इन दोनोंप्रकारके स्थिररूप विषोंको स्थावर-विष कहतेहैं जैसे संखिया, हरताल वगैरह तथा कुचला सींगी-मोहरा आदि ।

यद्यपि स्थावरविष अनेकहैं जिनकी गणना यथार्थरूपसे नहींहो-सकती तौभी आयुर्वेदके ग्रंथोंमें ९ विष और ७ उपविष लिखेहैं भावप्रकाशमें नौविष इस भांति लिखेहैं ।

१ वत्सनाभ २ हारिद्रक ३ सक्तुक ४ प्रदीपन ५ सौराष्ट्रिक ६ शृंगिक ७ कालकूट ८ हलाहल ९ ब्रह्मपुत्र ।

ये विष पुस्तकोंमें लिखेहैं परंतु इससमय ये सब मिलते नहींहैं

सुश्रुतमें विषोंके भेद मूल, पत्र, पुष्प, दूध और कंद तथा धातु इसप्रकारसे लिखेहैं जिनके नाम और लक्षणोंका इससमय ठीक २ पता नहीं लगता है कालक्रमसे वे सब प्रायः लुप्तप्राय अथवा दुर्ज्ञेयहैं

और नकोई इनको ठीक २ जानताहै इनमेंसे केवल दोविष मिलतेहैं और उन्हींकी प्रवृत्ति प्रायः औषधादिमें करतेहैं एक वत्सनाभ (जिसे बच्छनाग कहतेहैं) दूसरा शृंगिक (जिसे सींगीमोहरा कहतेहैं) प्रसिद्धहैं बल्कि शृंगिकके रूप और गुणोंमें भी अंतरसा प्रतीत होताहै ।

जब इससमय ये विष लुप्तप्रायही हैं तब इनका विशेष वर्णन करना और इनकी शांतिका उपाय लिखना व्यर्थसाहै इसीसे इनका साधारणसा वर्णन कियागयाहै ।

भावप्रकाशमें उपविष सात इसप्रकारसे लिखेहैं कि १ आकका-दूध २ थूहरकादूध ३ कलहारी ४ कनेर (सफेदकनेर) ५ गुंजा (सफेदगुंगची) ६ अहिफेन (अफीम) और ७ धतूरा वाग्भट्टीय रसरत्नसमुच्चयमें उपविष इसप्रकारसे लिखेहैं कि कलहारी विष-मुष्टि (कुचला) कनेरकीजड, नीलिका, धतूरा और आंक ।

जो जो विष उपविष इस समय पायेजातेहैं और मूर्खता अथवा द्वेषादिसे इनका किसीकारण उपयोग होजावे तो प्रायः इनमेंसे बड़े हानिकारक होतेहैं इसहेतु इनके लक्षण गुण अवगुण और शांतिके उपाय आदि सब लिखतेहैं यद्यपि विष उपविष सबी मनुष्योंकी साधारण प्रकृ-तिके विरुद्ध होनेसे मनुष्यशरीरमें उनका उपयोग बड़े भयंकर और दुः-

---

(१) अर्कक्षीरं स्नुहीक्षीरं लांगली करवीरकः । गुंजाहिफेनो धत्तूरः सप्तोप विषजातयः १ (इतिभावप्रकाशः)

(२) लांगली विषमुष्टिश्च करवीरजटास्तथा । नीलकः कनकोकिश्च वर्गोह्युपविषात्मकः २ (इतिरसरत्नः) इसमें करवीरजटा इस जगह कई 'करवीरजयास्तथा' ऐसा पाठ मानतेहैं और जयासे भंगको मानतेहैं ।

साध्य रोग उत्पन्न करताहै परंतु तौभी बहुतसे बडे रोगोंके नष्ट करनेमें वे चमत्कारिक प्रभाव रखतेहैं इसीसे सुज्ञ वैद्य डाक्टर प्रायः औषधके रीतिपर बहुत सावधानीसे इनका यथोचित् उपयोगभी कियाकरतेहैं ।

स्थावर विषोंके गुणागुण और उनकी शांति

वत्सनाभ।

यद्यपि वैद्यक के मतानुसार वत्सनाभ और शृंगीविष जुदे जुदेहैं परंतु इससमय प्रायः अत्तार और पंसारी वत्सनाभ (जिसे बच्छनाग) कहतेहैं और शृंगी (जिसे सींगीमोहरा कहतेहैं) दोनोंको एकही जानतेहैं और जो सींगडीके आकारकी जड रंगमें काली और तोडनेमें कुछ चमकदार होतीहै उसे ही दोनों नामोंसे देतेहैं तथा तेलिया मीठा भी इसे कहतेहैं अंग्रेजीमें इसे "एकोनाइटरूट" कहतेहैं और अरबीमें इसेही "वीश" कहतेहैं यह बड़ा उग्रविष होताहै अशुद्ध तथा अयोग्य रीतिपर यह एक माशे या इससेभी कम मृत्युकारक होजाताहै वैद्य, डाक्टर और समझदार अत्तारोंके सिवाय इसे किसीको पास रखनाभी अनुचितहै ।

प्रायः वैद्य इसका यथोक्त शोधन करके बड़ी सावधानीसे रसादिक औषधोंमें बहुतथोड़ी मात्रासे उपयोग करतेहैं डाक्टरोंके यहांभी इसका अथवा इसके सत "एक्सट्रैक्टऑफ एकोनाइट" वगैरह का वर्ताव होताहै पर बहुतही सावधानीसे–यह किस प्रकारसे किस२ रोगमें किस २ औषधके साथ उपयोग कियाजाताहै इसके लिखकी यहां आवश्यकतानहीं है क्योंकि यह काम पूरे वैद्य या डाक्ट-

रोंकाहै जो अपने सामने गुरूसे सीखेहों हां इतना लिखेदेतेहैं कि यह अवयवकी बढीहुई गतिको रोंकताहै और प्रायः उत्तेजक औषधोंके साथ उत्तेजकभी होताहै और जैसे गुणागुणवाले औषधोंके साथ इसका संयोगहोताहै उसीके गुणागुणको बढानेमें योगवाही होजाताहै।

इसका लेप पसलीके दर्द तथा अन्यस्थानके दर्दोंको नष्टकरताहै वायुके रोगोंको तथा सोथ आदिकोभी नष्टकरताहै विच्छू ततैये मधुमक्खी आदिके काटे हुवे परभी इसका उपयोग करना (घिसकर लगाना) लाभदायक होताहै।

इसके अधिक या अयोग्य उपयोगमें यानी (खाये जानें) से शिर घूमने लगताहै शरीरमें सुन्नता होतीहै मनुष्य सूखने लगताहै और अनुमानसे विशेष अधिकहो तो हलकमें सुन्नता झनझनाट और रुकावट होजातीहै और वमन तथा दस्तभी होतेहैं ठीक यत्न नहींहो तो मृत्युभी होजातीहै।

इसकी शांतिका यत्न यहहै कि तत्कालही खूब वमन कराना और जो ज्यादे समय होगयाहो तो जदवार अर्थात् निर्विषी दूधके संग पिलाना और घृतादि स्निग्ध पदार्थों का उपयोग करना।

निर्विषीकी मात्रा अनुमान २ माशेके लगभगकीहै परंतु विषका प्रभाव कमहो तो कमदेना और अधिकहो तो कईवार इसीमात्रासे देते रहना चाहिये।

कालकूट हलाहल आदि विष इस समय उपयुक्त नहींहोते इसलिये नहीं लिखे।

अर्क अर्थात् (आक.)

इसके लक्षण और पहँचान लिखनेकी आवश्यकता नहींहै इसे

प्रायः सभी जानतेहैं इसके पेड़ जंगलोंमें योंहीं खड़े होजातेहैं गज २ दोदोगजके पेड़ चौड़े हथेलीसे पत्ते सफेद लालसी कर्णिकावाले फूल और तोते जैसे हरे २ फल प्रायः सभीने देखेहोंगे इसका पत्ता या डाली तोडनेसे दूध टपाटप टपकने लगताहै ।

इसके हरेपत्ते आदिमेंभी थोड़ा विषका अंश होताहै परंतु विशेष जहरीला इसका दूध होताहै—इसमें विषका प्रभाव कुछेकहै तौभी यह वृक्ष अनेक रोगोंकी चमत्कारी औषधहै—इसके अवयवोंका वर्त्ताव वैद्यों (डाक्टरों) से अधिक जंगली भील गवाँर कृषाण लोग बहुत करतेहैं और प्रायः कई व्याधियोंमें लाभ उठातेहैं परंतु इसके वर्त्ताव-मेंभी सावधानीकी आवश्यकताहै ।

इसका दूध अंगके सोथपर, विच्छू आदिके काटेपर, बिगडे हुवे फोड़े फुन्सी पर, वायुसे शरीरमें दर्द होने, अकडजाने आदि पर लगातेहैं ।

एकबार हमारे सामनेकी बातहै कि जंगलमें एक ग्वालेको कबरे साँपने काटा ग्वालेने उसी वक्त काटेहुवे स्थानको नखचि-मटीकी सुईसे खोदकर वहांका दशबीस टपके खून निचोडकर उसपर खूब आकका दूध डाला और आकके फूल अनुमान १५।२० खागया उसके शरीरमें सर्पका विष कुछभी नहीं चढा बल्कि, उसने

---

(१) क्षीरमर्कस्यातिक्तोष्णंस्निग्धं सलवणं लघु॥ कुष्ठगुल्मोदरहरं श्रेष्ठ मेतद्विरेचनम् । १। अर्कमूलं कफोत्सारि स्वेदनं वामनं तथा ॥ श्वासकास प्रतिश्यायानतीसारं प्रवाहिकाम् । २ । रक्तपित्तं शीतपित्तं ग्रहणीं चाप्यसृग्दरम् । नाशयेत्कफजान्रोगान् विषंकीटसमुद्भवम् ।३। अलर्ककुसुमं वृष्यं लघुदीपनपाचनम्।अरोचकप्रसेकार्शः कासश्वासनिवारणम्।४।इति भा.प्र०

कहाकि हमलोग बहुधा सर्पके काटेपर इसका उपयोग करतेहैं और फ़ायदा होताहै ।

वैद्यकमें आकके दूधको खारापनालिये, कडुवा, गर्म, स्निग्ध, हलका और कुष्ठ, गुल्म, उदररोग नाशक श्रेष्ठ विरेचन लिखाहै ।

इसकीजड कफके उखाडनेवाली, पसीना लानेवाली और वमन-कारक कहीहै और श्वास, खाँसी, जुखाम अतिसार, प्रवाहिका (मरोडे) रक्तपित, शीतपित्त, ग्रहणी और रक्तप्रदरनाशक है कफके विकारों, कीडोंके विषकी नाशकहै ।

इसके फूलके भीतरकी कर्णिका (किंगरी जिसे फुल्ली या जीरा-भी कहतेहैं) दीपन, पाचन और वृष्य तथा हलकी होतीहै अरुचि मुँहसे पानी आने, बवासीर, खाँसी और श्वासको नष्ट करतीहै ।

हमने इसे चूर्णों तथा पाचन गोलियोंमें वर्त्ताव करके देखाहै वास्तवमें इन फुल्लियों के योगसे बनीहुई गोली परमपाचन और विशूचीनाशक होतीहैं—साधारण जंगली लोग नमकके संग दोचार फुल्ली खातेहैं पेटके दर्दमें, अजीर्णमें, खाँसीमें, उन्हें बहुत फायदा करतीहैं ।

इसकेपत्ते गर्मकरके वायुके सोजेपर बाँधतेहैं तथा शरीरमें और प्रकारका कफ वायुका विकार (सोथ दर्द आदि) हो उसपर बांधतेहैं शरीरकी सुन्नता और अकडाव वगैरहमें पत्तोंपर चिकनाई लगाकर सेंककर बाँधतेहैं न्हारवे परभी तेलसे चिकने करके गर्म-पत्ते बांधतेहैं ।

इसका दूध जखमपर लगानेमें इतना विचार करना होताहै कि उसे

ढलते दिन अर्थात् दुपहर पीछे शामके समय लगातेहैं और ऐसा जानतेहैं कि चढते दिन आकका दूध शरीरमें चढजाता है।

यदि इसका दूध अयोग्य रीतिसे जखमपर लगाया जाताहै तो जखमको विशेष फैलादेताहै मांसको गला और सड़ा देताहै विशेष वेदना होतीहै।

इसकी शांतिके लिये ढाक के क्वाथका उपयोग करना श्रेष्ठहै यदि जखमपर विकार कियाहो तो उसे ढाकके क्वाथसे धोना और ढाकका सूखा वक्कल पीसकर बुरकादेना चाहिये।

यदि किसीकारण इसका दूध आदि अवयव अयोग्यरीतिसे खानेमें आयेहों और उनका विकार हो तो वही ढाकका क्वाथ पिलाना चाहिये।

इसका दूध विशेष तीक्ष्ण होताहै उससे बहुत दस्त लगतेहैं पेटकी आँतें कटजातीहैं और मनुष्य बेहोश होकर मरजाताहै।

पत्तोंके कच्चे खायेजानेसे भयंकर घूमनी और नशा होताहै वमन और दस्त दोनों होने लगतेहैं।

इसके सभी अवयवोंके विषकी शांति ढाकसे होती और घृतभी लाभ पहुँचाताहै।

सेहुंड (थूहर.)

इसकी अनेक जातीहैं जैसे डंडाथूहर, अंगलियाथूहर, तिधाराथूहर और पात्याथूहर इत्यादि—और प्रायः सभीका दूध जहरीला होताहै।

इसका दूध वैद्यकग्रंथोंमें तीक्ष्ण विरेचन लिखाहै और कई व्याधियोंपर बर्तीहै पर इससमय उसका वर्त्ताव नहीं है परहाँ बड़े

दीर्घरोगों (कुष्ठ और उदररोगों) आदिमें इसके ठीक उपयोगसे अवश्य लाभहोताहै ।

इसके दूधमें इतनी तीक्ष्ण विरेचनी शक्तिहै कि जराभी अधिक अथवा अयोग्यरीतिसे उपयोगहो तौ दस्तबंदही नहींहोते और रुधिरके दस्त विशेष लगकर मनुष्य मरजाताहै ।

इसके दूधका फोहा भरकर बहुत सावधानीसे दूखते हुवे जाड या दांत पर लगानेसे फायदा करताहै और हिलते हुवे दांत में विशेष लगानेसे वह उखड जाताहै ।

इसके डंकल और पत्तों को जलाकर नमक मिलाकर चुटकीभर खानेसे अजीर्ण शांत होताहै—अधिकदिन खाते रहनेसे मंदाग्नि और प्लीह वृद्धि आदि उदर रोगोंमें लाभदायक होताहै ।

यदि इसके दूध अथवा और अवयवसे विकारहो अधिक रेचन या रुधिरके दस्तहों तौ मक्खन मिश्री खिलाना या कच्चादूध (भैंसका-दूध) मिश्री मिलाकर पिलाते रहना हितहै ।

कलहारी ।

यहभी उपविषोंमें लिखीहै और वास्तवमें इसकी जड़में विशेष करके विषका प्रभावहै यहां हमारे देश दिल्ली प्रांतमें यह विशेष नहीं होती हमने मालवेमें भीलोंसे मंगायाहै माळवी और गुजराती भाषामें इसे कलगारी कहतेहैं और इसीनामसे वहांके भील और कृषाण लोग जानतेहैं गौ बैल आदि पशुवोंके बंधा पडजानेमें वे लोग इसके पत्ते

---

(१) उष्णवीर्यं स्नुहीक्षीरं स्निग्धंचकटुकंलघु । गुल्मिनांकुष्ठिनांचापि तथैवोदररोगिणाम् । हितमेतद्विरेकार्थे येचान्येदीर्घरोगिणः ॥ १ ॥ भा.प्र.

कूटकर आटेमें मिलाकर या दानेमें मिलाकर प्रायः खिलातेहैं इससे डंगरोंका पेट छुट जाताहै जड़ इसकी बहुत तीक्ष्ण होतीहै गर्भवती पशुकोभी गर्भपात करदेती है इसकी जड़को घिसकर बवासीरके मसों पर लगातेहैं जिससे मस्से सूखजातेहैं सोथ और दर्दपरभी लेप करतेहैं।

जड़का उपयोग अधिक या अयोग्य होतो इससेभी दस्त लगजा-तेहैं पेटमें इतने जोरसे ऐंठनका दर्द होताहै कि मनुष्य बेसुध होजा-ताहै और मल टूटकर मरभी जाताहै।

इसके विकारकी शांतिके लिये घृतयुक्त मट्ठा मिश्रीडालकर पिलाना चाहिये अथवा दहीका पानी निचोडकर जो गाढारहे उसमें शहत मिश्री मिलाकर खिलाना चाहिये।

कनेर।

कनेरके वृक्ष बागोंमें विशेषकर होतेहैं तीन चारगज ऊंचापेंड होताहै पत्ते लंबे एक अंगुल चौडे होतेहैं फली लगतीहैं फूल सफेद आताहै तथा लालफूल का कनेरभी होताहै यद्यपि लालफूलवाला कनेरकी जडमें विषहै परंतु विशेष विष सफेद कनेरकी जडमें होताहै जडके सिवाय छालमें तथा पत्तोंमेंभी कुछ विषका अंश होताहै।

कनेरकेपत्ते व्रण, नेत्ररोग, कुष्ठ इन्हें नष्ट करतेहैं उष्णवीर्य हैं कृमिरोग और खुजलीको दूर करतेहैं तथा खानेसे विषका प्रभाव करतेहैं।

इसके पत्तोंको सुखाकर नस्य लेनेसे शिरोरोग (कफ का शिरोरोग) नष्ट होताहै तथा सफेदकनेरके हरे पत्तोंमें सिद्ध कियाहुवा तैल सूखी खाजको तत्काल नष्टकरताहै।

इसकी जड़की छाल बहुतसे तिलोंमें पडतीहै तथा अन्यरीतिसेभी इसका उपयोग परमवृष्य होताहै इसका लेप दर्दों और विशेषपीठके दर्द और रींगनवायुको नष्टकरताहै पर यह बडा तीक्ष्णविषहै इससे प्राणभी नष्ट होजातेहैं बिना सुज्ञवैद्यकी सम्मतिके कभी इसकी जडका व्यवहार करना उचित नहीं पर लेपमें प्रायः हानिनहीं है ।

इसकी जड़का जराभी अधिक या अयोग्य व्यवहारहो तो मनुष्यके शरीरमें बड़ी उष्णता होजाती है कंठ सूखने लगताहै और बंधहोजाताहै बेहोशी होकर मृत्यु होजातीहै ।

यदि इसकी जड़का विकारहो और तत्कालही मालूम पड़जावे तो खाये जातेही वमन कराना और ठंढा दूध पिलाना, ठंढेपानीमें बैठादेना, ठंढापानी शिरपर डालना चाहिये ।

धतूरा ।

इसके गज डेढगज तक ऊंच वृक्ष जंगलमें होतेहैं पत्ते वड़के पत्तेके बराबर जरा किंगरेदार होतेहैं फूल सुलफी ।चिलमके आकारके सफेद ओर फल छोटे नींबूके बराबर काँटेदार होताहै–धतूरेकेभी फूलके अंतरसे दो तीन भेद होतेहैं जैसे ।जिसके फूलमें कालापनहो उसे कालाधतूरा कहतेहैं और जिसके फूलमेंसे दो तीन फूल निकलें उसे बड़ा धतूरा या राजधतूरा कहतेहैं ।

इसकेभी सभी अंगोंमें कुछ २ विष (मंद) होताहै विशेष करके जड़ तथा फलके बीज जहरीले होतेहैं यह मादक (नशालाने

---

१ धत्तूरो मदवर्णाग्निवातकृज्ज्वर कुष्ठनुत । उष्णोगुरुर्व्रणश्लेष्मकंडूकृमिविषापहः १ (इति भा. प्र.) कार्यासमर्थोदर्पघ्नो नस्ये प्राशे बुधैः स्मृतः (इति अ. नि.) ।

वाला) होताहै शरीरका रंग लाल करताहै रुक्ष और गर्महै और ज्वर कुष्ठको दूरकरताहै कफको शोषण कर्ता है।

इसके पत्ते गर्म करके गुमडे फुन्सीपर बाँधनेसे उसे पकाकर फोड़देतेहैं वायुके सूजन और दर्दपरभी बाँधतेहैं।

इसकीजड कुत्तेके काटेहुवेके विषको दूरकरतीहै जिसकी विधि हमारी बनाई सुश्रुतकी टीका कल्पस्थान छठे अध्यायमें देखो।

इसके बीज अत्यंत नशालातेहैं और निश्चयतही शोषणहै इनका तेल निकालकर १ सींकभर पानमें लगाके स्तंभनके लिये खातेहैं।

इसके अवयवोंका वर्त्ताव वैद्योंमेंभी प्रायः होताहै और इसका सत निकालाहुवा डाक्टरोंके यहांभी वर्त्ता जाताहै पर इसमें बहुतही सावधानी चाहिये।

इसके बीज पांच चारभी प्रायः मनुष्यको बेहोश करदेतेहैं और अधिक या अयोग्य रीतिपर उपयोग होनेसे मुँह और कंठमें जलनके साथ खुश्की होतीहै प्यास बढजातीहै जी मिचलाताहै शिरघूमताहै वमन होताहै तथा नेत्रोंकी पुतली चौडी होजातीहै फिर बेहोश होकर मृत्यु होजातीहै।

इसके विकारशांतिके लिये तत्काल (खाये जातेही) वमन कराना शिरपर ठंढापानी डालना और बिनौलेकी गिरी दूधके संग पिलाना चाहिये और नस्यभी देना।

गुंजा।

गुंजा अर्थात् चिरमठी दोप्रकारकी होतीहै लाल और सफेद जिनमेंसे सफेद चिरमठीको उपविषोंमें गिनतेहैं—इसके छोटे २ वृक्ष होकर

बेलसी फैलतीहै पत्ते इमलीके समान होतेहैं फलीलगतीहै जिनके अंदरसे वीजनिकलतेहैं वही चिरमठीहोतीहै ।

यह सफेद चिरमठी अत्यंत उष्ण और इतनी गरिष्ठहोतीहै कि पचनी कठिन होजातीहै इसीसे विष कहलातीहै इन्हें वैद्यकके ग्रंथोंमें परमवृष्य और वीर्यजनक बलकर्त्ता कहाहै परंतु इससमय वैद्योंके वर्त्तावमें भी विशेष नहीं आतीहै ।

इनकालेप इंद्रलुप्त (बालगलजाने) में तथा खाजमें हितहै इनका अधिक या अयोग्य वर्त्तावहोतो महागरिष्ट और अपच होकर पेट गुमहोजाताहै क्षुधा नाश होजातीहै शिरमें दर्द और घूमनी आतीहै ।

इसके विकारकी शांतिके लिये धनिये से सिद्धकिया हुवा दूध पिलाना चाहिये ।

अहिफेन (अफीम)

पोस्तके दाने खेतोंमें कार्तिक अगहनके महीनेमें बोतेहैं इसका सुंदर पौधा दोहाथतक ऊंचा होताहै पत्तालंबा कटवा होताहै माघ-फाल्गुनमें इसके सुर्ख सफेद और ऊदे फूलफूलकर जंगलको परमसुहावना बनादेतेहैं फिर नींबूके बराबर पोस्तके डोंडे लगतेहैं उनमें चीरा लगाकर थोड़ा २ दूध निकालतेहैं जो उन्हीं पोस्तोंपर चिपटा रहताहै दूसरे दिन उस चिपटेहुवे दूधको जो कालासा पडजाताहै खुरच लेतेहैं उसेही इकट्ठा करके (पकाकर) अफीम बनातेहैं मालवेमें इसकी उपज वहुत होतीहै ।

यद्यपि इसकेभी सभी अवयवोंमें कछ मदका अंशहै तोभी इसके

हरेपत्तों और डाकलोंका साग बनाकर खातेहैं मालवेमें यहांतक इसका वर्त्ताव बढाहुवाहै कि हरेपत्ते मनों सुखाये जातेहैं और बारो-महीने इसके साग भाजी बनानेका रिवाजहै कुछ २ ग्राही (काबिज) होताहै और थोड़ा मदसाभी लाताहै पर उस देशवालोंको इसके खानेका बहुतही अभ्यासहै ।

इसकी कच्ची डोडियोंकाभी साग बनातेहैं तथा घीमें भूनकर भी खातेहैं ।

हां इसके सूखे बीजों (खसखस) में कुछ नशा नहीं होताहै इसका तेल जलाने और खानेकेभी काम आताहै खसखसकी मिठाई बनातेहैं या मीठेके संग योंहीं खातेहैं यह बलकारक होतीहै शरी-रको और धातुको पुष्ट करतीहै गर्म, स्निग्ध होतीहै इसे घोटकर दूध या पानीके (संग मिश्री इलायची आदिके) संग ठंढाई के तौर परभी पीतेहैं इस भांति पीनेसे ठंढी और तरावट करतीहै इसका हरीरा मूर्द्धा (दिमाग) को तर और पुष्ट करताहै ।

इसके फल (पोस्त) विना चीरे (विना अफीम निकालेहुवे) भी नशालातेहैं शोषण और ग्राही तथा वायुकारक होतेहैं अधिक सेवन करनेसे पुरुषत्वको नष्ट करदेतेहैं ।

अफीम यद्यपि विषहै तौभी हजारों आदमी इसे अभ्यास रूपक नित्य खातेहैं—कफनाशक और स्तंभनादिमें इसे लाभदायक बतातेहैं साधारण मनुष्यको किसी व्याधिके लिये इसकी मात्रा पावरत्तीसे आधीरत्तीतक होतीहै पर राजस्थानके कई राजपूतों को हमने तीन तीन तोले और इससेभी अधिक नित्य घोलकर पीते अथवा खाते देखाहै ।

वास्तवमें विचारकर देखो तो इसका अभ्यास हानिके सिवाय कुछभी लाभदायक नहींहै हां किसी व्याधिकी शांतिके लिये औषधके तौरपर वर्त्तावमें लानेकी और बातहै।

यह ग्राही (काबिज) है दस्तोंको बंधकरतीहै कफको शोषण करतीहै कफकी खांसीकोभी फायदा करतीहै वीर्यको शीघ्रपतन होने कोभी रोकतीहै नजलेकोभी फायदेमंदहै तथा इसका लेप सोथके दर्दको लाभदायकहै कानमें डालनेसे कानके दर्दको तत्कालही फायदा दिखाती और इसका लेप आँखोंपर करनेसे आँखसे पानी आना (ढलका) बंदहोजाताहै आँखोंमें डालनेकी औषधोंमेंभी पडतीहै मालवेके बहुतसे मनुष्य वृद्ध अवस्थामें इसका थोडा अभ्यास रखना (खाना) लाभदायक जानतेहैं और कहते हैं कि इससे दिलपर चंदगी रहती है नींद अच्छीतरह आजातीहै यहांतक मालवेमें इसका रिवाज पडगयाथा कि हरेक उत्सवमें तथा हरेक मेहमानकी मेहमानीमें यार दोस्तोंके मिलापमें बल्कि हरेक खुशीके मौकेपर अफीम घोलकर इसका पानी हथेलियोंमें डालकर परस्पर मनोहारके तौरपर देतेहैं और बड़ी २ महफिलोंमें सबको दीजातीहै।

इसका नित्य अभ्यास पड जानेपर छूटनी कठिन होजातीहै बल्कि प्रायः दिन २ बढजातीहै समयपर नहीं मिलनेसे हाथ पैर फूटतेहैं निहायत सुस्ती और बेचैनी होतीहै बहुतोंको ऐसा खयालहै कि अभ्यास पडे पीछे यह कदापि नहीं छूटती पर नही यदि अवस्था वृद्ध नहोगई हो तौ छूटजातीहै परंतु हां मनकरडा करना पडताहै कुछादिन थोडी तकलीफसीभी किसीको सहनी होतीहै।

इसके विशेष वर्त्ताव करने (खाने) से मनुष्य सूखने लगताहै हाथ पाँवोंमें कंप अथवा अकडाव होताहै नींदमें विकार होताहै अर्थात् शुद्ध निद्रा नहीं आती घुमेर रहतीहै तथा अनेक प्रकारकी वात व्याधि होजातीहै शरीर और धातुमें क्षीणता होजातीहै ।

इस व्यवस्थामें मनुष्यको धीरेधीरे इसे कमकरना चाहिये तथा पुरानी और इसके विकारनाशक औषधों (केशर, दालचीनी, जदवार, इलायची) आदिके योगसे मात्रा बनानी चाहिये और उस मात्रामें हर महीने ये वस्तु क्रमसे बढाते रहना और अफीम घटाते रहना चाहिये और घृत, दूध आदि पदार्थ यथारुचि खातेरहना चाहिये ।

और यदि इसके बेअभ्यासवाले मनुष्यके किसीकारण अधिक उपयोगमें आजावे (खाईजावे) तौ निहायत कब्जियत होजातीहै शिरमें चक्कर चढजाताहै नींद और बेहोशी होतीहै श्वासमें खर्राटा होताहै आँखोंकी पुतली सुकडजातीहै और मृत्युभी होजातीहै यदि खाई जातेही मालूमहो तौ उसीसमय वमन कराना चाहिये (हींगके योगसहित मैनफलआदिसे वमन कराना और भी अच्छाहै) और हींग पिलाना तथा घृत दूध आदिका विशेष उपयोग रखना श्रेष्ठहै और सोनेदेना उचितनहीं बल्कि चलाते फिराते रहना चाहिये—नागरबेलकी जड ६ माशे घोट पानीसे पिलाके वमन कराना ।

खाईहुई अफीम का नशा प्रायः दोघडी या घंटेभरमें आताहै और घोलकर पी हुईका एक घडी या आधेघंटेके अनुमानमें आताहै और इसे हुक्केकी भांति धुवां बनाकर पीनमें तत्कालही नशा आताहै टूटी चिलमपर इसकी गोली रखकर ऊपर कोयला लगाकर इसका

धुवां पीतेहैं इसे मदक कहतेहैं यह अफीमकी अपेक्षा अधिक खुश्की करताहै—इससमयके कई नवयुवक इसे उत्तेजक और स्तंभन समझ कर इसके फंदेमें पडजातेहैं अंतको ऐसे पछताते हैं कि कुछ ठीक नहीं और आरंभकी उत्तेजना और स्तंभनके बदले अंतको महाबलहीन होजातेहैं धातु सूखजातीहै और प्रायः किसीकामके नहीं रहते ।

कुचला ।

इसे वैद्यकमें विषतिंदु तथा विषमुष्टि कहतेहैं इसके वृक्षके बड़े बड़े महुवेके पत्तोंके आकारके पत्ते होतेहैं फल गोल लगतेहैं फलका बीज कुचला होताहै यह बहुत कडुवा होताहै इसका शुद्ध करके वैद्योंके वर्त्तावमेंभी आताहै और यह तथा इसका सत (इस्ट्रेक्रिया) डाक्टरी वर्त्तावमेंभी बहुत आताहै पर यह बडा तीक्ष्ण विषहै शुद्ध कुचलेकी मात्रा दो तीन चावलके बराबर होतीहै और सत अर्थात् इस्ट्रेक्रिया की मात्रा एकरत्तीका ३० तीस वां भागके लगभग होती है इसके वर्त्ताव करनेमें बहुत सावधानी चाहिये, जराभी विशेष वा अयोग्य हो तो मृत्युमें संदेह नहीं ।

शुद्ध कुचला वादीको नष्ट करताहै विशेषकर पैरोंमें उरुस्तं-भरोग सुन्न पडजाना, गठिया तथा रींगनवायु अर्थात् पैरमें झन्नाटे केसी कुलन इन्हें नष्ट करता है गर्म रूक्ष, वृष्य और वाजीकरणभीहै इन्हें दूधके संग व्यवहारमें लातेहैं ।

इसकी अधिक या अयोग्य मात्रा वर्त्तावमें आजावे तो पेटमें ऐंठनका दर्द, गलेमें खुश्की और खराश तथा रुकावटसी होतीहै तथा नसें खिचने लगतीहैं, शरीर ऐंठताहै और काँपने लगताहै और मृत्यु होजातीहै ।

इसके विकारकी शांतिके लिये दूधमें घृत और मिश्री मिलाकर पिलाना चाहिये तथा खातेही मालूमहोजावे तौ वमन करादेना और पीछे तमाखूके पानीकी बस्ति करना हित होताहै ।

इसे तैलमें जलाकर उस तैलकी मालिश करना पीठके दर्दको व अन्यवायुके दर्दको तथा रींगनवायुको बहुत फायदा करताहै ।

अन्य विषोंका वर्णन ।

संखिया ।

यद्यपि वैद्यकमें इसका कुछ विशेष वर्णन नहीं है तौभी समस्त देशमें यह बडा प्रसिद्ध और तीक्ष्णविष गिनाजाताहै यह सफेद, पीला लाल और काला सभीभांतिका होताहै पर सफेदही बहुधा प्रसिद्ध है यह सफेद विल्कुल सुहागेकेसीडली होतीहै नयेमें चमक भी होतीहै पर पुराना पडनेसे सील पहुँचनेसे चमक कम होजातीहै इसका स्वाद बिल्कुल फीका होताहै यह खान से निकलताहै।

डाक्टरीमें इसका (इसके योगकी औषधोंका) वर्त्ताव विशेष होताहै–तथा देशी अताई लोगभी इसे कोई कोई वर्त्तते हैं कई इसकी भस्म करके कई मोमिया बनाकर सिर्फ ताकतके लिये या कफवादीकी व्याधियोंकेलिये वर्त्ततेहैं ।

यद्यपि यह उत्तेजक बहुतहै परंतु वीर्यको जला और सुखादेताहै तीक्ष्ण इतनाहै कि इसकी मात्रा एकरत्तीके सोवें हिस्सेके लगभग समझनी चाहिये ।

मूर्ख और अनाडीलोग पुरुषार्थ बढानेकेलालचसे इसे खाने लगते हैं जिससे कई मूर्खतो अधिक मात्रा होनेसे तत्कालही मृत्युके वश

होजाते हैं और नही तौ थोड़ा २ सेवन करनेवालेभी अयोग्यरीतिसे वर्त्ताव करके अनेक भयंकर व्याधियों (श्वास, निर्बलता, क्षीणता, गर्मीका-चक्करआना, रूक्षताआदि) में फँसकर जीवनपर्यंत महादुःखपाते हैं ।

डाक्टर लोग इसे बहुत युक्तिपूर्वक सावधानीसे बहुतहीथोडीमात्रासे वर्त्तते हैं युक्तिपूर्वक वर्त्ताव करनेसे यह बलकारकहै, क्षुधाको बढाताहै, जठराग्निवर्द्धकहै और शरदीके रोगोंको तथा वारीके रोगों और पुराने बुखारको नष्टकरताहै ।

इसके सेवन करनेवालेको सारी अवस्थाभर घृत और दूध आदि स्निग्ध पदार्थोंकी आवश्यकता रहती है वे लोग घी दूध खातेभी विशेष हैं इसीसे कुछ इसका दुष्प्रभाव दबताहै ।

इसके खाये जानेपर चावल खाना और ज्यादे ठंढापानी पीना बहुतही बुराहै तथा तरबूज वगैरहभी ।

यदि यह मात्रामें ज्यादे खायाजावे या कोई शत्रु या ठग किसी तरह खिलादेवे तो पेटमें जोरका दर्द और जलन होती है, जीमिचलाताहै, वमन होती है, दस्त लगजाते हैं, गलेमें खुश्की होती है और प्यास बढजाती है, अंतमें श्वास और कंठमें रुकावटहो तथा शरीर ठंढा पडजावे और मृत्यु होजातीहै ।

शांतिके लिये तत्कालही मालूम पडजावे तो खूब वमन कराना और बिनोलेकी गिरी निवाये दूधके संग पिलाना तथा घृत-दूध मिलाकर पिलाना पानीकी जरूरत पडे तो गर्मपानी पिलाना चाहिये इसके अधिक खाये जानेपर भूलकरभी ठंढापानी पिलाना शिरपर डालना या ठंढेपानीसे न्हिलाना या अन्य शीतल पदार्थोंका उपयोग करना या चावल तरबूज वगैरह खिलाना उचित नहीं ।

भिलावा ।

वैद्यकमें इसका वर्त्ताव बहुतही विशेष लिखाहै और वास्तवमें यह अनेक व्याधियों के नाश करनेकी सामर्थ्यरखताभीहै इसे वैद्यकके अनुसार विष नहीं मानाजाता तौभी अयुक्तिसे उपयोग कियाहुवा विषका प्रभाव रखताहै इसमें संदेह नहीं इसीसे हम इसकाभी कुछ वर्णन करना उचित जानतेहैं ।

इसका फल मोटी दाख (मुनक्का) के बराबर पर करडा और टोपीदार होताहै बाजारमें अत्तारों और पंसारियोंकी दुकानपर बहुत मिलताहै इसका छिलका करडा होताहै छिलकेके नीचे तेल जैसा तरल पदार्थ होताहै । यही इसमें मुख्य गुणकारी पदार्थहै इसीका युक्तिपूर्वक साधन रसायन है .बवासीर और कफ वायुके रोगोंको नष्ट करताहै शरीरकी त्वचा और मुखमें लगजानेसे तत्काल उपाड करताहै फफोले और जखम डाल देताहै सोथ पैदा करताहै गर्महै ।

इसके भीतर गुठली निकलतीहै । गुठलीके भीतर गिरी निकलतीहै यह गिरी अत्यंत बलकारक और वृष्य तथा वाजीकरण है वातपित्तनाशक और कफवर्द्धक होती है ।

भिलावेका फल या तेल अग्निपर डालनेसे या उबालनेसे जो धुवाँ पैदा होताहै वहभी शरीरमें सोथ और जखम करदेताहै ।

इसके फलों (भिलावों) को गुडके संग कूटकर गोली बनाकर हाथ और मुँहको घृतसे चुपड़कर खातेहैं जिससे वायुके रोग शरीरका स्तंभ अकडाव या दर्द दूरः होताहै शरीरकी शरदी दूर होतीहै बवासीरमेंभी लाभदायकहै कुष्ठतकको खोदेताहै ।

कई मनुष्य इसे साबित (छोटे भिलावे) को गुडमें लपेटकर निगलजातेहैं इसविधिसे भी कफ, वायु को नष्ट करताहै और हाथ मुँहके सूजनका भय नहीं होता ।

मालवेमें न्हारवेकी व्याधिमेंभी इसे उक्त दोनों प्रकारसे खातेहैं कोई एक कोई तीन कोई साततक खाजातेहैं ।

बल पुरुषार्थके लियेभी इसका पाक बनाकर खायाजाताहै कई मनुष्य पहले तिल या खोपरा मुँहमें चबाकर इसे योंहीं खाजाया करतेहैं इससे भी मुँहमें सोथ नहीं होताहै ।

यदि भिलावेके अधिक खानेसे गर्मी ज्यादेहो तो दही मिश्रीका सेवन करना चाहिये ।

यह अधिक या अयोग्य रीतिसे खायाजावे तौ अत्यंत गर्मी करताहै मुँह और तालु तथा दांतोंकी जडमें सोथ होजाताहै और दांत हिलकर गिरजातेहैं रुधिर में तीक्ष्णता होकर विकार होजाताहै ।

इसके विकारकी शांतिके लिये तिल खोपरा चिरौंजी तथा दही और दूध इनका सेवन करना चाहिये यदि भिलावेका तेल शरीरपर लगजानेसे या इसका धुवां लगनेसे शरीर पर सूजन हो उपाडहो फुन्सियां या फफोले पडजावें तथा जखम होजावें तौ तिलोंको दहीमें या दूधमें पीसकर लेप करना चाहिये या ताजा खोपरा घिसकर लगाना चाहिये ।

भिलावेका एक भांतिका तेल गीली खुजलीकी सिद्ध औषधी इसके बनानेकी क्रिया यहहै कि ६ । ७ भिलावे और १ तोले तबकी हरताल पावभर सरसों का तेल लेना भिलावे साबित

और हरताल पीसकर ठंढेतेलमें डालना और कोयले सिलगाकर उसकेपास १ पात्र ठंढे पानीका रखना और जलते कोयलों पर वह भिलावों समेत तेलका पात्र रखदेना उसके धुवांसे बचेरहना और जब दोतीन झाल आगकी तेलमेंसे निकलजावें तब ऐसी युक्तिसे उस पानीमें औंधा करदेना कि धुवां लगेनहीं और आंचकी लोसे बचे रहे जब पानीपर पीला२गाढातेल तिरा मालूमदे उसे अंगुलीसे उतार लेना जले भिलावे फेंकदेना वह तेल खुजली पर लगाना बहुतही फायदा करताहै यह प्रयोग बहुतवर्त्तावकाहै और सिद्ध है इससे यहां लिखदियाहै भिलावेकी क्रिया सैकडों हैं ग्रंथ बढनेसे कहां तक लिखें ग्रंथांतरसे देखना चाहिये ।

(वक्तव्य) पात्रके मुँहपर लोहेकी बड़ी डंडी या बाँस बाँधदेनेसे औंधा करनेमें धुवां नहीं लगता ।

जमालगोटा ।

यह वैद्यक ग्रंथोंमें विष नहीं लिखाहै विशेषकर यह मारक विष हैभी नहीं पर अधिक तीक्ष्णतासे कभी २ विषके समान हानिकारक होताहै इसके वृक्ष दो दो हाथतकके होतेहैं पत्ता छोटा अडूसेके पत्तोंके आकार कुछ दोनों तरफ किंगरे दार होताहै इसके दो भेदहैं एकको छोटीदंती कहतेहैं दूसरेको बडीदंती बडीदंती के पत्ते कुछ अरंडके पत्तोंकी भांति कटवासे होतेहैं इसकी जडको दंती या दतूणी कहतेहैं और फलको दंतीबीज या जमालगोटा कहतेहैं ये फल अरंडकेछोटे बीजके समान होतेहैं पंसारियोंकी दूकानमें बहुत मिलतेहैं—ये अत्यं-

तही रेचनहैं और बिना शोधन कियेहुवे महातीक्ष्ण होतेहैं और उनसे वमन और विरेचन दोनोंहोते हैं।

वैद्य इन्हें शुद्ध करके विरेचनके लिये वर्त्ताव करतेहैं और डाक्टरीमें इनका तेल (क्रोटनआइल) वर्त्तावमें लातेहैं इन बीजोंके अंदर एक पतली दोपरती जीभसी होती हैं उसे शुद्ध करते समय निकाल देना चाहिये यह बड़ी तीक्ष्ण होती है ।

वैद्य इसका शोधन करके उचित औषधोंके साथ रेचनके लिये एक रत्तीके अनुमान इसकी मात्रा देतेहैं और इसकी जड़का वर्त्ताव करना बहुतही उत्तम समझतेहैं ।

इसका विरेचन उदर रोगों तथा जीर्ण ज्वरादि अनेक रोगोंको नष्ट करताहै ।

इसके अधिक वर्त्तावसे अत्यंत दस्त लगते हैं मलटूटजाता पेटमें ऐंठनका दर्द होताहै वमन होतेहैं पट्ठे खिचने लगतेहैं मूर्च्छा होजातीहै आँतोंमें जखम पडजातेहैं ।

इसके अधिकताका विकारहो और दस्तबंद नहों तो साधारणबात तो यह है कि थोडासा गर्मपानी पिलादेना उचितहै यदि इससेभी-नहीं रुकें तो पावरत्ती या आधरत्तीके अनुमान अफीम देकर थोडाघृतमिला दूध देनाचाहिये–गर्मीकी ऋतुहो तो ठंढाकरके और शरदीमें निवाया पिलाना–कई विनाघृत निकालामट्ठा पिलाना ठीक जानते हैं ।

इसके अयोग्य वर्त्तावसे दस्त साफ नहीं होते पेट गुम और भारी होजाताहै भूखबंद होजाती है उदररोग होकर तथा रक्तविकारहोकर सदाकेलिये व्याधिग्रस्तसा बनारहताहै ।

ऐसा होने पर युक्ति पूर्वक विरेचन लेना चाहिये और फिर अन्य औषधोंका उचित उपयोग और पथ्य करना चाहिये ।

भंग ।

यह प्रसिद्ध नशेकी वस्तु है हिंदुस्तानभरमें इसे प्रायः सबी जानते हैं—इसका छोटा पौधा अनुमान डेढ गज ऊंचा होताहै पत्ते सुंदर नुकीले और कटवा होतेहैं बीज बाजरेके बराबर गोल होतेहैं इस वृक्षकी पत्ती सूखीहुई भंग कहलाती है नशेबाज लोग इन्हें घोटकर ठंडाईकीभांति पीते हैं इसकी माजूमभी वनाते हैं साधारण इसकी मात्रा ४ रत्तीसे १ माशे तककी है इतनी घोटकर पीने या खाने से खासा नशाहोजाताहै--इसका नशा करनेवाले लोगभी इसे सहजमें छोड नहीं सकते--यह कफनाशक ग्राही (काबिज) पाचन और हलकी है विना-जलके योगसे गर्म और जलके योगसे उतनीगर्म नहीं रहती बल्कि शीतल और ठंढी होजाती है हमने भंगपीने से कइयों का पेट फूलजाना देखाहै मद उत्पन्नकरतीहै प्रलाप और अग्निबढाती है कामदेवको उद्दीपन करतीहै नींदलाती है और आनंद पैदा करतीहै खूब भूख लगातीहै ।

इसका अभ्यास अधिक होनेसे मनुष्यमें कभी २ उन्मत्तता आजातीहै धातु सूखने लगतीहै यदि स्निग्ध मधुर भोजन न मिले तो दुर्बलता और कृशता करतीहै विना पीये या खाये दस्त नहीं होता बेचैनी होने लगतीहै ।

साधारण मनुष्यको इसकी अधिकमात्रा खाई या पीई जाय तो मनुष्य बेसुध होजाताहै उन्मादकेसी बातें बकने लगताहै शिरमें

चक्कर आताहै जी मिचलाताहै कभी वमनभी होतीहै कंठ सूखने लगताहै अतिनिद्रा अथवा मूर्च्छा (बेहोशी) होजातीहै अत्यंतही उपयोग होनेसे और ठीक प्रयत्न नहीं होनेसे उन्मादरोग होजाताहै ।

इसका नशा तेज हो या उपरोक्त उपद्रवहों तो सोजानेदेवें कंठमें ज्यादे खुश्कीहो तो कंठपर घृत चुपड देना चाहिये कई दही खिलाना उचित बतातेहैं कई पेडे जलमें घोलकर पिलाना ठीक जानतेहैं--आलकी लकड़ी पानीमें घिसकर पिलाना या विनौलेकी गिरी दूधमें पिलाना लाभदायक होताहै यदि बहुतही अधिक नशा होजावे तो वमन करादेना उत्तम होताहै (नागनबेलकी जड घोटकर पिलानेसे वमन कराना अनेकप्रकारके नशों अनेक प्रकारके विषोंमें अत्यंत उपयोगी होताहै इसका वर्णन हम जंगम विषोंमें सर्पविषकी शांति प्रकरण में लिखेंगे ।

यूनानी किताबोंमें शर्वत हमाज इसके लिये अच्छा लिखाहै ।

गाँजाभी इसीका भेदहै पर इसे घोटकर नहींपीते चिलममें रखकर इसका धुवाँ पीते हैं इसका नशा बहुत जंलदी पीतेही आजाताहै निहायत खुश्की करताहै कफके शोषणमें यह भंगसे ज्यादे प्रभाव रखता है परंतु गुण इसके भंगके समान नहीं हैं इसके पीनेवाले मनुष्य प्रायः विशेष झक्की, क्रोधी और झंझटी होतेहैं यह अधिक पिया जानेसे या अनाभ्यासीके पीयेजानेसे शिरमें निहायत घूमनी आतीहै मूर्च्छा (बेहोशी) होतीहै वमन होजाती कंठ सूखने और रुकने लगताहै ।

इसकी विशेषताके विकारमें दूध पिलाना तथा घृत मिश्री मिलाकर चटाना अथवा तुरशी चुखाना चाहिये ।

चरस इसके पत्तोंपरका मद या मैल होताहै इसकी डलीसी होती हैं इसेभी चिलममें भरकर धुँवापीतेहें यह गांजेसेभी तेज और तीक्ष्ण होता है इसकेभी गुण और विकार प्रायः गांजेकेही समान होते हैं ।

चरस और गांजेको प्रायः अवधूत अथवा ऐसीही प्रकृतिके मनुष्य पीते हैं इनके पीनेवाले बहुधा हमने निकम्मे और झक्की देखेहैं बल्कि प्रायः अदना दर्जेके मनुष्योंहीमें इनके पीनेवाले लोग होते हैं ।

तमाखू ।

इसका वर्त्ताव इससमय भरतखंडमें इतना अधिक होगयाहैकि बडेसे बडे राजा महाराजा और गरीब कंगालसे कंगाल भिखमंगेतक इसे चिलममें रखकर धूमपान करतेहैं—कई मनुष्य इसे चूना मिलाकर चबातेहैं कई नस्य लेतेहैं—पर यह भी एक भांतिका विषहै इसमें संदेह नहीं—यह दो तीन माशेही खाया जावे तो प्रायः मृत्युकारक होजाताहै—इसके चबाने वालेभी कभी इसकी पीक निगलजावें तो इन्हें चक्कर चढा देताहै ।

यह कफ और वायुके विकारोंको शांत करताहै कफ वायुके रोग पीडित मनुष्योंमें इसका पहले प्रचार हुवाथा पर अबतो सैकडों क्या हजारों मनुष्य इसे शौकीनी अथवा हिरस या देखा देखीसे पाते हैं ।

इसका चबाना या धुवां पीना कफ वात प्रकृतियोंको प्रायः सानुकूलभी होताहै नजूल कोभी कुछ शांत करताहै पेटके अफरनेके रोगरहने वालेको भी लाभकारक होताहै पर तौ भी यह विषरूप होनेसे बे आवश्यकताके चबाना या धुवां पीना या नासलेना आदि

अच्छानहीं और अभ्यास करने वालोंको भी अंतमें हानिकारकही प्रायः होताहै ।

बेअभ्यासवाला इसका धुवां पीजावे या चबावे तौ जी मिचलाताहै शिर घूमताहै चक्कर आजाताहै वमन होताहै बेहोशी होजाती है और अधिक मात्रा खाईजावे तौ मृत्युभी होजाती है ।

इसक धुँवापीनेसे जी मिचलावे तौ सौंफ़ चबाना चाहिये यदि पीक निगलीगई हो तौ वमन करादेना उचितहै और अधिक खाया-गया हो तौ तत्कालही वमन कराना और ताजा दूध पिलाना और थोडा थोडा पिलाते रहना चाहिये ।

मदिरा (शराब)

जैसे पहले गौडी, माध्वी,पैष्टी आदि भेदोंसे मदिरा कई प्रकारकी होतीथी उसी भांति अबकी मदिराभी विसकी, बरांडी, बीयर आदि भेदोंसे अनेक प्रकारकी होती है यद्यपि इसकी गणना विषोंमें नहींहै तौभी इसकी अधिकता विषका सा काम करतीहै ।

मद्य युक्ति पूर्वक थोडीसी पीनेका अभ्यास अग्निवर्द्धक पाचक और क्षुधाकारक तथा उत्तेजक बल्कि रसायन होताहै पर इसकी अधिकतासे प्राणघातक मदात्ययरोग होजाताहै बहुतसे मनुष्यों बल्कि अमीरोंको हमने मदात्ययके रोगसे पीडित देखाहै जो इसीके जालमें मृत्युवश हुवे हैं मदात्ययके पूरे२ लक्षण और भेद इस छोटीसी पुस्तकमें नहीं लिखे जासकतेहैं सुश्रुतादि ग्रंथोंमें देखो पर साधारण इतना लिखते हैं कि आँखें लाल रहती हैं चित्त ठिकाने नहीं रहता उन्मादकेसी बातें करताहै ।

वैद्यक के अनुसार मद्यके विकारोंकी शांति युक्ति पूर्वक मद्यहीसे होतीहै थोडी मदिरा पानी मिलाकर सौंचर नमकके संग सेवन करानेसे मदात्ययका विकार नष्ट होताहै।

बहुत लोग कहतेहैं कि इसका नित्य अभ्यास हुवे पीछे यहभी नहीं छूटताहै पर ऐसा नहींहै–सं० १९५५ के कार्तिकमें तीर्थराज प्रयागकी यात्राके समय सैलानाराज्यके सुयोग्य वर्तमान महाराजा श्री यशवंतसिंहजी बहादुरने सब सहवर्ती राजपूत मंडलीसे धर्म पूर्वक इसके पीनेकी प्रतिज्ञा कराकर इसे छुटवादिया–मानो भावी इसके विकारोंसे सबकी रक्षाकरी यह सबसे छूटहीगया आजतक किसीको कुछभी हानि नहीं हुई।

हरताल।

हरताल कच्ची खाई जानेसे यहभी विषकासा विकार करती है डेढ दोमाशे खाई जानेहीसे जीमिचलाताहै पेटमें ऐंठन का दर्द होताहै चक्कर आजाताहै।

यद्यपि वैद्यकमें इस तवकी हरतालकी भस्म रुधिर विकार कुष्ठ आदि रोगोंका नाश करनेके लिये वर्त्ती है पर कच्ची अवश्य विषहै इसमें संदेहनहीं।

यह कच्ची खाई जावे तो तत्कालही वमन करादेना चाहिये और देरसे जानपडे तो हरडेकी छाल दूध घृत युक्त पिलानी उचितहै।

मालवे में एक बेलि हमने देखी है जिसके पत्ते गिलोयके पत्तोंके आकारके कुछ छोटे होतेहैं यह हरतालके विषकी परमशांतिकारक औषधहै इसका नाम वहांभी कुछ प्रसिद्ध नहीं है।

एक शख्सको हमने देखा वह इसी बूटीके पत्तोंके योगसे तीन तीन तोले हरताल आप खाजाता अथवा अन्य मनुष्यको खिलादेता उससे हरतालका कुछभी विकार प्रतीत नहीहोता तथा हरतालके विकार परभी हमने इसे वर्त्तकर देखाहै अवश्य लाभकरती है ।

मैनसिल ।

यहभी हरतालके समानही प्रायः अवगुण करतीहै वैद्यलोग मैनसिलको तंद्रा विशूची आदि रोगोंके अंजनमें बहुत वर्त्तते हैं—इसके विकार शांतिकेलियेभी उपरोक्तही विधि करना उचितहै ।

पारद (पारा)

यद्यपि यह विष नहीं है परंतु इसके अयोग्य वर्त्तावसे अनेक प्रकारके भयंकर उपद्रव उत्पन्न होजातेहैं इसलिये इसके विकार शांतिका लिखना अनुचित नहोगा ।

वैद्यकके रसग्रंथोंके अनुसार यह शोधन कियाहुवा तथा मूर्च्छित और भस्मकिया बडे बडे दुःसाध्य और भयंकर रोगोंकी सिद्ध औषध है—वैद्यकमें इसके शोधनादि रूपक १८ संस्कार लिखेहैं और हजारों प्रकारसे रसरूप इसे वर्त्ता है ।

वैद्यलोग प्रायः शुद्धपारेको गंधकके योगसे हरेकरोगनाशक काष्ठादिसे उपयुक्त करके वर्त्ताव करतेहैं इससे अवश्य बडे २ रोग नष्ट होजातेहैं और कोई उपद्रव नहीं होता इसके शोधन और वर्त्ताव इस पुस्तकमें कहांतक लिखेजावें जिन्हें देखनाहो वाग्भट्टीय रसरत्न समुच्चयादिग्रंथोंमें देखो ।

इसके अयोग्य सेवनसे अनेक भयंकर रोग और उपद्रव उत्प

होते हैं–जैसे संताप (निहायतगर्मी) रुधिर विकार फोडे फुन्सी कुष्ठ आदि तथा पेटका फूलना मूर्च्छा होना इत्यादि.

यद्यपि इसके अनेक विकारोंकी शांतिभी अनेकही हैं पर सबसे श्रेष्ठ पारेके सब प्रकारके विकारोंकी शांतिके लिये शुद्ध गंधकका सेवन करना उचित है।

गंधक।

शुद्धगंधक पारद विकार शांतिके सिवाय परमपाचन और रक्तशोधन है तथा मंदाग्नि, अजीर्ण और विशूची (हैजे) आदिके लिये परमश्रेष्ठहै इस शुद्ध गंधकके योगकी गंधकवटी (राजवटी) अजीर्ण, मंदाग्नि पेटके दर्द और विशूचि आदिको परमोत्तम होती हैं।

ये गंधकवटी सर्वसाधारण गृहस्थीमात्रके लिये बनाये रखना उपकारी है इससे हम इसके बनानेकी विधिभी यहां लिखे देते हैं।

एकभाग शुद्धगंधक लेना और एकहीभाग बडी हरडेंकी छाल-लेनी दोभाग सेंधानमक और चारभाग सोंठ मिलाकर नीबूके रसमें घोट छोटे झाडीबेरके समान गोली बना रखना ये अजीर्ण पेटके दर्द मंदाग्नि जीमिचलाना वमन और विशूची (हैजा) इतने रोगोंको नष्टकरती है–इनमें से एक दो तथा तीन गोलीतक यथारोग खानी चाहिये।

प्रसंगवश गंधक का शोधनभी लिखेदेते हैं क्योंकि यह साधारण-सी बातहै और मनुष्योंके बहुत कामकी है।

आँवलासारगंधक को चूर्ण कर लोहके कडछलेमें डालना और उसके समान घृत डालकर मंदी आंचपर रखदेना जब गंधक पिघ-

लकर घृतमें मिलजावे तब ताजे दूधमें डालदेना ऐसे तीनवार करनेसे गंधक शुद्धहोजातीहै ।

गंधककाभी तेजाब अधिकमात्रामें विषके समान तीक्ष्ण होताहै ।

रसकपूर ।

यह पारे और खारोंके योगसे बनताहै इसकी सफेद चमकदार वजनी लंबी लंबी डली पंसारीकी दूकानोंमें मिलतीहै ।

प्रायः लोग इसे आतशक (फिरंगरोग) अर्थात् गर्मीकी व्याधिमें वर्त्ततेहैं और यदि युक्तिपूर्वक इसका वर्त्ताव हो तौ उक्तव्याधिकी सिद्ध ओषधभीहै परंतु यह तीक्ष्ण विषहै इसके वर्तनेमें बडी सावधानी चाहिये कच्चे पक्के आदमीका कामनहीं है कि इसे वर्ते ।

इसके अधिक या अयोग्य वर्त्तावसे मनुष्य का मुँह सूज जाताहै मुँह और कंठमें जखम पडजाते हैं गला रुकजाताहै अत्यंत गर्मी करताहै पेटमें ऐंठन का दर्द होता है वमन और उसमें रुधिर आता किसीको दस्तभी लगते हैं बेहोशी होजातीहै और मनुष्य भी मरजाताहै

इसके विकार शांतिके लिये स्निग्ध तथा लुआबदार पदार्थ देने चाहिये ।

जंगाल व नीलाथोथा ।

यह तांबेका जंगहै तांबे और खटाईसे बनताहै यह भी एक प्रकारका विषहै इसका तीन चार माशे खाया जानाही प्रायः मृत्युकारक होजाताहै इसको साफ करके कई वमन करानेको देतेहैं पर बहुत सावधानी चाहिये-व्रणशुद्ध करनेको इसका मरहम काममें आता

इसका उचित उपयोग व्रणको शुद्ध करताहै मुँहके आजानेमें इसके पानीसे कुल्ले करातेहैं ।

यह अत्यंतही तीक्ष्ण वामकहै इसके अधिक या अयोग्य उपयोगसे पेटमें ऐंठनहोहोकर इतनी तेज वमन (कै) होती है कि चेहरा फीका पड़जावे, जीभ निकलआवे, बेहोश होकर मनुष्य मर भी जाताहै ।

इसके विकारशांतिकेलिये निवायापानी पिलाना तथा घृत दूध मिलाकर पिलाना चाहिये ।

विषमात्रके सामान्य लक्षण ।

यद्यपि प्रसिद्ध २ स्थावर विष लिखेगये तौभी विषोंकी संख्या नहीं होसकती जो मनुष्य शरीर बल्कि प्राणिमात्र की स्वाभाविक प्रकृतिसे अत्यंत विरुद्धहो उसेही विष जान लेना चाहिये ।

हमारे वैद्यक ग्रंथोंमें लिखाहै कि, जो व्यवायी (अर्थात् पहले शरीरमें व्याप्त होकर पचे) और विकाशी (जो संधिबंधोंको ढीलाकरे) और सूक्ष्म (जो शरीरके बारीक छिद्रोंमें प्रवेशहो) और छेदी (जो शरीरके कफादि धातुवोंको उखाडे) तथा मदावह (जो मदकारकहो) और जिसमें अग्निगुण विशेषहो (अर्थात् तीक्ष्ण गर्महो) और प्राणोंका नाशकरे और योगवाहीहो अर्थात् गर्मके संग अतिगर्म और शीतल के संग अत्यंत शीतलहो जिसमें ये सब लक्षणहों उसेही विष स[illegible]झ लेना चाहिये ।

---

१ व्यवायिच विकाशिस्यात्सूक्ष्मछेदि मदावहम् । आग्नेयं जीवितहरं योगवाहि स्मृतं विषम् ॥ १ ॥ इति शार्ङ्गधरः

सुश्रुतमें नीचे लिखे दश लक्षणवाला विष समझना चाहिये ऐसा लिखाहै ।

१ अतिरूक्षहो २उष्ण (अतिगर्महो) ३ तीक्ष्ण (तेजहो)४ सूक्ष्महो ५ आशु (शीघ्रप्रभाव करनेवालाहो) ६ व्यावायीहो ७ विकाशीहो ८ विशदहो ९ लघु (हलका शीघ्र फैलनेवालाहो) १० अपाकी (जो पचै नहीं) जिसमें ये १० लक्षण हों उसेही विष जानलेना चाहिये ।

विषके सातवेग ।

हमारे सुश्रुतादि ग्रंथोंमें प्राणनाशक स्थावरविषके उपयोग हो जानेसे मनुष्योंके सातवेग (दौर) इसभांति होने लिखेहैं १ पहले वेगमें जीभ काली और करडी होजाती है मूर्च्छा और श्वास होताहै २दूसरे वेगमें शरीर कंपताहै पसीना आताहै जलन और खाज तथा वेदना होतीहै । आमाशयमें प्राप्तहुवा विष हृदयमें पीडा करताहै ३ तीसरे वेगमें तालू सूखताहै, आमाशयमें शूल होताहै और दोनों आँखें बिगडीसी हरी हरी सूजी सूजीसी होजातीहैं (ये तीनवेग आमाशयगत विषमेंही होतेहैं) और जब विष पक्काशयमें पहुँचताहै तब वहां दर्द, खाँसी, हिचकी और आँतोंका गुडगुडाना होने लगताहै ४ चौथे वेगमें शिरमें अत्यंत भारापन होताहै ५ पांचवें वेगमें मुँहसे कफ (राल बहना वर्ण बिगडजाना संधियोंमें भेदन और सब दोषों(वात, पित्त, कफ) का कोप होताहै और पक्काशयमें दारुण वेदना होतीहै ६ छठे वेगमें बुद्धिका नाश होजाताहै वहुत द

(२) रूक्षमुष्णं तथा तीक्ष्णं सूक्ष्ममाशु व्यवायिच । विकाशि विशदं चैव लघ्वपाकि च तत्स्मृतम् ॥ २ ॥ इति सुश्रुतः ।

होने लगतेहैं ७ सातवें वेगमें कंधे, पीठ और कमर टूट जातीहै और श्वास रुकजाताहै ये पिछले चारवेग विषके पक्वाशयमें पहुँचजानेके पश्चात् होतेहैं—देखो सुश्रुत संहिता कल्पस्थानके दूसरेअध्यायके श्लोक जो टिप्पणीमें लिखेहैं ।

विषोंकी वेगानुरूप चिकित्सा ।

प्रथम वेगमें शीतल जल पिलाकर वमन करावे और शहद घृतके साथ अगद (तिरयाक अर्थात् विषनाशक औषध) पिलावे दूसरे वेगमें पहलेकी भांति वमन कराकर विरेचनभी देसकते हैं फिर तीसरावेग होनेपर अगद पिलाना नस्य देना और विषघ्न अंजन कराना चाहिये । चौथे वेगमें अगदको घृत मिलाकर पिलावे । पाँचवें वेगमें शहत और मुलेटी के काथमें मिलाकर अगद पिलावे ।

स्थावरस्योपयुक्तस्य वेगे तु प्रथमे नृणाम् । श्यावा जिह्वा भवेत्स्तब्धा मूर्च्छा श्वासश्च जायते ॥१॥ द्वितीये वेपथुः स्वेदो दाहः कंडू रुजस्तथा । विषमामाशयप्राप्तं कुरुते हृदि वेदनाम् ॥ २ ॥ तालुशोषं तृतीये तु शूलं चामाशये भृशम् । दुर्वर्णे हरिते शूने जायेते चास्य लोचने ॥३॥ पक्वाशयग तोदो हिक्काकासौन्त्रकूजनम् । चतुर्थे जायते वेगे शिरसश्चातिगौरवम् ॥४॥ कफप्रसेको वैवर्ण्यं पर्वभेदश्च पंचमे । सर्वदोषप्रकोपश्च पक्वाधाने च वेदना ॥५॥ षष्ठे प्रज्ञाप्रणाशश्च भृशं वाप्यतिसार्यते । स्कंधपृष्ठकटीभंगः संनिरो-धश्च सप्तमे ॥ ६ ॥ (इति सुश्रुते कल्पस्थाने) ।

२ प्रथमे विषवेगे तु वांतं शीतांबुसेवितम् । अगदं मधुसर्पिर्भ्यां पाय-येत समायुतम् ॥१॥ द्वितीये पूर्ववद्वांतं पाययेत्तु विरेचनम् । तृतीयेऽगद-पानं हि हितं नस्यं तथांजनम् ॥२॥ चतुर्थे स्नेहसंमिश्रं पाययेतागदं भिष-क् । पंचमे क्षौद्रमधुककाथयुक्तं प्रदापयेत् ॥ ३ ॥ षष्ठेतीसारवत्सिद्धिरव-पीडश्च सप्तमे । मूर्ध्नि काकपदं कृत्वा सासृग्वा पिशितं क्षिपेत् ॥ ४ ॥ (इति सुश्रुते) ।

१ २

छठे वेग होनेपर अतिसारकी भांति साधनकरें (अर्थात् अभी विषशो
रहाहो तौ शीघ्र निकालदे नहींतो बंध करदे), और सातवेग होनेप
(असाध्य जानकर यत्न नहींकरें) अथवा असाध्य कहकर अ
पीडन नस्यदेवें और शिरपर कागके पंजेकासा चिह्न शस्त्रसे करे
ताजा मांस रुधिरयुक्त इसपर रखदे (इससे श्वासका कुछ रुका
खुले तो फिर अन्य यत्न करना चाहिये नहींतो बस ।

(वक्तव्य उपरोक्त सातवेग वत्सनाभादि उग्र स्थावर विषोंके हुवे
करतेहैं—और अगद विषनाशक औषधको कहते हैं जैसे तिरयाक
हरेक प्रकारके विषके लिये प्रायः जुदे जुदे होतेहैं तथा अनेक विष
नाशकभी कई अगद होतेहैं जो अनेक औषधोंके योगसे बना
जाते हैं अगाडी जंगमविषोंके वर्णनमें हम कई लिखेंगे ।

(वक्तव्य दूसरा) जहां जिन विषोंमें शीतल जलका निषेधहै व
उष्ण जलसे वमन करावे ।

दूसरा प्रकरण २.

जंगम विषों का वर्णन ।

जंगम अर्थात् चलने फिरनेवाले जीव जंतुवोंका विष जंगमविष क
लाताहै—जंगमविषके अधिष्ठान अर्थात् उन जीवोंमें रहनेके स्थान
हैं जैसे दृष्टि श्वासे डाढे नखे मूत्रे विष्ठा वीर्य आर्तव राले मुखसं
विशोर्द्धित (अर्थात् अपानवायु) गुदो हड्डी पित्तो शूकें (डंक
या रोम) और शवें (मृतशरिर) अर्थात् किसी जीव की दृष्टिमें

होताहै किसीके श्वासमें किसीकी डाढमें किसीके नखमें किसीके डंकमें इत्यादि ।

दिव्यसर्पों की दृष्टि और श्वास (फुंकार) में विषहोता है पार्थिव सर्पोंकी डाढमें—सिंह, मार्जारादिके डाढ और नखोंमें विषहोताहै चि-पिट आदि कीटोंके विष्ठा और मूत्रमें विषहोता और जहरीले मूषकोंके वीर्य (शुक्र) में मकड़ीकी लार और चेपादिमें तथा विच्छू आदिके दुमछले डंकमें—चित्रशिर आदि जंतुवोंके मुखसंदंश विशर्द्धित इत्यादि में विषहोताहै—विषसे मरेहुवे जीवोंकी हड्डियोंमें विषहोताहै—कनखजूरे आदिके कांटोंमें—भ्रमरी (ततैये) मधुमक्खी आदिके डंकमें—विषैली जलोंकाके मुखसंदश (मुँहकी पकड) में विषहोताहै तथा सर्प विषयुक्तकीडे इनके मृतशरीरमें भी विषहोताहै (कई शव अर्थात् सभी मृतशरीरोंमें विषका प्रभाव होजाना मानते हैं)

सर्पोंकेभेद ।

हमारे आयुर्वेदमें पार्थिव सर्पोंके ८० भेद लिखेहैं जिन सबके रूपतासे ५ भेद होतेहैं प्रथम दर्वीकर (अर्थात् फनवाले) दूसरे मंडली (मंडल चकत्ते या चमकीदार बिंदूवाले) तीसरे राजिमंत (लकीरवाले धारीदार) चौथे निर्विष (विषरहित या अल्पविषवाले) पांचवें वैकरंज (दोगले जो दूसरी जातिकी सर्पिणीमें अन्यजातिके सर्पसे पैदाहों) (परंतु फिर भी ये कुछ उपरोक्त दर्वीकरादि तीन विषोंहीमें मिलेहुवेसे होतेहैं अर्थात् मानो कुछ फनवालेसे वा मंडली वा राजिमंत) ।

इनमेंसे फनवाले सर्प २६ प्रकारके होतेहैं और मंडली (चित्ती-

दार) २२ प्रकारके तथा धारीदार १० प्रकारके और निर्विष १
प्रकारके और वैकरंज (दोगले) ३ प्रकारके होतेहैं और फिर
दोगलोंके योगसे पैदाहुवे चित्रविचित्र मंडली तथा धारीदार स
प्रकारके और होतेहैं इसभांति सब मिलकर ८० भेदहुये ।

इनके संक्षिप्त लक्षण ।

इन ८० प्रकारके सर्पोंके नाम और सबके लक्षण हम इस छोटी सी
पुस्तकमें नहीं लिखसकते जिन्हें देखनाहो हमारी बनाई सुश्रुत सं
ताकी सान्वयभाषाटीकामें देखो तथा देश देशांतरके इस कामवा
कालवेलियों आदिसे पूंछ पूँछकर लक्षण जानो पर हाँ संक्षेप रूप
लक्षण लिखतेहैं ।

दर्वीकर (फनवाले) सर्पोंके फन डोहरेके आकारके छत्रके आ
रके हलके आकारके इत्यादि होतेहैं ये शीघ्र चलने वाले होतेहैं
फन उठाकर खडे होसकतेहैं जैसे कालेसर्प अत्यंत काले—काले
टवाले सफेद कपोतकेरंग—महाकपोत—लोहिताक्ष इत्यादि ये सब
समझो ।

मंडली (चित्तीदार) सर्प अनेकप्रकारके चकदों अथवा चित्ति
विंदुवोंसे चित्रित होतेहैं ये चलनेमें मंदचलतेहैं पेटके पाससे
होतेहैं तथा जलतीहुई अग्निके समान तीक्ष्ण होतेहैं जैसे आद
मंडल (चमकीली चित्तीवाले) सफेदचित्तीवाले लालचित्तीवा
कालीचित्तीवाले कईरंगकी चित्तीवाले तथा बांसके पत्तोंके आक
के चकदोंवाले—पुष्पाकार चित्तीवाले हिरनके खुरके आकार
चित्तीवाले इत्यादि ये सब ऐसेही समझने ।

राजीमंत (धारीदार) सर्प चिकने सफा आडी अथवा सीधी लकीरसे शोभित सुंदर वर्णके होतेहैं जैसे अंगुल अंगुलपर आडी लकीरवाले (गंडेदार) तथा सीधी रेखावाले और जिनपर विंदु-युक्त लकीरें हों इत्यादि ये सब इसीभांतिके होतेहैं ।

निर्विष सर्प वे होतेहैं जिनमें यातो विष होताही नहीं या बहुतही थोड़ा विष होताहै जैसे दुमुही, अजगर, तथा पनियां सांप ये सब इसी प्रकारके होतेहैं ।

वैकरंज (दोगले) इन्हींके मेलसे होतेहैं इनमें प्रायः इन्हींके मिश्रित लक्षण होतेहैं—तथा इन वैकरंजोंके मेलसेभी पैदा होतेहैं वे कुछतो मंडलियोंके समान होते हैं और कुछ राजिमंतोंके।

सर्प सर्पिणीकी पहँचान ।

जिसका शिर भारीहो, जीभ मोटीहो, आँखें बडी २ हों उसे सर्पजानो जिसका शिर, मुँह, जीभ और आँखें छोटीहों उसे सर्पिणी जानो जिनमें दोनोंके मिले चिह्नहों क्रोध रहितहों उन्हें नपुंसक सर्प जानो। नपुंसक सर्पोंका विष मंद होताहै ।

इनके विषकी प्रकृति ।

फनवाले सर्पों और उनके विषमें वायुप्रधान होतीहै और काटे हुवे मनुष्यमें वायुकाकोप करतेहैं-और मंडली और उनका विष पित्त प्रधान होताहै तथा राजिमंत और उनके विषमें कफकी प्रधानता होतीहै ये कफको कुपित करतेहैं—और दोगले तथा दोगलों से पैदा हुवे सर्पोंकी प्रकृति द्वंद्वज होती है ये दो दोषोंको कुपित करतेहैं ।

---

१ कोपयन्त्यनिलं जंतोः फणिनः सर्व एव तु। पित्तं मंडलिनश्चापि कफं चानेकराजयः । अपत्यमसवर्णानां द्विदोषकरलक्षणम् (इति सुश्रुते) ।

दंशके भेद ।

दंश अर्थात् काटना तीनप्रकारका होताहै १ सर्पित २ रदित अथ ३ निर्विष इनमेंसे १ सर्पित पूरे डसे जानेको कहतेहैं इसमें शरीरपर ए उसे दो या अधिक दाँतोंके चिह्न पूरे गडे हुवेसे दीखतेहैं थोडारक्त तीहै निकलताहै थोडासोथ होताहै दांत गहरे गडजानेसे विष पूर्ण तथा शरीर माल रुधिरमें प्रविष्ट होजाताहै इंद्रियोंमें शीघ्रही विकार हो आताहै यह दंकुच परमउग्र और मारकहोताहै ।

रदित उसे कहते हैं कि लाल या नीली या पीलीसी लकीरके चि त्वचामें मालूम हों अर्थात् झरीट (छीलन) सी मालूमदेवे हुवे छीलनमेंसे कुछ रुधिर साभी निकला जान पडे ऐसे दंशमें अल्प विष होताहै ।

३ निर्विष दंश वह कहलाताहै कि चाहे दाँत कुछेक गडे मालूमपडें रुधिरभी चाहे निकल आवे पर सर्पको उसमें विष छो का अवसर नहीं मिलाहो इसमें इंद्रियों में विकार नहीं होता अ यह दंश मारकभी नहीं होताहै ।

(वक्तव्य) जब सर्प काटे और तत्कालही झटका देकर पृथक् कर दिया जावे तभी रदित या निर्विष दंशहोताहै और का पर एक या दो सेकंडभी सर्पका मुँह वहांही रहे तो पूरा सर्पित हो ताहै उसे वहां विष डालनेका अवसर मिलजाताहै निर्विष दं कुछ भयकी बात नहीं और रदितमें भी कुछ विशेष भयकी बात है केवल सर्पितहीमें मृत्युका भय होताहै ।

---

१ सर्पितं रदितं चापि तृतीयमथ निर्विषम् । सर्पाङ्गाभिहतं केचि च्छंति खलु तद्विदः (इति धन्वंतरिः) ।

कइयोंका ऐसाभी मतहै कि डरपोक मनुष्योंके शरीरसे सर्पका अथवा उसके मुखका स्पर्शमात्र होनेहीसे वह भयभीत होजाताहै अथवा उसे काटनेका भ्रम होजाताहै तो उन्हें भयमात्रहीसे मूर्च्छासी होजातीहै प्रकृति बिगडजातीहै भयजनित वायुके कोप होनेसे सोथ साभी मालूम देने लगताहै इसे सर्पांगाभिहित कहतेहैं परंतु परिणाममें इससे कुछ हानि नहीं होती ।

सर्पोंकी अल्पविषता ।

नवलेसे डरेहुए या घबडाये हुवे बालक बूढे बहुत दिन पानीमें रहनेहुवे दुबले कॉंचडी छोडनेकी अवस्थामें तथा भयभीत और पहले तत्कालही काटचुकेहों विष थैलीमें कम होगयाहो ऐसी अवस्थामें यदि सर्प काटे तो विषका प्रभाव स्वल्प होताहै ।

विषके लक्षण ।

यह हम पहले कह चुकेहैं कि दर्वीकर सर्प वात प्रधान होताहै इससे इन दर्वीकर (फनवाले) (काले सर्पादि) के विषसे काटे हुवे मनुष्य की त्वचा नख नेत्र दांत तथा मूत्र पुरीष इन सबमें काला होजाताहै—रूक्षता—संधियोंमें पीडा (जोड़ २ खिंचना टूटना) कमर पीठ और ग्रीवा इनमें अतिनिर्बलता और दुर्बलता होती है शरीर कांपताहै कंठ घुरघुराताहै सूखे डकार अधिक आते हैं खाँसी श्वास हिचकी शूल हड़फूटन अतितृषा वायुका ऊर्द्ध्व गमन लार बहना मुखसे झाग आना स्रोतोंका रुकजाना और कई वात व्याधिहोना ।

मंडली सर्प पित्त प्रकृति होतेहैं इससे इनके विषसे मनुष्योंके त्वचा नेत्रादि सबमें पीलापन या रक्तत्व होजाताहै शरीरमें दाह

(जलन और गर्मी) विशेष होजाती है शीतल पदार्थोंकी वांछ होती है तृषा मद मूर्च्छा ज्वर ये हो आते हैं मुँह नाक अथवा लिं गुदा द्वारा रुधिर आने लगताहै मांस ढीला पड़जाताहै शोथ होता दंशकी जगह गल और सड जातीहै और रोगीको प्रायः सब पील पनलिये दीखताहै और विषको शीघ्र कोप होताहै तथा औरभी पित्त विकार होते हैं ।

राजिमंत कफप्रधान होतेही हैं इससे इनके विषसे मनुष्यों त्वचा नेत्रादिमें सफेदत्ता होती है सरदी लगकर तप चढ़ताहै रोमां होते हैं शरीर अकड जाताहै दंशके आस पास तथा शरीरमें सो होताहै गाढा कफ मुँहसे गिरता है वमन होती है नेत्रों और शरी खाज होती है कंठमें कफ घुरघुर करताहै श्वास रुकताहै अंधेरी आतीहै और अन्य कई कफके विकार होतेहैं ।

विषके सातवेग ।

सभी प्रकारके सर्पोंके विषके सातवेग होतेहैं यद्यपि उपरंद दोष भेदसे रूप और उपद्रवोंमें अंतर होताहै ।

सर्पके काटतेही विष रुधिरमें प्रविष्ट होकर ऊपरको चढ़ पहले वेगमें विषहत शरीरमें चींटीसी चलती मालूम देतीहै यथाक्रम रुधिरको दूषित करता जाताहै इससे उपरोक्त दोषभे रुधिरमें कालापन पीलापन और सफेदपन होताहै (फनदार सर्पके विषसे रुधिरमें कालापन और मंडलीके विषसे पील और राजीमंतके विषसे धौलापन आजाताहै) दूसरे विषका प्रभाव मांसमें होजाताहै इससे मांस दूषित होताहै शरीर नेत्रादिमें कृष्णता या पीतता या शुक्लता विशेष हो

मांसमें गाठेंसी पड़ी मालूम देती हैं तीसरे वेगमें विषका प्रभाव मेद में पहुँचताहै जिससे मेदमें विकृति होती है पसीना आने लगताहै दंश-स्थानमें क्लेदसा होताहै आँखें मिचीसी होती हैं चौथे वेगमें विषका प्रभाव कोष्ठ (कोठे उदर फेफडे आदि) में पहुँचताहै जिससे कोष्ठका कफ दूषित होजाताहै मुँहसे लार (कफ) बहना संधियोंमें टूटनेकीसी पीडा होना और घुमेरसी आना ये लक्षणहोते हैं (इसवेगमें मंडली-सर्पके विषसे ज्वर होजाताहै और राजिमंतके विषसे गर्दन अकड जा-तीहै ये लक्षणभी होते हैं) पाँचवें वेगमें विषका प्रभाव अस्थियोंमें पहुं-चताहै जिससे शरीरका बल नष्ट होजाताहै (खडा होने और चलनेकी-शक्ति नहींरहती) शरीरकअग्निभी नष्ट होजातीहै जिससे (दर्वी करकेवि-षमें) शरीरमें ठंढापन होजाताहै मंडलीसे अत्यंत गर्मशरीर होजाताहै राजीमंतसे शीतज्वर होआताहै और जिह्वा बंध होजाती है) छठे वेगमें विषका प्रभाव मज्जामें पहुँचताहै ग्रहणी निहायत बिगड़जाती हैं जिससे दस्त ज्यादे आने लगतेहैं शरीर बहुतभारी होजाताहै (हाथ पाँव शिर कुछ नहीं उठा सकता) हृदयमें पीडा और बेहोशी होतीहै सातवें वेगमें-विषका प्रभाव शुक्र (वीर्य) में पहुँचजाताहै और सकल शरीर-व्यापी व्यानवायुको कुपित करताहै जिससे कोई चेष्टाभी नहीं करसकता-और मुँह तथा अन्य सूक्ष्म स्रोतोंसे पानीसा बहने लगताहै मुँह और कंठमें कफकी गिलटियांसी बंध जाती हैं कमर और पीठकी हड्डी निः-सत्व होजाती हैं मुँहसे लार बहुत बहतीहै और सारेशरीरमें विशेष कर ऊर्ध्व भागमें अत्यंत पसीना आताहै और दम रुककर श्वास आना जाना बंद होजाताहै (और मनुष्य मुर्देके समान होजाताहै)

विषकी गति।

शाखाओं हाथ पैर आदिमें काटनेसे रक्तवहा शिराओं द्वारा विष क्रमपूर्वक ऊपरको चढताहै इससे प्रायः काटतेही मृत्युकारक नहीं होताहै परंतु कई सर्पादि एसे तीक्ष्ण विषवाले होतेहैं और उनका विष इतना लघु होताहै कि जैसे जलपर तैलका बिंदु पडतेही तत्काल सर्वत्र फैलजाताहै उसीप्रकार विषभी रक्तमें तत्कालही प्रसरण कर जाताहै-हमने कइयोंको एसाभी सुनाहै कि काटतेही तत्काल वहांही मूर्च्छित होकर गिरगये।

असाध्यता।

पीपलके पास देवस्थानमें श्मशानमें [illegible] चतुष्पथमें संध्याके समय भरणी मघा आश्लेषा इन नक्षत्रोंमें तथा शरीरके मर्म स्थानोंमें काटाहुआ असाध्य होताहै। फनवाले (काले) सर्पका विष वातप्रकृति [illegible] होताहै और उष्णप्रकृतिवाले [illegible] उष्णऋतुमें सर्पका विष दुगुना प्रभाव [illegible] होजाताहै तथा अजीर्ण रोगी पित्त बढेहुवे मनुष्य बूढे [illegible] बालक प्रमेहरोगी और गर्भवती स्त्री क्षीण भूखे [illegible] इनको विशेष प्रभाव करताहै तथा [illegible] कुछ अधिक प्रभाव करताहै।

असाध्य विषके लक्षण।

नश्तर आदिसे [illegible] जिसके शरीरमेंसे रुधिर नहीं निकले तथा चाबुक कोडे कमची आदि मारनेपर शरीरमें रेखा नहींपडे

निहायत ठंढापानी डालनेसे रोमांच नहीं जिह्वा सफेद या काली पडजावे बाल उखडने और गिरनेलगें नाक मुडजावे जबडा बंध होजावे मुँहसे कफकी गिलटीसी निकलें मुँह गुदा आदिसे रुधिर निकले सब दाँत पीले पडजावें इत्यादि लक्षण होनेसे असाध्य विष समझना चाहिये।

तथा कडुवे नीबके पत्ते खिलाकर देखना चाहिये, अधिक विषके प्रभावमें ये कडुवे नहीं लगते।

सर्पके काटेहुवेकी चिकित्साका आरंभ।

यदि मनुष्यके हाथ पांव आदि (शाखाओं) में काटा होतौ तत्कालही सबकाम और संदेह छोड़कर दंशस्थानसे अनुमान चार-अंगुल ऊपरको सूत या शण या चमडे आदिसे बंध बांध देना चाहिये और एकही बंध बांधनेपर निश्चित नहीं हो बैठना किंतु उस पहले बंधसे ऊपर थोड़ी दूर और दूसरा बंध लगाना चाहिये और यदि होसके तो तीसरा बंध और भी लगादेना उत्तम है॥

बंधोंके बांधनेसे प्रयोजन यह है कि बंधके नीचेका रुधिर ऊपरको गमन न करसके और रुधिरके संग मिलाहुआ ज़हर ऊपरको न चढसके इसलिये बहुतढीला बंध नहीं लगावे जिससे रुधिर की गति

---

१ सर्वैरेवादितः सर्पैः शाखादष्टस्य देहिनः। दंशस्योपरि बध्नीयादरिष्टाश्चतुरंगुले॥१॥ प्लोतचर्मांतवल्कानां मृदुनान्यतमेन वा।न गच्छति विषं देहमरिष्टाभिर्निवारितम्॥२॥ दहेद्दंशमथोत्कृत्य यत्र बंधो न जायते। चूषणच्छेददाहाः सर्वत्रैव तु पूजिताः॥३॥ प्रतिपूर्य मुखं वस्त्रैर्हितमाचूषणं भवेत्। स दृष्टव्योथवा सर्पो लोष्टो वापि हि तत्क्षणात्। (इति धन्वंतरिः)।

नरुके और इतना करडा बंधभी ठीक नहीं जिससे मांसमें घुसजावे और अधिक कष्टहो तथा त्वचा छिल या कटजावे।

यद्यपि बहुतसे लोग मंत्र पढकर बंध लगाना या मंत्रोंके जोरसे विषका उतारनाभी मानते हैं पर ऐसे सिद्ध मंत्रोंवाले महात्मा मिलने दुर्लभहैं इससे मंत्र यंत्रका ख्याल छोडकर यत्नकरनाही मुख्य उपाय समझना चाहिये।

बंध बांधे पीछे उस स्थानको या वहांकी रंगको चीरकर रुधिर खूब निचोडकर निकालदेना उचित है।

बंध बांधना और रुधिर निचोडना बहुतही उपयोगी होतेहैं पर बंध जहां लग नहीं सके वहांका थोडा दंशकी जगहका मांस दंश समेत तत्कालही काटकर अग्निसे दाग देना चाहिये—अथवा दंशस्थानको जरा चीरकर रुधिर चूसचूसकर फेंकदेना चाहिये जिससे सब विष निकलजावे पर चूसनेमें इतना ध्यान रहे कि मुँहमें कोई जखम न या दांतोंमेंसे कभी कभी रुधिर नहीं निकलता हो दंतमूल मसूडे पोले न हों तथा विषयुक्त रुधिर चूसनेसे कंठमें न उतरजावे इससे बारीक झिल्लीकी वस्ति मुँहमें लगाकर चूसे तो बहुत अच्छा अथवा सींगीके ऊपर मकडीके जालेसे ढांककर सींगी लगाकर चूसना अच्छा अथवा आचूषण यंत्र लगाकर चूसना चाहिये पर यह काम तत्काल करनेका है।

और यदि दिलावर और होशियार मनुष्य होतो काटतेही होशियारीसे उसी सर्पको पकडकर दाँतोंसे काटलेना बहुत लिखाहै अथवा उसी वक्त लोहेको दाँतोंसे दबाना चाहिये भी लिखा है।

(वक्तव्य) हमारे मर्मज्ञ ऋषियोंने जो यह लिखाहै कि यदि सर्प का काटा मनुष्य उसी समय उस सर्पको काटलेवे तौ अच्छा है इसका अभिप्राय यह प्रतीत होताहै कि सर्पका रुधिर सर्प विषनाशक होताहै। आज कल बहुतसे विज्ञ डाक्टरभी इसे सिद्ध कररहेहैं देखो राजस्थान समाचार ता० १५ फरवरी सन् ९९ ई० का छपा हुवा उसके चौथे पृष्ठके पहले कालममें अमेरिकाके सर्पोंके विषयमें एक लेख छपाहै जिसमें लिखाहै कि वहांके डाक्टरोंने सर्पके काटेहुवे पर प्याज लगाना अथवा विषवाले सर्पके रुधिरका पछना लगाना विषको नष्ट करताहै अथवा जिस जीवके रुधिरमें सर्पका अधिक विष प्रविष्ट हुवा हो उसका रक्तभी सर्पके विषका नाशकहै वस्तुतः कुछीहो सर्पका रुधिर सर्पके विषकी औषध अवश्यहै इसमें संदेह नहीं परंतु यह काम हरेकके करनेका नहीं है और न हर किसीसे बन सकताहै हां इस समयके जानकारोंको चाहिये कि इस बात की सत्यता और प्रमाणके लिये सपेरों से पूछें तथा यत्नपूर्वक उनसे इसबातकी सत्यतादिकी परीक्षा कराकर देखें पर हां लोहेको दाँतोंसे दबानाभी कुछ लाभदायक होताहै इसे हरेक मनुष्य कर सकताहै और कुछ हानि नहीं । दंशस्थानको अग्निसे दागदेनाभी अच्छाहोताहै पर यह भी तत्कालही करनेसे लाभदेताहै पर विष दूर पहुँचनेपर इससे कुछलाभनहीं और इसमें यहभी ध्यान रहै कि पित्तप्रधान आग्नेयमंडली सर्पों के काटेपर अग्निदाहसे उलटा विष तेज होजाताहै परहाँ अंगुलीआदि छोटे अवयवों में कोई उग्रसर्प काटे तो उस अवयव को उसीवक्त पाँच दश सेकंडके अंदरही झट काटकर फेंकदेनेसे अवश्यलाभहोताहै पर ये सब उसीक्षण झटपट करनेके कामहैं और हरेक मनुष्य से हो भी नहीं सकते ।

अस्तु सबसे श्रेष्ठ उपाय तत्काल करने का यही है कि बंधल देने और फिर वहांका रुधिर निकालदेना—और निकालते रहना खूब रुधिर निकलजावे अर्थात् काला पीला आदि फिर जितना विषैला रुधिर निकल चुके और शुद्ध रुधिर आनेलगे तथा विषकी अधिकता कम होजावे उससे पहले कभी बंधखोलना न चाहिये सर्पका विष अत्यंत कडुवा होताहै और रुधिरको प्रायः काला करदेताहै और मंडलीका पीला करदेताहै इत्यादि लक्षणोंसे सविष और निर्विष रक्तकी परीक्षा भलीभांति होसकती है ।

और इस अवस्थामें कचनाल, सिरस, आक और कटभी इन्हें रहना चाहिये तथा विषनाशक अन्य अगद औषधभी उचितहैं शहत घृत इत्यादिके संग पिलाने चाहिये तथा विषनाशक वमन द्रव्यके योग से वमन भी करतेरहें तो बहुत अच्छाहै ।

और तैल कुलथीके पदार्थ मदिरा और कांजी आदि इस अवस्थामें नहींखावें ।

वेगोंके अनुरूप चिकित्सा ।

किसी प्रकारका सर्पकाटे सबके पहले वेगमें रुधिर निकालना श्रेष्ठहै दूसरे वेगमें शहत और घृतके संग अगद पिलाना चाहिये और फनवालोंके विषमें तीसरे वेगमें विषनाशक नस्य और अंजन

---

१ शोणितस्रावस्य प्राधान्यं तत्राह श्रीधन्वन्तरिः सुश्रुते—"सम शिरादंशाद्विध्येत्तु कुशलो भिषक् शाखाग्रे वा ललाटे वा वेध्या विसृते विषे ॥ १ ॥ रक्ते निर्ह्रियमाणे तु कृत्स्नं निर्ह्रियते विषम् तस्मा स्रावयेद्रक्तं सा ह्यस्य परमा क्रिया ॥ २ ॥"

का उपयोग करना चौथेवेगमें पूर्वोक्त वमनद्रव्योंसे वमन कराकर अगाडी लिखी यवागू देसकते हैं और पांचवें छठे वेगमें शीतल उपचार करके तीक्ष्ण विरेचन देवें और वही यवागू उचित समझें तो यहांभी देवें सातवेंवेगमें तीक्ष्ण अवपीडन नस्यदेकर शिरका शोधनकरें और तीक्ष्ण अंजन आँखोंमें लगावें तथा शस्त्रसे मूर्द्धामें काकके पंजेकासा चिह्न करके ताजा रुधिरयुक्तचर्म अथवा ताजा मांस रखदें।

मंडलीके वेगोंकी चिकित्सामें इतना अंतरहै कि इसमें दूसरे वेगहीमें वमन कराना चाहिये क्योंकि यह पित्तप्रधानहै और इसी वेगमें यहां उचित हो तो यवागू देसकते हैं और तीसरेमें तीक्ष्णशोधन करना चौथे और पांचवेंमें दर्वीकरके विषके समानकर छठेवेगमें काकोल्यादिगणसे सिद्ध किया दुग्ध देना और सातवें में विषघ्न अवपीडननस्य देना।

राजिमंतके वेगोंमें दूसरेवेगमें वमन कराना चाहिये क्योंकि यह कफ प्रधान विष होताहै और तृतीयादि सब वेगोंमें फनदारके अनुसारही करना चाहिये।

शिरावेधनमें इतना ध्यानरहै कि गर्भिणी स्त्री और बालक तथा वृद्धोंकी शिरावेधन नहींकरें और करेंभी तो थोडा २ रक्त निकाले।

दोषानुरूप चिकित्सा।

जिसके शरीरका वर्ण विषसे बिगडजावे अंगमेंपीडाहो और शोथहो उसके रक्तको उचितरीतिसे शीघ्र निकालदेना चाहिये और जो विषार्त क्षुधितहो और वातप्राय उपद्रवहों तो उसे शहत घृतादि

पिलावें और जिवे तृषा, दाह, गर्मी और मूर्च्छा तथा पित्तके उपद्रव और पैत्तिकविषहो उसे शीतल द्रव्योंका स्पर्श लेपन स्नानावगाहना करावें तथा शीतऋतु कफके उपद्रव शीत कंपादिहो और राजिमंतो कफप्रधान विषहो तौ उसे तीक्ष्ण वमन कराना चाहिये।

उपद्रवोंके अनुसार सर्प विष चिकित्सा।

जिसके कोठेमें दाहहो, पीड़ाहो, अफराहो, मल, मूत्र और अ वायु रुकेहों, पैत्तिक उपद्रवहों उन्हें विरेचन देना उचितहै।

जिनके नेत्रोंके कोये सूजेहों निद्रा अधिक आतीहो नेत्रविवर्ण गहेसे होजावें, विपरीत रूपदीखे, ऐसे विषार्तके नेत्रोंमें विषघ्न अं लगाना चाहिये॥ जिसके शिरमें दर्द और भारीपनहो, आलस्य ठोढी और जवडे अकडजावें, गला रुकजावे और ग्रीवा ऐंठजावे ऐसे विषपीडितको तीक्ष्णनस्य देकर शिरका विरेचन करावे॥ विषसे बेहोश होगयाहो, आंखें फटीसीहों, गर्दन टूटजावे, ऐसी अवस प्रधमन नस्यदे (अर्थात् फुकनीसे तेज नस्य नाकमें फूँके) शीघ्रही ललाटप्रदेशकी शिराविधन करनी चाहिये और यदि उस रुधिर नहीं निकले तौ झट शस्त्रसे ललाटमें काकके पंजेका करके ताजा चर्म या रुधिर युक्त मांस रखदें यह विषको खेंच तथा यह नहोसके तौ भोजपत्रादि वल्कल वाले वृक्षोंका ताज (अंतरछाल) रखनी चाहिये और विषनाशक द्रव्योंसे लिपेहुवे डमरू आदि उसके कानोंके पास वजावें।

और ऐसा करनेसे जब उसे कुछ चैतन्यता और ज्ञानहो तब विरेचन द्वारा खूब ऊपर नीचेसे शोधनकरें और विषके अंश

निःशेष निकालदें क्योंकि यदि कुछभी विषका अंश शरीरमें शेष रहताहै तौ फिर वेग होने लगजातेहैं तथा विवर्णता, शिथिलता, ज्वर खांसी, शिरमें पीडा, रक्तविकार, शोथ, क्षय, प्रतिश्याय, तिमिर (अंधेरी आना) अरुचि और पीनस इत्यादि उपद्रव करताहै फिर जो उपद्रव हों या शेषरहें उनकी उनके प्रतिकार और विषघ्न द्रव्योंके योगसे शांति करनी चाहिये।

विषघ्नयवागू।

जंगली कटुतोरई, अजमोद, पाठा, सूर्यवल्ली, गिलोय, हरडें, शिरस कटभी (किणही) शेलू (ल्हेसुवा) और श्वेतकंद, दोनों हलदी, दोनोंप्रकारकी पुनर्नवा, हरेणु, त्रिकटु, दोनों सारिवा और खरेटी इनके काथमें (या जो इनमेंसे मिलजावे) उनके काथमें पकाई हुई यवागू दोनों प्रकारके स्थावर जंगम विषको नष्ट करती है।

(वक्तव्य) इस यवागूमें शोधन और विषघ्न तथा शमन पदार्थ हैं इससे जितने मिलें उतने सब प्रकार कुछ कुछ द्रव्य होने चाहिये ऐसा न समझना या आलस्य वश होना कि एक गिलोय या शेलु-हीसे काम निकालना किंतु जहांतक बुद्धिबल चले वहांतक द्रव्यलेकर उनके काथसे यवागू बनानी चाहिये।

विषकी उत्तर क्रिया।

जब विषके वेगोंकी शांति हो जावे और पूरा आराम हो जावे तब बंधको खोलकर विषयुक्त दंश स्थान पर पछने लगाकर विषनाशक द्रव्योंका लेप करना चाहिये—और जो जो दोषोंके कुछ उपद्रव बाकी

रहजावें उनका यथोचित् उपचारकरें क्योंकि, रहाहुवा विषका अंश फिर उपद्रव और वेग कर उठताहै तथा विषके उपद्रवभी ठहर जावें तो सहजमें नहीं जातेहैं ।

(वक्तव्य) यहां इस पुस्तकमें यातो आयुर्वेदकी प्रामाणिक सुश्रुत संहिता आदिके अनुसार लिखाहै या वर्तमान समयके चिकित्सकों ... या अपने अनुभव और परीक्षा सिद्ध बातें लिखी हैं कुछ अटलप... नहीं लिखागयाहै ।

अगद संपान (सुश्रुत कल्पस्थाने) ।

अगद उन ओषधोंको कहते हैं जो कई ओषधोंके यथोचि... संयोगसे बनाईजावे और उनमें विषके नष्ट करनेकी शक्तिहो प... जब हमारे आयुर्वेदका पूर्ण प्रचारथा और आर्यावर्त्तके रा... महाराजा इस परमोपयोगी शास्त्र और इसके ज्ञाता वैद्योंकी प्रति... और परिपूर्ण सहायता करतेथे तब यहांके विद्वान् वैद्योंको ऐसी स... उत्तमोत्तम वस्तु संपादन करके उपस्थित रखनेका उत्साह रह... था जो इस देशकी प्रकृतिके अनुसार पूर्ण लाभकारी होतेथे यून... वाले ऐसे औषधोंको " तिरयाक " कहते हैं ।

महाऽगद ।

निसोथ, दंती मुलेठी, दोनोंहलदी, मंजीठ, किरमाला ... पाँचोनमक, त्रिकटु इन सबको पीसकर शहत मिलाकर गौके सी... भरदेवें और १ पक्ष पीछेसे इसे काममें लावें यह महाऽगद ना... औषध पिलाने (शहत, घृत, दूध इत्यादिमें मिलाकर पिलाने ... अंजन करनेसे, विषदंशपर लगानेसे, नस्यदेनेसे, विषके प्रभावको... करने वालाहै ।

अजितागद ।

वायविडंग, पाठा, त्रिफला, अजमोद, हींग, तगर, त्रिकटु और सब नमक तथा चित्रक इन सबको महीनपीसकर शहतमिला-कर गौके सींगमे १५ दिनतक भररक्वे और ऊपरसे गौके सींगहीसे बंद करदेवे फिर इस अजितागदका उपयोगकरे यह अगद स्थावर जंगम सब प्रकारके विषोंको नष्ट करताहै ।

ऋषभागद ।

जटामासी, हरेणु, त्रिफला, सोहजना, मजीठ, मुलैठी, पद्माख विडंग, तालीसपत्र, नाकुली, इलायची, तज, तेजपत्र, चंदन, भारंगी, पटोल, किणही, पाठा, इंद्रायणकाफल, गूगल, निसोथ अशोक, सुपारी, तुलसीकी मंजरी और भिलावेके फूल इन सब औषधोंको समानभाग लेकर पीसले और शहत मिललेवे और शूकर, गोह, मोर, सिंह, बिलाव, साबर और नेवला इनके पित्तेभी मिलालेवे और गौके सींगमें भर देवे १५ दिन पीछे तक रहनेदे यह ऋषभागद नामक औषध यथोक्त संपादन कीहुई जिसके घरमेंहो वहा बड़े२भयं-कर सर्पभी नहीं रहसकते और रहेंभी तौ निर्विष होजाते हैं फिर अन्य बिच्छू, मूषकादिकीतौ क्यासामर्थ्य है इसको यदि भेरी, नगारे, डमरू आदिपर लेप करके उन्हें विषयुक्त मनुष्यके पास बजानेसे विष नष्ट होजाताहै तथा इसके शब्दसे विषका प्रभाव नष्ट होजाताहै और यही ध्वजाओंपर लेप करके स्थापन करें तो उन्हें देखकर या उनकी वायुके स्पर्शसे विषका प्रभाव नष्ट होजाताहै ।

फनवाले और राजिमंतोंके विषका अगद ।

ल्हेसुवे, कायफल, बिजौरानींबू, श्वेतस्पदा, किरमही और चौंलाई तथा मिश्री इन औषधोंका मधुयुक्त गोशृंगमें स्थापन कियाहुवा अगद दर्वीकर और राजिमंत सर्पोंके विष नष्ट करनेवालाहै ।

मंडलीसर्पोंके विषका अगद ।

मुनक्का, नाकुली, शल्लकी, इन तीनोंको पीसकर सबके समान मजीठ मिलावे और दोभाग तुलसीके पत्ते और कैथ, बेल, अनारके पत्रभी दोदो भाग मिलावे तथा सफेद संभालू, अंकोटकी जड और गेरू ये आधे २ भाग मिलावे इसमें शहत मिलाकर पूर्वोक्तरीतिसे शृंगमें भरलेवे यह विशेषकरके मंडलीसर्पोंके विषका नष्ट करनेवालाअगदहै ।

(वक्तव्य) विषचिकित्सा में पहले हम कई जगह लिखचुके हैं कि अमुकवेगके समय इसप्रकारसे अगदका प्रयोगकरे सो वे अगद येहीहैं इनमेंसे जौनसा उचितहो उसीका उसविधिसे उपयोगकरें ।

हमारे शास्त्रमें बहुतसे सिद्धअगद प्रयोग लिखेहैं और हमारे पूर्वज वैद्योंने इन सबको भलीभांति परीक्षा करके लिखाहै ग्रंथबढनेके भयसे हमने बहुत थोडेसे अगद यहां लिखेहैं जिन्हें विशेष देखना हो वे श्रीधन्वंतरिप्रणीतसुश्रुतसंहिताका कल्पस्थान देखें जो समग्रसंहिता सान्वय भाषाटीकासहित इसी "श्रीवेङ्कटेश्वर" प्रेसमें छपीहै ।

मृत और नष्टसंज्ञाकी परीक्षा ।

कभी कभी ऐसा होताहै कि मनुष्य अतिमूर्च्छित होजाताहै नाडी नहीं चलती और विषकी अति उग्रतासे श्वासभी बंद होजाताहै परंतु उसमें

महाप्राणी अर्थात् जीव शरीरसे निकलता नहीं है ऐसी अवस्थामें मूर्ख-लोग उसे मुर्दा जानकर त्यागदेतेहैं तथा मृतक्रिया करनेको उपस्थित होते हैं पर नहीं कईबार ऐसी अवस्था होजानेपरभी विषहतको हमने जीतेदेखाहै इसकी परीक्षा यह है कि यदि रोगीके नेत्रोंमें दूसरेका प्रतिबिंब दीखे या दीपक आदिकी लौ दीखे तौ सजीव जानना नहीं दीखे तौ मृत तथा मूर्द्धामें काकपद करनेपर रुधिर मालूमदेवे तौ सजीव अन्यथामृत कई ज्ञाता मनुष्य विषसे मरे तथा पानीमें डूबेहुवोंको मृत-मालूम पडनेपरभी तीन तीन दिन तक प्रतीक्षा करते हैं और सिद्ध-यत्न प्राप्तहोनेपर जीवनकी आशा रखते हैं ।

सर्पविषकी असाध्य अवस्थामें ।

विषोपयोग (वृद्धवाग्भटे)

जब सर्पके विषपीडित मनुष्यकी असाध्यअवस्था होती मालूम पड़े और मंत्र, तंत्र तथा विषघ्न औषध किसीसेभी सिद्धनहो तब पांचवां वेग हो लेनेके पीछे सातवें वेगसे पहले रोगीको प्रतिविषका उपयोग करावे ।

प्रतिविष उसे कहते हैं जो एकविष दूसरे विषके प्रतिकूल गुण-कारीहो—अर्थात् जंगमविषका प्रतिविष स्थावरविष होताहै और स्थाव-रका जंगम ।

इसका हेतु यह है कि स्थावरविष ऊपरको गमन करनेवाले होतेहैं और कफप्राय होतेहैं (अर्थात् आमाशयसे रुधिरकी तरफ गमन

१ विषे प्रविविषं याज्यं मंत्रतंत्रैरसिध्यति। अतीते पंचमे वेगे सप्तमस्या-नातिक्रमे॥ १॥ श्लेष्मतुल्यगुणं प्रायः स्थिरमूर्ध्वगमं विषम्। प्रायः पित्तगुणै-र्युक्तं मध्यगामि च जंगमम् ॥ २ ॥ (इति वृद्धवाग्भटः)।

करतेहैं) और जंगमविष प्रायः पित्तप्राय होतेहैं और रुधिरमें प्राप्त हुवे भीतर आमाशय और फेफडोंकी तरफ गमन करनेवाले होतेहैं इसप्रकार एकसे दूसरी भांतिके विषोंमें विपरीतगुण होनेसे परस्पर एक दूसरेको नष्ट करनेवाले होतेहैं—इसकारण सर्पके डसेहुवेको असाध्य अवस्थामें स्थावर मूलविष (शृंगी विषआदि) का उपयोग बड़ी सावधानीके साथ सुज्ञवैद्यको लेपन और खिलानेकी औषधादिमें करना चाहिये—क्योंकि विषकी अतिउग्र और असाध्य अवस्थामें दूसरे प्रकारके विषके सिवाय और कोईभी निर्विष करनेका उपाय नहीं है ।

इसपर चरकका प्रमाण ।

जंगम (सर्प बिच्छू मूषक कुक्कुरादि जीवोंके काटेका) विष अधो-भागकी तरफ (भीतरको) गमन करताहै और स्थावर (कंद मूल आदिका) विष ऊर्ध्वभागकी तरफ (बाहरको त्वचाकी ओर) गमन करताहै. इसलिये डाढसे काटनेवालोंके जंगमविषको स्थावरविष नष्ट करसकताहै और स्थावरविषको जंगम नष्ट करदेताहै ।

और यह प्रसिद्धभी है कि " विषस्यविषमौषधम् " अर्थात् विषकी औषध दूसरा विषही होसकताहै, अन्य साधारण औषधकी सामर्थ्य उसके प्रभाव नष्ट करनेमे उतनी नहीं होसकती पर यह काम बहुत विचारवान्के करनेकाहै साधारणका नहीं ।

प्रतिविषकी मात्रा ।

यदि सर्पादिका विष हीन अवस्थामें हो या रोगी अल्पबलहो

---

(१) जंगमं स्यादधोभागमूर्ध्वभागं तु मूलजम् । तस्माद्दंष्ट्रिजं मौलं हंति मौलंच दंष्ट्रिजम् ॥ १ ॥ (इति चरकः) ।

प्रतिविषकी मात्रा हीन देनी चाहिये. अर्थात् चार यवके बराबर और मध्यम होतो छः यवके बराबर तथा उग्रहो तो आठ यवके बराबर शोधन किया हुआ स्थावराविष उपयोग कियाजावे और अन्य विषयुक्त उग्र कीटके विषमें दो यवके बरा बर और मंद बिच्छूके विषमें एक तिलके बराबर उपयोग करें ।

प्रति विषपर अनुपान ।

तीक्ष्णविषके उपयोगके पीछे निरंतर घृत पान करना चाहिये और भारंगी दहीके मंडसे निकालाहुवा मक्खन तथा सारिवा और चौलाई इत्यादि सेवन करते रहना चाहिये ।

सामान्य यत्न ।

अबतक जो चिकित्साकी विधि हमने वर्णन करी यह साधारण मनुष्यों के करने योग्य नहीं है और न साधारण मनुष्योंसे इस भाँति चिकित्सा-क्रम बन सकताहै यह चिकित्साक्रमतो सुज्ञवैद्यों अथवा अभ्यास वाले सावधान मनुष्यका है और सर्पदंशके विषका बहुधा भोले भाले कृषाणों अथवा अज्ञ लोगोंको काम पडजाताहै बल्कि बहुधा जंगलों और बाहर छोटे ग्रामोंमें इसका काम पडजाताहै जहां न सुज्ञ वैद्य न डाक्टरही शीघ्र मिल सकताहै और न कोई इस कामका होशि-यार तजरुवेकार मनुष्यही मिलताहै ऐसी अवस्थामें जहांतक हो सामान्य और सिद्ध यत्नही कुछ काम कार्य देसकतेहैं ।

सबसे सामान्य और सहल यत्न आरंभमें तो यही है कि, हाथपाँव में काटा होतो उसके चार चार अंगुलपर अच्छे मजबूत तीन बंध लगादेने चाहिये–और फिर दंशस्थानके आस पास चीरा लगाकर

रुधिर निकाल देना-और फिर बहुतशीघ्र किसी सुज्ञ चिकित्सक
को तलाशकरके चिकित्सा ठीक आरंभ करानी और चिकित्सा
अथवा अन्य इस कामका पूरा परिज्ञाता होना चाहिये, यदि ऐसा न
सके तो पूर्व संपादित बंध लगाने और रक्त निचोडनेसे कुछ
मालूमपडे तौ खैर नहीं तौ यदि विषका प्रभाव बढतादीखे और बे
या कंठमें खुश्की मालूमपडे तौ एकप्रकारकी वेल होती है जिसे माल
कई मनुष्य नागनवेल कहतेहैं इसकी जड बिल्कुल सर्पके आकारकी हो
और बहुत कडुवी होती है इसे अनुमान एकतोला भर लेकर पानीमें
कर पिलादेवें इसके पिलानेसे वमन होताहै और उस वमन के संग वि
प्रभाव नष्ट होजाताहै यदि फिरभी कुछ प्रभाव शेषरहे तो आधातोला
उसीतरह घोटकर पिलादेना चाहिये उससे फिर वमनहोगी और शेष
निकल जावेगा-फनदार सर्पके विषके लिये इसकी मात्रा १
प्रथम लेनी चाहिये और अल्पविषवाला सर्पहोतो मात्रा कुछ
लेनी चाहिये पानीका अनुमान १ तोलाके लिये दशतोलेके ल
चाहिये-एकबारके पिलानेसे पूराविष शांत नहो तौ दो तीनवार
मात्रा घटा घटाके पिलाना होगा यह जडी ऐसी सिद्धहै कि
काटा निःसंदेह इससे आराम होताहै-मालवेके पहाडोंमें इस
स्वयं हमने जाकर देखाहै इसकी जड़का कईबार सर्पविषपर
करके परीक्षा कियाहै और बहुतही उपकारक पायाहै-सर्प
सिवाय इसको श्वानके विष और अहिफेनके विषपरभी लाभ
पायाहै हमारा विचारहुवाथा कि इसको विनाही मूल्य सर्वसाध
पास एकदो मात्रा पहुँचाई जावे पर यह बहुत थोडी मिलतीहै

लिये ऐसा नहीं करसके–पर हां इतना अवश्य कहे बिना नहीं रह सकते हैं कि जितनी औषध सर्पविषपर हमने देखी और अजमाई उन सबसे श्रेष्ठ इसेही पायाहै हम प्रतिज्ञा और अपनी कई बारकी परीक्षासे कहते हैं कि कर्मगतिके सिवाय इस जडी के पहुँच जानेपर सर्पका काटा कदापि नहीं मरता इसमें संदेह नहीं–यह जडी हमारे आ० सु० कार्यालयमें सदा दशबीस मात्रा तयार रहती है और काम आपडनेपर हरेकको दोतीन मात्रा उसीवक्त देदीजाती है पर अल्पप्राप्त होनेसे हम विशेष वितरण इसका नहीं करसकेहैं ।

यदि यह नहीं हो या नमिलसके तो श्वेतपुनर्नवा जिसे विषखपरा कहतेहैं उसकी जड छः मासे या तोलेभर पानीमें पीसकर पिलावे और थोड़ी जड़ मुँहमें रखकर चबातिरहें और दंशके आसपास लेपभी करदें इससेभी विषका प्रभाव नष्ट होताहै ।

हमारे सामनेकी बातहै कि यहां फरुखनगरमें एक काजी (मुर्दा काजी) तीतर पाला करताथा एक बार जंगलमें उसके तीतरको काले साँपने काटा उक्त काजीने उसे मुँहसे चूसना आरंभकिया काजीके मसूढे पोलेथे उनमेंसे खून निकलने लगा और चूसनेमें सर्पका विष वहांसे रुधिरमें मिलगया और वह बेहोश होगया यहांपर सियाराम नामक एक पटवा सर्पोंके विषका मंत्रज्ञ और औषधभी जानताथा उसने यही विषखपरा उसे उपयोग कराया और वह अच्छा होगया–पर कई जगह यह निष्फलभी होते हमने देखाहै नागनवेलकी जडके समान इसमें गुण नहीं हैं ।

और आकके फूलभी सर्प विषके नाशक हैं अल्पविषवाले सर्पके विषको अवश्य फायदा करते हैं ।

फटकडी अनुमान १ तोला दूधके संग पीना या इससे ज्यादे पीना यहभी लाभदायकहै इसका कारण यहहै कि इससे खून फटजाता है और विष शीघ्र सर्वत्र नहीं फैलसकता और पहुँच सकताहै।

दो तीन जमालगोटेकी गिरी और अनुमान १ तोला जंगलीतोरी-घोटकर पिलादेनाभी लाभकारी होताहै।

कई लोग तमाखू भिगोकर उसका पानी पिलाना कई हुक्केका चीटा पिलाना कई नीलाथोथा पिलानाभी अच्छा कहतेहैं।

प्रयोजन यह है कि जब विषका प्रभाव कोठे (आमाशय फेफडे-आदि) में पहुँचे और कंठमें कफकी बत्तीसी बँधने लगे और गला-रुकासा होनेलगे उस समय तीक्ष्ण वमन करादेनाही प्राण बचासक-ताहै तथा तीक्ष्ण विरेचनभी लाभदायक है।

यदि खुश्की अधिकहो और रूक्षताके कारण वामक औषधोंसे वमन नहींहो तो दूधपिलाकर वमनकी औषध देनी चाहिये इससे वमन होगा और वमनके संग सबविषदूषित कफादि निकल जावेगा–और जितनाभाग विषका पक्काशयकी तरफ गयाहै वह विरेचनसे शुद्ध होजावेगा इसलिये मुख्य बात यही है कि इस अवस्थामें जैसे बने वैसे खूब वमन हो जावे ऐसा यत्न करना चाहिये और एकही वमन होनेसे निश्चित नहोना बलिक कई बार वमन होनेका यत्न करना चाहिये और फिर इसी भांति विरेचनका।

स्थानसे सर्पनिवारण।

सबसे मुख्यबात यहहै कि स्थानको खूब साफ रखना चाहिये.

विशेष करके वर्षाऋतुमें—घरमें कोई बिल छेद या दराज नहीं रखने, होंतो उन्हें बंद करा देना चाहिये ।

यदि घरमें सर्पका संदेह हो तो गंधकको आगपर डालकर खूब धूनीदे ।

सर्पकी कांचलीकी धूनी देनेसेभी सर्प भाग जाताहै—और जहां काँचली पडी होतीहै वहांभी सर्प नहीं आताहै ।

कारबोलिक एसिडकी बूसे भी सर्प नहीं रहता ।

एक और जरूरी बात ।

बहुत जगह हमने ऐसा देखाहै कि लोग मंत्र यंत्रके भरोसेपर कुछ औषधादिक नहीं करते हैं और अंतको मरजातेहैं यह बडी भूलकी बातहै यदि लोगोंका विश्वास मंत्र यंत्रपर विशेषभी हो तो वहभी करते रहो पर औषधादि न करना कहांकी बातहै । यदि मंत्र यंत्र करते कराते रहें तौभी औषध अवश्य करते रहना चाहिये.

एक जगह हमने स्वयं देखाकि एक लडकेको हाथके अँगूठेमें सर्पने काटाथा उसके घरके लोगोंने अँगूठेके ऊपर और फिर पहुँचेके पास तथा कोहनीके नीचे और कंधेके नीचे इस प्रकारसे चार बंद दृढरूपसे बाँधे हुएथे काटेहुएकोभी चार पहरके अनुमान होचुकाथा तौभी उसके आधे हाथके सिवाय कुछ विकार नहींथा लड़का १५ सोलह वर्षकाथा चलना फिरना होशकी बातें करना सब कुछथा मानो उसे सर्पने काटाही नहीं है ऐसी अवस्थाथी—पर आदमी अपने विश्वासके अनुसार सर्पके मंत्रज्ञों (गारडुवों) की तलाशमें फिर रहेथे कर्मवश दो गारडुवोंको लेकर आदमी आ पहुँचे उन मूर्ख गार-

डुबोंने आतेही कहा कि इन बंदोंको खोलडालो हमारे मंत्र तभी सिद्ध होंगे जब बंदफंद सब खोलडालोगे बहुत लोगोंने अनुरोधभी किया पर वे हठीले मूर्ख किसकी मानतेथे उनके घरकोंने अपने विश्वास वश बंद खोलहीडाले और नीमकी डाली लेकर वे शिरपर फटकारने लगे कोई पाँच सातबारही डाली हिलाई होगी कि वह लड़का बैठाहुवा एकदम गिरगया आँखें पथरागईं मुँहसे कुछभी नहीं बोलसका महा-मूर्च्छा होगई और वह मरगया मूर्ख गारडू पराये घरका सत्यानाश करके अपनासा मुँह लेकर चलतेहुए भला देखो तो इस समयकी मूर्खता कि यदि मंत्रज्ञहीहोंतो मंत्र पढकर बंदबांधना चाहिये नकि उलट बंद खुलवादेना यह कितनी मूर्खता बेसमझी और झूंठे पाखंड और हठकी बातहै (यह बातें अनुमान बीसवर्ष पहलेकी हैं)।

हम दृढतासे कहतेहैं कि इससमय सच्चे मंत्रज्ञ और यथार्थ मंत्र यंत्रोंका मर्म और विधि जाननेवाले दुर्लभ हैं झूठे पाखंडी और आडं-बरियों तथा मिथ्या घमंडियोंसे संसारभराहै इन लोगोंसे कहीं आराम हुआ सुनाभी है तौ वहां विषका प्रभाव बहुत सूक्ष्म होताहै वहांही इनकी बात बनजाती है—इसलिये ऐसोंके भरोसेपर रहकर औषधादि नकरना कितनी हानिकी बात है और बंदों को नहीं खोलना चाहिये जबतक पूर्ण आराम न होजावे—बल्कि बंद बांधेरखकर काटेकी जगह का रुधिर अवश्य निकालदेना चाहिये फिर और यत्न वमन वगैरा तौ पीछे होतेहीरहेंगे ।

सबका सारांश यह है कि दृढ बंद बांधदेने और रुधिरनिचोड़कर निकालना और फिर जैसे बने वमन कराना और फिर रेचनभी कराना

इतने यत्न होजानेहीसे अवश्य सर्पके विषसे मनुष्य बचजाताहै इसमें संदेह नहीं।

(गोधेरक) गुहेरा।

बहुत लोग गुहेरेके विषकी तीक्ष्णताको नहीं मानते परंतु यह उनका भ्रममात्रहै अवश्य गुहेरा एक तीक्ष्णविषवाला जंतु होताहै, पर हां यह प्रायः जंगलोंमें होताहै और बहुतकम होताहै कारण यह कि यह दोप्रकारके जीवोंके संयोगसे उत्पन्न होताहै इसीसे बहुत कम पैदाहोताहै परंतु हां बहुतसे सादेमनुष्य कृकलास जैसे किसीजीवको देखें उसेही गुहेरा समझ लेते हैं सो नहीं है क्योंकि गुहेरा गोह और काले सर्पके संयोगसे पैदाहोताहै और इन विजातीय जंतुओंका संयोग बहुतही कम कभीही होताहै इसीसे ये बहुत कमहोते हैं यह जीव चार पैरों वाला छोटा गोहके आकारका होताहै पर इतना विशेष होताहै कि इसपर काली लकीरें होती हैं और जीभभी सर्पके समान बीचमेंसे फटी (दोजीभके आकारकी) सी होती है हमने एक गुहेरा देखाहै वास्तवमें उसके दोजीभ (अर्थात् दोफांकवाली जीभ) थी एकमनुष्य बडी तलाशसे उसे मारकर लायाथा।

इसका विष बहुतही तीक्ष्णहोताहै प्रायः इसका काटाहुवा मनुष्य नहीं बचता और सर्पकी अपेक्षा इसका विष शीघ्रमारकभी होताहै ये गुहेरे पांचप्रकारके लिखेहैं और इनका यत्न तीक्ष्ण सर्पविषतुल्यलिखा है

(१) सर्पो गोधेरको नाम गोधाख्यः स्याच्चतुष्पदः। कृष्णसर्पेण तुल्यः स्यान्नाना स्युर्मिश्रजातयः ॥१॥ (इतिचरकः) तथा च निबंधसंग्रहे सुश्रुतटीकायां डल्लनः। कृष्णसर्पेण गोधायां भवेद्यस्तु चतुष्पदः। सर्पो गोधेरको नाम तेन दष्टो न जीवति ॥ १ ॥ इति।

इस गोधेरक (गुहेरे) के विषयमें अनेक लोगोंने कई कई गप्पें कही हैं और कहा करते हैं कोई कहताहै कि जब इसे मूत्रकी शंका होती है तब काटताहै कोई कहताहै कि पत्थरपर मुँह मारकर फिर आदमीपर झपटताहै कोई कहताहै कि यह मनुष्यको काटतेही पेशाब करताहै और उसमें लोटताहै पर ये सब गप्पही मालूम पड़ती हैं और जैसे ये गप्पहैं ऐसेही इसके यत्नोंकीभी अनेक गप्प सुनीजाती हैं कोई कहताहै कि इसके काटतेही मनुष्य पानीमें पड़जानेसे बचताहै कोई कहताहै कि उस गुहेरेका मूत्र लगादेनेसे बचताहै कोई कहताहै कि गुहेरेको झटसे मारदेनाही श्रेष्ठहै कि वह अपने मूत्रमें नलोटनेपावे परयेभी सब निरी गप्पही मालूम पडती हैं. कुछभी हो पर यह जीव अवश्य तीक्ष्ण विषवाला होताहै इसमें संदेह नहीं ।

बिच्छू ।

वृश्चिक अर्थात् बिच्छू हमारे आयुर्वेदमें तीस प्रकारके लिखेहैं पर मुख्य वे तीनही भाँतिके होते हैं. १ मंदविषवाले २ मध्यम विष- वाले ३ महाविषवाले और (उग्रविषवाले) इनमेंसे जो गोबर लीद मूत्रादिमें उत्पन्न होते हैं वे महाविषवाले होते हैं और जो चूना पत्थर ईंट और काठ आदि और विषयुक्त सर्पादिके मल मूत्रके संयोगसे पैदा होते हैं वे मध्यम विषवाले होते हैं तथा जो सर्पके विषयुक्त शरीर अथवा फणजो गल सड गयेहों उनमें पैदाहों अथवा और महातीक्ष्ण विषमें पैदाहों वे उग्रविषवाले होते हैं ।

मामूली गोबरके रंगके छोटे बिच्छू मंदविष होते हैं और सुर्ख या पीले नारंजी ये मध्य विषवाले होते हैं तथा सफेद काला

कज्जलीरंगका लाल तथा आधालाल आधानीला इत्यादि उग्रविष-वाले होतेहैं ।

मंदविषवाले १२ प्रकारके और मध्य विषवाले ३ प्रकारके तथा उग्र विषवाले १५ प्रकारके होते हैं इन सबके नाम और वर्ण ग्रंथ बढ-जानेसे नहीं लिखे मंदविच्छूके काटनेसे दर्दहोना(शूलें चलना)कंप शरीर अकडसा जाना काला रुधिर निकलना हाथ पाँवमें काटनेसे पीडा ऊप-रको चढ़ती है जलन सोजा और पसीना येभीहोतेहैं ।

मध्यविषवाले विच्छूके काटनेसे उपरोक्त वेदनाके सिवाय जीभ सूजजाती है कंठसे खाना पीना नहीं उतरता तथा मूर्च्छा (बेहोशी) भी होजाती है ।

उग्र विषवाले विच्छूके काटेसे सर्प कैसे वेगहोतेहैं शरीरपर फालके पडजातेहैं भ्रम दाह और ज्वर होता है तथा मुख नासिका आदिसे काला रुधिर निकलने लगता है जिससे शीघ्रही मृत्यु होजाती है ।

विच्छूके विषका यत्न ।

यदि मध्यविषवाले और उग्र विषवाले विच्छू काटें तौ शीघ्रही बंध बांधने चाहिये और सर्पविषके समान विधि करनी चाहिये परंतु यदि मंदविषवाले विच्छूने काटाहो तौ दंशस्थानपर चक्रतैलसे सेंचन करना अथवा गोमूत्र और नींबूके रसमें तुलसीके पत्ते पीसकर लेप-करें और गोबर निवाया करके बांधदें ।

अथवा मोर और मुर्गे इनके पंख सैंधानमक तैल घृत इनकी धूनी देवें अथवा कँसूभेके फूल (कंसूभा) दोनोंहलदी कोद्रवके तृण इन्हें घृतमें मिलाकर इनकी धूनी गुदापर देवें इससे विच्छूका विष और अन्य कीडोंका विष दूर होताहै ।

पीनेके लिये खांड मिलाकर दूधदेना अथवा पानीमें गुडघोलकर उसमें तज पत्रज इलायची नागकेसर डालकरदेवें अथवा ठंढेदूधमें गुड डालकर पिलावें।

और आनुभविक उपाय।

जहां विच्छूने काटाहो वहां थोड़ा सींगीमोहरा विष घिसकर लगावे अथवा घोड़ेके अगले पाँवके टकनेके पास जो नखूनसा होताहै उसे पानीमें घिसके लगाना।

अथवा अपामार्गकी जड़को पानीमें घिसकर विच्छूके काटे पर लगाना—और थोड़ी यह जड़ मुँहमें चवाकर पीक निगलजाना यह इस विषके लिये सिद्ध औषधहै इसका प्रभाव यहांतकहै कि इस जड़ीको विच्छूके काटेहुवे मनुष्यको दो तीनवार दिखादिखाकर छिपाने तथा स्पर्श कराने मात्रसे मनुष्यका वृश्चिक विष नाश हो जाताहै और इसका प्रभाव यहांतकभीहै कि यदि इस जड़ीका स्पर्श विच्छूके डंकसे दो तीनवार होजावे तौ उसके डंक मेंही विषनहीं रहता और वह विच्छू निर्विष साधारण कीडोंके समान उस समय होजाताहै—इस जड़ीका अनुभव कईबार हमने विच्छूके काटेहुवेपर कियाहै और सिद्ध पायाहै।

उन्मत्त कुत्ते और स्यार आदिका विष।

कभी कभी कुत्ते तथा स्यार आदिमें बहुत भयंकर विष पैदाहो जाताहै इस अवस्थावाले कुत्तेको बावला कुत्ता और स्यारको बावला गीदड कहते हैं यह उनमें कफ वायुके बढ़नेसे होजातीहै—कई

ऐसाभी कहते हैं कि सर्पादिके खाजानेसे उनकी यह व्यवस्था होती है ।

विषयुक्त बावले कुत्तेके लक्षण ।

जब कुत्ते आदिकी उन्मत्त दशा होतीहै तब उसकी पूँछ सीधी होकर लटक जातीहै गर्दन टेढीसी होजातीहै मुँहसे लार बहुत पड़ती है बहरा और अंधासा होजाताहै जिसतरफको धुन लगती उधरही को घुसने लगताहै और एक दूसरे कुत्तों या मनुष्योंकी तरफ दौड़-ताक्षा रहताहै या निसत्त्वसा होकर पड़ा रहताहै ।

इसके काटे हुयेके लक्षण ।

ऐसे कुत्ते आदिके काटनेसे डाढ़की जगह सुन्नतासी होजातीहै और कालापन लिये रक्त निकलताहै ।

इसकी असाध्यता ।

जिस उन्मत्तकुत्ते स्यार आदिने काटाहो रोगी उसकेसी चेष्टा करने लगे और वैसेही शब्द करनेलगे और अन्यक्रियाओंसे हीन होजावे तौ इसे असाध्य जानना (भाषामें इसे हडकवाय होजाना कहते हैं) और ऐसे जिस जीवने काटाहो यदि रोगी उसकेरूपको मिथ्या समयपर यूंही देखे (अर्थात् उसे सदा वही दीखे) तथा पानी आदिमें भी उसीका रूप दीखे तौ उसे असाध्य जानना-अथवा जो पानीको देखकर या पानीका शब्द सुनकर भयभीत होकर वैसीही चेष्टाकरे तौ असाध्य जानना (ये सब हडकवाय होनेके लक्षणहैं)

इस विषके उपाय।

कुत्ते आदि जो डाढसे काटने वाले चतुष्पद जीव बावलाकुत्ता स्यार आदि–आरंभमें काटतेही डाढके स्थानका रुधिर निचोडकर निकाल देना चाहिये और फिर गर्म घृतसे जलादेवे और पूर्वोक्त अगदोंमेंसे कोई सा पिलावे अथवा पुराना घृतही पिलावे और आकके दूधसे मिलीहुई औषधसे नस्यदेकर शिरका रेचन करावे तथा सफेद साटी (जिसे विषखपरा कहते हैं) और धतूरेकी जड थोड़ी देना चाहिये।

तथा तिल पीसकर लगाना अथवा तैल (गर्म) लगाना तथा आकका दूध लगाना तथा गुडसे झारना येभी उन्मत्त कुत्तेके विष को दूर करते हैं।

इस समयके आनुभविक उपाय।

उन्मत्त कुत्ते आदिके काटतेही मनुष्यके दंशस्थानका रुधिर निचोडकर निकालदेवे फिर विषनाशक औषध आकका दूध आदि लगावे कई ऐसाभी करते हैं कि चिरागका देशी तैल लगाकर लालमिर्च पीसकर डाढके जखममें भरदेते हैं और ऊपरसे मक-ड़ीका सफेद जाला चिपकाकर पट्टीबाँधदेते हैं (हमनेभी इस यत्नसे कइयोंको फायदा होता देखाहै) और रोगीसे पथ्य रखाते हैं जिससे हडकवाय नहो इसभांति पथ्य कराते हैं कि कांसीकी थालीमें खाने को नहीं देते न पानी ऐसे पात्रमें देते हैं तथा दर्पणभी नहीं-देखनेदेते जलके स्थानों कुँवा तालाव नदी नहर आदिके पास नहीं जाने देते बल्कि कई यहां तक करते हैं कि पानी पिलाते समयभी

आँखें बंद करादेते हैं (कारण इसका यह है कि जलसे भय न लगने लगे) तथा और प्रकार सेभी शरदी और जलसे बचाते हैं ।

अन्यउपाय ।

हमारे वैद्यक में यह भी लिखाहै कि यदि ऐसे विषैलेचतुष्पद-जीवोंका विष स्वयं कुपित होजावे अर्थात् हडकवाय उठआवे तो वह मनुष्य जीना कठिनहै इसलिये कृत्रिम उपायसे उसे आपसे कुपित करदेना चाहिये जिसकी शांति भी उपायसे होसकती है इसी विचारसे उन्होंने लिखाहै कि शरपुंखा (नीलझोझरू) की जड दश माशेके अनुमान और इससे आधी धतूरेकीजड तथा इतनेही चावल इन्हें चावलोंके पानी से पीसकर धतूरेके पत्तोंमें लपेटकर पकालेवे और इसे औषधकी भांति खिलावे इससे इस औषधकेपचते समय कुछ विषका कृत्रिमकोपसा होता है सब उस रोगीको जलरहित ठंढे स्थानमें रक्खें और ऐसा करनेसे वह नकलीप्रकोप शांतहोजाताहै फिर यदि कुछ विषका भाग शेष रहा मालूमदे तो उसके तीनदिन या पांचदिन पीछे इसकी आधीमात्रा फिरदेवे जिससे सभी विष नष्ट होजावे फिर निर्विष होनेपर स्नान करादेवे और वमन रेचनसे शुद्ध करे यह विधि सुज्ञ-वैद्यके करनेकी है साधारण मनुष्यों को करना उचितनहीं ।

इसपर सिद्ध और सरल उपाय ।

हम पहले नागनवेलका वर्णन और गुण सर्पविषके साथ करचुके हैं सो वही नागनवेल दोप्रकारकी होती है एककालीजड़की दूसरी भूरी जडकी पत्ते आदि दोनोंके एकही हैं इनमें काली जड़वाली सर्पविषके लिये मुख्य है और भूरी जड़की श्वान विषके लिये और यह कुछ पतलीभी होती है ।

इसका उपयोग यों है कि उन्मत्तकुत्ते या स्यार आदिके काटे हुवे मनुष्यको काटतेही उस दिन या दो एक दिन पीछे (हड़कवाय होनेकी शंकासे पहले) ६ माशे वह जड़ पानीमें पीसकर पिलादेना चाहिये इससे वमन होती है और कुत्तेके काटेको कभी हड़कवाय नहीं होती और हड़कवाय होजानेपर इसे १ तोला उसी भांति पिलाना चाहिये इससे अब भी वमनहोगी और गौरसे देखना वमनमें अतिसूक्ष्म कुत्तेके आकारके कृमि निकलेंगे जिससे सब विष जाता रहताहै और यदि एकवारसे सबविष नष्टनहो तो दो तीनवार मात्रा घटा घटाके पिलाना चाहिये इसकी दोनों भांतिसे हम कईबार परीक्षा करचुकेहैं और सिद्ध पायाहै ।

चितावनी ।

हमारे देशके लोग कुत्तेके काटेहुवोंकोभी मंत्र यंत्र कराने दूर दूर लेजातेहैं और सैकड़ों रुपये इसमें खोदेतेहैं और औषधपर विशेष विश्वास नहीं लाते हम पहले कहचुके हैं कि ऐसे मंत्र सिद्धिवाले अब दुर्लभ हैं इससे हमारा प्रयोजन यह नहीं है कि मंत्रोंमें सिद्धि नहीं है पर हां इतना हम जरूर कहतेहैं मंत्रोंके सिद्ध करनेवाले बहुधा अब बहुतही विरलेहोंगे इससे औषध करनेमें कभी शिथलता नहीं करें ।

मूषक विष ।

विष युक्त मूषक सर्वदा सब देशों और नगरोंमें नहीं होते इसीकारण इन चूहोंके विषको बहुतलोग नहीं जानतेथे और अबतकभी बहुतसे नहीं जानते हैं परंतु यह विष सबसे दुर्निवार और बड़ा भयंकरहै क्योंकि और जीवोंका विषतो शरीरमें काटनेसेही चढ़ताहै

जिसका बोध झट होजाताहै और मनुष्य उससे बचनेकी युक्ति करके बच सकताहै परंतु विषैले चूहोंका विष ऐसा नहीं है जो काटनेसे चढ़े क्योंकि इन मूषकोंके वीर्य (शुक्र) में तथा मूत्रमें पुरीषमें नखमें और दंष्ट्रामें ऐसे पाँचस्थानोंमें विष और विशेष प्रधान विष वीर्य तथा मूत्रमें होताहै और वह उनका वीर्य मूत्रादि शरीरसे स्पर्श करने परही उसका प्रभाव सूक्ष्मरूपसे शरीरमें प्रविष्ट होजाताहै तथा पृथ्वीपर या किसी वस्त्रादिपर और किसी वस्तु पर इन चूहोंका शुक्र मूत्रादि पडजाताहै या लगजाताहै तो उनके शरीरसे स्पर्श होनेसेभी शरीरमें विषका प्रभाव प्रविष्ट होताहै और बड़ी चिंता और विचारकी बात इसमें यह होतीहै कि आज विषका प्रवेश शरीरमें हो तो आजही मालूम नहीं होता किंतु जब वह समय और कारण पाकर कुपित होताहै तब कोई विकार मालूम पड़ताहै—जैसे उन्मत्तकुत्तेके काटका विष तत्कालही कुपित नहीं होता अर्थात् काटतेही हडकवाय नहीं होजाती किंतु जब वह काल और कारण पाताहै तब हडकवाय होतीहै इसी भांति इसमेंभी कुछ दिन पीछे काल और कारण पाकर विकार मालूम होताहै परंतु कुत्तेका काटना तो एक प्रत्यक्ष बात होतीहै जब हडकबायहुई और मालूम पड़ाकि फलाने दिन इसे कुत्तेने काटाथा और यह मूषक विष न जाने कब किस वस्त्रादिका लगा शरीरसे छूगया इसका मालूम नहीं इसीसे इसके विकारमें अनेक प्रकारकी शंका पड़ती हैं कोई उस विकारका कारण कुछ बताताहै कोई कुछ पर ठीक परिज्ञान सहजमें नहीं होता और विशेष शोक और विचारकी बात इसमें

यहभीहै कि कुत्ते उन्मत्त होजावें तौ उन्हें सब जानते हैं और झट मार डालतेहैं तथा सर्पादिभी प्रत्यक्ष मालूम होते हैं पर ये बिलवासी होनेसे घरोंके बिलोंमें रहतेहैं कोई नहीं जानसकता कि इनमें कौन चूहा कैसाहै और इतनेमें वे झट फिर बिलोंमें घुसजातेहैं बल्कि उनके मल मूत्र और वीर्यसेभी सब वस्त्रादि सामानको नहीं बचा सकते न जाने कब किस वस्तुपर मल मूत्रादि डालजावें जिनका स्पर्शही कालांतरमें विकारकारक होताहै–इसके सिवाय जब यह विषयुक्त मूषक और इनका विष दुर्निवारहै तौ दैवयोगसे किसी नगर या ग्राममें इनकी वंशवृद्धि होनेपर वहां इनके विषजन्य विकारकी व्याधि सामुद्रिक रोगकासा रूप धारण करती है ।

हमने बंबईकी महामारी (प्लेग) को मूषकविषजन्यही सिद्ध कियाहै बल्कि एक पुस्तक महामारी विवेचन नामक तयार करके प्लेगकमीशनमें भेजाहै और वह पुस्तक इसी श्रीवेंकटेश्वर प्रेस बंबईमें छपी है–इतनाही क्यों हमने स्वयं बंबई जाकर अपने विचारकी सत्यासत्यताके लिये अनेक उपाय किये कई रोगी देखे मूषकोंका निरीक्षण किया और व्याधिके आदि कारणकी खोज करी तौभी हमें अवश्यमेव यह महामारी मूषकविषजन्यही सिद्धहुई जिसके लिये १८ दिसंबर सन् १८९९ ई० को श्रीसेठ खेमराजजी केही स्थानपर उन्हींके सदुद्योगसे बंबईके प्रसिद्ध २ देशी डाक्टरों और वैद्योंकी सभाकरके सबके समक्ष अपना विचार प्रगटकिया और शंका समाधान पूर्वक सिद्धकिया जिसे समस्त उपस्थित महाशयोंने समर्थनपूर्वक मान्यकिया जिसका हाल ता० २२ दिसंबर सन् १८९९ ई० के श्रीवेंकटेश्वर समाचारमें छपाहै देखलीजे ।

इसका विशेष वर्णन देखनाहो तो हमारा रचित महामारी विवेचन पुस्तक मँगाकर देखिये और कुछ संक्षेपमात्र हम यहांभी लिखते हैं ।

मूषकविष और उसके लक्षण ।

यहतो हम पहले कहही चुके हैं कि विषैले मूषकोंका विष प्रधानतः शुक्रमें होता है–वे विषयुक्त मूषक१८प्रकारके होते हैं उनके नाम लालन, पुत्रक, कृष्ण, महाकृष्ण इत्यादिक हैं और इनका विष मनुष्योंके शरीरमें इसप्रकारसे प्रविष्ट होता है कि जहां इन विष मूषकोंका शुक्र गिरे या शुक्रसे लिपे सने अंगों या वस्त्रादि पदार्थोंसे किसी मनुष्यका शरीर छूजावे (रगड़ा जावे) तो उस शरीरमें रुधिर दूषितहोने लगजाता है (जो तत्काल मालूम नहीं होता) फिर जब काल और कारण पाकर कुपित होता है तब उससे शरीरमें ग्रंथी पैदाहोजाती हैं सोथ होता है कर्णिका चकद्दे होते हैं या फुनसी पैदा-होजाती हैं विसर्प और किटिभभी होसकता है संधि संधि टूटने लगती है दारुणवेदना होतीहै ज्वर होजाता है मूर्च्छा (बेहोशी)होती है अत्यंत निर्बलता होती है तथा अरुचि, श्वास, कंप येभीहोते हैं और रोमांच होआते हैं (येसुश्रुतोक्त लक्षण हैं परंतु वाग्भटमें इतना और भी है

---

१ पूर्वमुक्ताःशुक्रविषामूषकायेसमासतः १ शुक्रंपततियत्रैषांशुक्र-दिग्धैःस्पृशंतिवा ॥ नखदंतादिभिस्तस्मिन्गात्रेरक्तंप्रदुष्यति २ जायंतेग्रंथयः शोफाःकर्णिकामंडलानिच ॥ पिडकोपचयश्चोग्राविसर्पाःकिटभानिच ३ पर्वभेदो रुजस्तीव्राज्वरोमूर्च्छा च दारुणा॥ दौर्बल्यमरुचिःश्वासो वेपथु-र्लोमहर्षणम् ४(इति सुश्रुतः) । वाग्भटे तु विशेषः । श्लेष्मानुबद्धबह्वाखु पोतकच्छर्द्दनं सतट्, इति ॥

कि) कफसे लिपटे सूक्ष्म चूहेके आकारके बहुत वारीक कृमि वमन में निकलते हैं और प्यास अधिक होतीहै ।

विचारकर देखोतो सामयिक महामारीमें ये सभी लक्षण ठीक २ मिलते हैं और इसका उपादान आदिकारण विष मूषकभी उस प्रांतमें विशेष पायेगये हैं ।

इसकी असाध्यता ।

यदि इसमें मूर्च्छा और चूहीके आकारकी ग्रंथीहो तो वर्णबिगड़जावे छेदनताहो कानोंसे सुनाई नदे तीक्ष्णज्वरहो शिरभारी हो मुँहसे राल बहे, रुधिरकी वमनहो इतने लक्षण होनेसे मूषकविषकी असाध्यत समझनी चाहिये ।

मूषकके विषसे बचेरहनेकी युक्ति ।

१ जहां इन विषमूषकोंका अधिक प्रादुर्भावहो वहां अपने स्थानोंको बहुत साफ रखना मकानोंमें कहींभी बिल छेद दण्ड नहीं रहने देना कोई होतो बंद करादेना और मोरी आदिमें बारीक जाली लगवादेना ।

२ स्थानोंके आसपास या अंदर मैला कीच कूड़ा और फिजूल वस्तु न रखना ।

३ सामान कपडे लत्ते जा गैरमामूलीहों उन्हें अच्छे संदूकोंमें बंदरखकर तिपाइयोंपर रखवा देना और मामूली वर्त्तावका सामानहो उसे भी बंध आलमारियोंमें सावधानीसे रखना जहां ऐसे जीवों और उनके मल मूत्रादिका संपर्क नहोसके और खान पानके सामान कोभी ऐसेही रक्षित रखना ।

४ बहुतसे बारदाने और असबाबके मकानोंमें नहीं जाना और वहांका सामानभी यथासंभव काममें नहीं लाना।

५ दूसरे मनुष्योंके मैले अस्वच्छ वस्त्रों आदिसे अपना शरीर नहीं रगड़ना तथा अस्वच्छ और समाक्रांत मनुष्योंसे संसर्गभी नहीं करना।

६ नित्य स्वच्छ और साफ घुले वस्त्र पहनना और कपडों आदिपर कोई जरासाभी दाग धब्बा लगा मालूमपड़े तौ उसे न पहनना और साफ करादेना।

७ कभी कभी मकानोंको साफ या विषघ्न जलसे धुलाकर सुखालेना और विषनाशक धूनी देना।

८ नित्य शुद्ध निवाये या यथारुचिजलसे स्नान करना और कभी दूसरे चौथे दिन विषघ्न औषधोंके जलसे न्हा डालना।

९ ऐसे दिनोंमें इसके विषनाशक अगदों में से किसी साधारण औषधका उपयोग रखना।

१० ऐसे समयमें पूर्वकी पवन शरदी अजीर्णकारक भोजन भेद अवस्थादिमें फिरना इत्यादिसे बचे रहना।

मूषकविषका प्रतिकार।

चिकित्सा आरंभ करनेसे पहले रोगीके रोग (इस विषका शरीरमें प्रवेश होना और उसके कोप और उपद्रव आदि) का पूर्णतया निश्चय और निदान करलेना चाहिये तथा रोगी और रोगका बला-बल अवस्था प्रकृति और देश तथा समय इत्यादि सब बातोंका विचार करना चाहिये—और जब यह बात निश्चय होजावे कि इसमें

अवश्य मूषक विषका विकारहै तो प्रथम शिरा वेधकर रुधिर निकाल देना चाहिये और शोधन करना चाहिये रक्तशोधनी वे दवा लेनी चाहिये जो इस विषमें लाभ पहुँचावें और दंशस्थानको जहां विष दुष्टरुधिरहो और ग्रंथी कर्णिकादिहों उसे अग्निसे दागदेना या पछने लगाकर या चीरकर दूषित रक्त निकालदेना (निचोड डालना) और फिर शिरस, हलदी, कूट, केसर और गिलोय पीसकर लेप करना चाहिये ।

फिर जब इसके विषका प्रभाव आमाशयमें पहुँचे (मुँहसे राल बहनेलगे) तब जंगली कटुतोरई । और अरलू और अंकोट इनके काथसे वमन करावें अथवा अरलू जंगलीतोरई इनकी जड़ और मैन-फल तथा देवदाली इनके काथसे वमन करावें ।

वमन करानेमें सर्वदा यह ध्यानरहे कि कोठा खाली नहो इस लिये दही पिलापिलाकर वमनकी औषधदेवे और खूब वमन करावे और उचित होतो विरेचनभी देवें ।

इसमें भ्रम तथा दारुण मूर्च्छाभी होती है इससे इस विषका प्रभाव हृदय और मूर्द्धा (दिमाग) पर बहुत विशेष होताहै इसलिये हृदयके लिये हृद्यपदार्थ देने (जो विषघ्नभी हों) चाहिये और दिमागकी शुद्धिके लिये सिंभालूकी जड़ बिल्लीका हाड (या नख) और तगर इनको पानीमें घिसकर नस्य देना चाहिये इसमें थोड़ा सींगीमोहराभी मिलादेवे तो प्रभाव विशेष होजाताहै ।

अथवा शिरसके फल अर्थात् बीजोंकी नस्य देकर शिरका विरेचनकरै तथा गोबरके रसमें त्रिकटु पीसकर नेत्रोंमें थोडा अंजनकरै

और कूट, त्रिकटु, दारुहलदी, मुलेटी, दोनोंलवण (सैंधा सौंचर) मालती नागकेसर और यथा प्राप्य सब मधुरगण (काकोल्यादि) लेकर इन्हें कैथके रसमें पीसकर अगद बनाकर रक्खे इसे मिश्री और शहतके संग देवे यह सब विषोंको नष्ट करताहै विशेष करके मूषकोंके विषको नाशकरताहै ।

अथवा शिरसके बीज लेकर आकके दूधमें भिगो भिगोकर तीनवार सुखाले फिर इनमें पीपलका चूर्ण मिलाकर गोली बनाले यह अगद मकड़ीके विषको सब कीडोंके विषको सर्पके विषको विच्छूके विषको और मूषकोंके विषको नष्ट करने वालाहै ।

अथवा सफेद पुनर्नवाकी जड और त्रिफला, इन्हें पीस चूर्ण करके शहतमें मिलाकर चाटनेसेभी मूषकविष दूर होताहै ।

इसमेंपथ्य ।

पूर्वकी पवन, शरदी लगना, ठंढेपानीसे न्हाना, अजीर्णकारक और शीतल भोजन, दिनका सोना, मेह और अवरमें फिरना तथा गीली ठंढी पवन इन बातोंसे बचे रहना चाहिये ।

कनखजूरा ।

इसे संस्कृतमें शतपदी कहते हैं यह ८ प्रकारके होतेहैं जैसे काला चितकबरा, नारंजी, पीला, लाल, सफेद गोबरकेरंगका और हरियाली- लिये इनके दंशसे सोजन पीडा दाह ये होते हैं और सफेद तथा नारंजी विशेष विषवाले होतेहैं इनके दंशसे उपरोक्त विकारों के सिवाय हृदयमें दाह अतिमूर्च्छा ये होते हैं तथा सफेद सफेद फुंसियासी शरीर पर होजाती हैं ।

इनका काटना भी संभव है पर विशेषकर इनका चिपट-जाना (पंजे शरीर की त्वचामें गाड़कर चिपटना) यही प्रसिद्ध है और देखा गया है तथा इसके पंजोंके व्रणोंमें भी उपरोक्त सब विकार होसकते हैं ।

यदि किसीके शरीरमें यह चिपटजावे तो चिमटी वगैरहसे उतार-ने या खेचनेसे हाथसे अलग करनेसे कभी नहीं छूटता है ऐसा कर-नेसे उलटा पंजे घुसाकर ज्यादे चिमटता है गर्मलोहा लगानेसे भी कभी कभी यह नहीं उतरता और जलजाता है यहांतक भी पंजे नहीं छोड़ता है ।

इसके छुड़ानेकी सहजक्रिया यह है कि जरासा ताजे मांसका टुकडा इसके मुँहकी तरफ लगादो और चुप होजावो यह स्वयं शरी-रसे उतरकर उस मांसके टुकडेपर चिपट आवेगा ।

हमने विश्वस्त मनुष्यसे सुना है कि उसके सामने किसी आदमीके हलकसे कनखजूरा नीचे उतरगया और वोह मनुष्य वेतावहोगया एक सुज्ञ चिकित्सकने मजबूत रेशमके मोटे डोरेमें एक मांसका टुकड़ा बडे बेरके बराबरका बांधकर उस रोगीको निगला दिया और डोरेका दूसरासिरा बाहर अपने हाथमें रक्खा और रोगीसे चुप पडे रहने को कह दिया कोई १५ मिनटमें उसने उस डोरेको मुँहमेंसें खेंचा तो कनखजूरा उस मांसपर लिपटाहुवा बाहर खिंचआया और थोडीदेर बाद वह आदमी होशसे बातें करने लगा और अच्छाहोगया ।

यदि कोई मांसका व्यवहार नहीं करते या नहीं करसकते हों उन्हें चाहिये कि गुड़में कपड़ा भिगोकर उसी प्रकार उसके मुँहके पास लगादेवें इसपर भी वह उतर आताहै ।

उतर आये पीछे जहां पंजे गडेहों वहांपर केसर तगर सोहजना पद्माख और दोनों हलदी पानीमें पीसकर लगादेना चाहिये—या केवल तगरही लगादे तौभी अच्छा है।

भ्रमरी और मधुमक्खी।

भ्रमरी अर्थात् ततैये येभी कई जातिके होतेहैं जैसे काले, ऊदे नारंजी, और पीले इनमेंसे पीले ततैये कुछ छोटे और अल्प विष वाले होतेहैं तथा काले ऊदे ये तीक्ष्ण विषवाले होतेहैं इनके काटनेसे शरीरमें सोजा और दर्द तथा जलन होती है उग्र विषवाले ततैये के काटनेसे सब शरीरमें दाफड़ से होजातेहैं हूले चलती हैं कइयोंको तपभी चट आता है।

इनके काटतेही घृत लगाकर सेंकदेना बहुत अच्छा उपाय है इससे विष अधिक नहीं बढता।

अथवा पासफोर्स जरासा पानीमें घिसकर लगादेना या पासफोर्स एसिड लगादेना चाहिये यदि यह न मिलसके तौ दियासलायोंका सुर्ख मसाला पानीमें घिसकर लगादेना चाहिये।

एक अखबारमें इसपर कोनैन लगादेना लिखा देखाहै पर परीक्षा नहीं की।

घोड़ेके अगले पैरके टकनेका नखून घिसकर लगाना भी फायदा करताहै—

आकका दूध लगाना भी बहुत फायदा करताहै तथा सींगीमोहरा घिसकर लगादेनाभी ठीकहै अथवा नौसादर और सिरका लगाना या गंधकका तेजाब हलकासा लगादेना बहुत फायदा करताहै।

मधुमक्खी जिसे यहां महालकी मक्खी या शहतकी मक्खीभी कहते हैं यहभी कई प्रकारकी होती है जैसे छोटी, बड़ी, काली, पीली नीली आदि इनके काटनेसेभी शरीरमें सोजा होताहै जलनभी होती है और दर्दभी होताहै प्रायः सब बातें ततैये के विषके समान होतीहैं।

और उपाय भी वही लाभदायक होते हैं जो ऊपर ततैयेके काटे पर लिखे गये हैं (या सेंधानमक घिसकर लगादें)।

ये एक दो काट खावें तौ विशेष भयकी बात नहीं है पर यदि सैकड़ों भ्रमरी या मक्खी शरीरपर चिपटजावें और काटें तो मनुष्य मरजाते हैं इसमें संदेह नहीं ।

ये मधुमक्खी पहाड़ी इतनी जहरीली होती हैं कि कभी २ एकदो मक्खीके काटनेसे मनुष्य मरगये हैं ।

इन मधुमक्खियोंके बहुतसे किस्से कहानियां हैं कि ये दलबांध बांधभी मनुष्योंपर हमला करती हैं वैरको याद रखती हैं जिन्हें हम अप्रयोजनीय समझकर यहां नहीं लिखते हैं ।

लूता (मकड़ी) ।

ये हमारे आयुर्वेदमें अनेकप्रकारकी लिखी हैं राईके दानेसे लेकर कागके अंडेके बराबर बल्कि तीन तीन इंच तककी होती हैं साधारण घरोंमें छोटी २ और अल्प विष वाली होती हैं तथा घोरवनों और जंगलोंमें बड़ी बड़ी और महाउग्र विषवाली होती हैं ।

त्रिमंडला, श्वेता, कपिला आदिसाध्य और सौवर्णिका, जालवर्णा अग्निवर्णा आदि ८ असाध्य लिखी हैं ये भयंकर मकड़ियां इस देशमें पहले जब गहनवन जंगल विशेषथे तब बहुत होती थीं और वन-

वासी मनुष्योंहीको इनके घोर विषसे काम पड़ताथा अब भी यहांके गहनवनोंमें बड़ी मकड़ियां पाई जाती हैं और आफ्रिकाके बड़े २ जंगलों और दुर्गम वनोंमें तीन २ इंचकी मकड़ियां मिली हैं परंतु भरतखंडकी वस्तियोंमें भी चार पांच प्रकारकी छोटी मकड़ी होती हैं जिनका विषभी बड़ा दुःखदायक होता है।

मकड़ियोंकी मुँहकी लारमें नखमें मूत्रमें पुरीषमें डाढमें रजमें और वीर्यमें सबमें विष होता है विशेषकर इसके लार अर्थात् चेपमें विष होता है।

बड़ी मकड़ियोंके नख और डाढ सब कुछ होतेहैं इसमें संदेह नहीं।

इनके विषका प्राकट्य और परिज्ञान।

इनका विष यदि शरीरमें लगजावे तो पहले दिन कुछ खाजसी आती है जरा झनझनाटसा होता है कुछ दाफड़सेभी मालूम देतेहैं पर इसका रंग रूप ठीक २ प्रकट नहीं होता फिर दूसरे दिन जडोंमें सोजा और बीचमें निचाई ऐसे ददौडेसे प्रगट होतेहैं तीसरे दिन ठीक ठीक दंश मालूम पड़ जाता है (अर्थात् मकड़ी का विष है ऐसा मालूम होजाता है) फिर चौथे दिन उसका कोपहोने लगता है। और पांचवें दिन ज्वर आदि उपद्रव होतेहैं और विषके व्रण सो-थादिक विसर्पकी तरह फैलतेहैं फिर छठे दिन यदि उग्रविष होतो सब मर्मस्थानोको आच्छादन करलेताहै और सातवें दिन मूर्च्छाआदि होकर मनुष्यको मार डालताहै यदि अल्पविष होतो छठेदिन सोजा आदि अपनी अवधितक पहुँच जाते हैं और सातवें दिन स्वयं सोथादि कम होजाताहै और उपद्रव शांत होजाते हैं तथा बहुतही

अल्पविष होतौ सात दिनके भीतर अच्छा होजाता है उसके दाफड़ फफोले आदि सब सूख जाते हैं ।

इनका यत्न ।

हमारे आयुर्वेदमें इनके जुदे जुदे भेदों और उपद्रवों तथा मंदता उग्रता आदिपर उसी क्रमसे अनेक यत्न लिखेहैं परंतु वे सब भयंकर और असाध्य मकड़ियां हमारी वस्तियोंमें नहीं हैं इससे हम साधारण यत्न लिखतेहैं ।

जब मकड़ीका चेप लगा मालूमहो और खाज दाफड आदि मालूम पड़ें तब श्वेत पुनर्नवाकी जड़को या अपामार्गकी जडको महीन पीस कर मक्खनमें मिलाकर लगाना चाहिये ।

और दूधवाले वृक्षों गूलर, पीपल आदिकी छालको उबालकर उसे ठंढाकरके उससे झारना अर्थात् धोना चाहिये ।

और दूधमें मुलेटी, मुनक्का डालकर और समान जल डालकर उबालना जब दूध शेषरहे तब छानकर ठंढाकरके शहत या मिश्री- मिलाकर पिलाना चाहिये तथा ऐसाही शीत वीर्य विषनाशक द्रव पदार्थ (यवागू) भोजन कराना चाहिये— धूप अग्नि ताप और गर्म पदार्थोंका परित्याग रखना ।

विषमंडूक ।

मंडूक (मेंडक) भी कई भाँतिके जहरीले होते हैं जहरीले मेंडक आयुर्वेदमें ८ प्रकारके लिखे हैं जैसे काल , हरा, लाल, जौके वर्णका, दधिके वर्णका तथा भ्रुकुट और कोटिक (इंद्रगोप अर्थात् वीरबहूटी के आकारका) इनमेंसे पहले छह अल्पविषवाले होते हैं।

इनके काटेसे दंशस्थानमें अत्यन्तखाज होती है और मुँहसे पीले झाग आते हैं और भ्रुकुटी और कोटिक उग्र विषवाले होते हैं इनके काटेमें उपरोक्त लक्षणों के सिवाय अतिदाह वमन और घोर मूर्च्छा होती है बल्कि कोटिकका काटाहुवा असाध्य है बचतानहीं ।

संवत् १९५६ के श्रावणमासमें रियासत राजगढ मुल्क उमटवाडीके श्रीयुत महारावत श्री महाराजा बलवीरसिंहजी बहादुरने अपने यहां की चिकित्सार्थ हमको बुलाया हुवाथा—राजगढके निकट पूर्वकी तरफ नेवज नदी बहती है उसमें पत्थरोंका खुरा आने जानेको बँधाहै १ वैश्यका लडका उसपरसे आरहाथा उसके पाँवमें काटनेकेसी पीड़ा जानपड़ी उसने पाँव उठाया तो एक मेंडक कूदकर पानीमें गिरता उसे मालूम पड़ा रातका समयथा इससे ठीक रंग उसका दिखाई नहीं दिया घर आनेके थोड़ी देरपीछे वह बेहोश होगया उसके तीनपहरके अनुमान पीछे जब ४ घडी रात बाकी होगी उसका पिता हमारे पास आया हमने उसे देखा और सब मालूम किया उससमय औषध कहां हमने कुछ औषधें इसके विषनाशक मँगवानेको कहा और कहा कि यह असाध्यहै इतनेमें औषध लाने आदमी गये वह लडका मरगया प्रभात हमने उस नदीके उस किनारेके बहुतसे मेंडकोंको देखा वास्तवमें वहां तीन चार मेंडक विचित्र वर्णके देखे ।

सविषजलौका ।

जलौका (अर्थात् जोखेंभी) बहुतप्रकारकी विषयुक्त होती हैं जैसे

लाल, सफ़ेद, अत्यंतकाली, अतिचपल जिनका बीच विशेष मोटाहो जिनपर रोवें (रोम) हों जो इंद्रधनुषके तुल्य रेखावालीहों ये विषयुक्त होती हैं इनके काटसे शरीरमें दाह सोथ पाक खाज फोडे फुन्सी विसर्प ज्वर मूर्च्छा ये उपद्रव होतेहैं तथा श्वित्र कुष्ठ भी उत्पन्नहोजाताहै ।

बहुत मनुष्य छोटे मोटे रक्तविकारमें जोखें लगवाते हैं इसलिये जोखें पालने वाले को ध्यानरहे कि उपरोक्त लक्षण वाली जोखें कभी नपालें और कभी किसीको न लगावें तथा ज्ञातारोगीको भी परीक्षा कर लेनी चाहिये ।

यदि दैववश कभी विषयुक्त जोखें काटखावें या जोखें लगवानेमें कोई विषयुक्त लगजावे और उपरोक्त उपद्रव होंतौ पित्त और रुधिरनाशक तथा विषनाशक यत्नकरें और पहले कहेहुवे महा-अगद नामक औषधका उपयोग करैं ।

मशक (मच्छर)

मच्छरों को कौन नहीं जानता है चौमासे में इतना दिक्क करते हैं कि कुछ ठिकाना नहीं ये भी कई प्रकारके होते हैं पहाडी एक प्रकार का मच्छर प्राणनाशक कीडों के समान होताहै और शेष विशेष हानिकारक नहीं तौभी नाकोंमें दम कर देते हैं रातको जब इनका सन्नाटा होताहै और झुंडके झुंड हाथ पाँव मुँह वगैरहपे काटते हैं तौ नींद कोशों उड़जाती है दिल्लीमें इन मच्छरोंका इतना जोर है कि शायदही कहीं और इतनाहो ।

इनके काटनेमें खाज और थोड़ी जलन होतीहै पर थोड़ी देरमें आपही कम होजाती है ।

इनसे बचनेका मुख्य उपाय यही है कि पलँगपर बहुत बारीक मलमलका छपरखट चढवालेना ।

जो गरीब लोग ऐसा नहीं करसकते उन्हें चाहिये कि तेलमें कुछ पिसी गंधक मिलाकर उसका मालिश शरीरपर किया करें और फिर न्हाडालाकरें ऐसा तेल कई बार मलनेसे (ऐसे तेलकी चिकनाई का अंश त्वचामें होनेसे) मच्छर और खटमल नहीं काटते और कभी कोई काटेभी तौ उसकी कुछ पीडा मालूम नहीं पडती ।

इनका निवारण ।

ठीक निवारण इनका यही है कि मकानमें और उसके आस पास पानी कीचड़ तथा नमी और सब्जी हरी घास पत्ते वगैरह नहीं रहने देवें और मकान साफ सूखा रक्खें ।

अथवा कुंदरूका गोंद जलाकर धूनी देनेसे मच्छर नहीं रहते ।

अथवा कनेरके पत्तोंका रस पृथ्वी और दीवारोंपर छिड़कते रहनेसे मच्छर जाते रहतेहैं ।

गंधककी धूनी देनाभी लाभदायक है इससे भी ये जाते रहतेहैं ।

(वक्तव्य) ये एक एक गांव क्या मोहल्लेमें हजारों लाखों होजातेहैं यदि कोई किसी युक्तिसे अपने एक कमरेसे अब निकाल भी देवे तौ कुछ देरबाद फिर आजातेहैं इसीसे इनका निर्मूल निवारण किसी एक स्थानसे नहीं हो सकता ।

मत्कुण (खटमल)

यह चारपाईके कीडेभी बहुत दुःखदाई होते हैं मालवेमें इनका इतना जोरहै कि लोगोंने चारपाईपर सोनाही प्रायः छोडदिया वह

ये दीवारोंके छेदमें दराडोंमें कपडोंमें और सामानमें पुस्तकोंमें इतने रहते हैं कि चेंटियोंकी तरह चलते मालूम पडते हैं ।

इनसे वचनेकी यह युक्तिहै कि साफ विना दराड--छेदका पलँग बनवाना और नित्य या दूसरे तीसरेदिन साफ नीवार बहुत छीदा सा उसपर लपेट लेना और साफ धुला विस्तर विछाना और ऐसे ही तकिये गिलाफ वगैरहभी धुले रखना और चार पीतलकी थाली पानीसे भरना और उनमें चार पडवाये रखकर पलँगके पाये रख-देना ऐसा करनेसे घरके खटमल पलँगपर नहीं चढ सकते और थालियोंका पानी नित्य बदलवाते रहना—

मिट्टीमें गंधक डालकर लीपनेसे तथा सफेदीमें डालकर दीवा-रोंपर पोतनेसेभी खटमल नहीं रहते ।

गंधकको जलाकर उसकी धूनी देनेसेभी ये जाते रहते हैं तथा मरुवेके पत्तोंकी बूसेभी ये नहींआते ।

मकान बहुत साफ रखना विस्तर वगैरह नित्य उठवाकर साफ कराना येभी इसके लिये अच्छे हैं ।

यदि मकानपक्के हों तो मरुवेके काथमें नीलाथोथा डालकर उससे धोडालनेसेभी खटमल नष्ट होजाते हैं—

वरटी (बालू कीडी या चेंटी)

इनके भी कई भेदहैं जैसे वडा चेंटा कालीचेंटी लालचेंटी ये सभी मिठाई पर बहुत आजाते हैं मकानोंमें कोई भी मिठाई शहत शरबत वगैरह जरा खुला रहा कि इनके ढेरके ढेर चढ जाते हैं गर्मी के दिनोंमें मीठेपानीमें भी बहुत चढजाते हैं ।

ये तीनोंही प्रकारके मनुष्योंको काटते हैं पर विशेष तीक्ष्ण छोटी लालचेंटी होती हैं उनके काटनेसे शरीरमें आगसी लगजाती है और उदर्द पित्तकेसे ददौडे शरीरपर पडजाते हैं खाजभीहोती है ।

इनके काटेकी पीडा अधिक होतौ बँबई (सर्पस्थान) की काली मिट्टी गोमूत्रमें घोलकर लगादेना चाहिये यह प्रयोग मच्छर और मधुमक्खी के काटेपरभी लाभदायक है ।

ये कालीचेंटी या लालचेंटी किसी मिठाईके साथ खाई जावें या पानीके संगपीई जावें तौ गर्मी अधिक करती हैं पित्तके विकार पैदा होजाते हैं कंठमें रुकावटसी और फालकसे होजाते हैं ।

ऐसा होजावे तौ ताजादूध मिश्री मिलाकर पीना चाहिये ।

इनका निवारण ।

ये मकानोंमें मिठाई या मीठीदवा या शरबत वगैरह पर बहुतही-चढजाती हैं यहांतककि उस वस्तुको बिल्कुल खराब करदेती हैं ।

इसलिये यह युक्ति करनी चाहिये कि तैलमें गंधक मिलाकर उसस वस्त्रकी कत्तर चिकनी करके छींकों के ऊपर बांधदेनी अथवा जिस पात्रमें मिठाई हो उसके गलेपर जरासी लपेटदेनी इसे लांघ कर चेंटी नहीं आती हैं बोतलके गलेमें भी इस तेलकी भीगीडोर लपेटदेनेसे ऊपर चेंटी नहीं जासकती ।

जहां चींटें या चेंटी ज्यादे हों वहां कडुवेतेल के छींटे मारनेसे सब चेंट भागजाते हैं और चेटियां भी वहां नहीं रहतीं ।

विश्वंभरा आदि विषयुक्त कृमि हमारे आयुर्वेदमें बहुतसे लिखेहैं पर वे अब नहीं होते और न उनके विषके विकार देखनेमें आते हैं इससे वे इस छोटी पुस्तकमें नहीं लिखेगये ।

विषनाशक वर्ग ।

सोमराजी (बावची) के बीज और फूल कटभी सिंभालू चोरक वरणा कूट नाकुली (नाई या नावेबूंटी) सातला पुनर्नवा (साटी तथा विषखपरा) शिरसका पंचांग (विशेष कर पुष्प) किरमालाके फूल आकके फूल श्यामा (श्यामतुलसी तथा निसोथ) पाठा और वायविडंग आमचूर आमडे अश्मंतक वँबई (सर्पोंकी बांबी) की मिट्टी और लाल फूलका पियावांसा ॥ तथा अपामार्ग तगर और जंगली तोरई—ये सब विषनाशक औषधे हैं स्थावर जंगम सब प्रकारके विषमें इनमेंसे जो मिले उतनों काही जैसे होवे तैसे लेप अंजन नस्य और पानादिमें उपयोग करना कुछ न कुछ लाभदायक होताहै इसमें संदेह नहीं ।

विषके विषयमें प्रकीर्ण बातें ।

स्थावर अथवा जंगम प्रायः सभी प्रकारके विषमें जो जो सामान्य वर्त्तावहैं उन्हेंभी हम लिखते हैं ।

कई मनुष्य हरेक विषपर कालीमिर्च और घृत पिलाना लाभदायक समझते हैं ।

भंग, चरस, गांझे, और मद्यके सिवाय प्रायः सभी विषोंमें विष पीडितको विषके वेगके समय सोने देना उचित नहीं जानते ।

हमारे वैद्यकमें कृत्रिमविषभी लिखेहैं पर वे स्थावर जंगम ही होते हैं तथा उनकी संख्याः और विवेचन नहीं होसकताहै क्योंकि नियमित नहीं इसीसे नहीं लिखेगये ।

तीसरा प्रकरण।

इस प्रकरणमें उस प्रकारके विषका वर्णन कियाजावेगा जो प्राकृत पदार्थों जल वायु आदिमें अदृश्यरूपसे मिश्रित होता है जिससे अनेक उग्र और शीघ्रमारक व्याधियां उत्पन्न होती हैं—चाहो कोई शत्रु किसी दूसरेके देश या स्थानादिके दूषित करनेको उनमें किसी प्रकारसे विषका प्रभाव अभिनिवेशकरे चाहो स्वयं देश काल और अनेक स्थावर जंगम पदार्थोंके योगायोग या विपरीत भावसे उनमें विषका प्रभाव उत्पन्न होजावे और वे दूषित होजावें।

दूषितजलके लक्षण।

यदि जल दूषित हो तो वह कुछ गाढासा होता है और उसमें तीक्ष्ण गंध होजाती है झागसे विशेष होतेहैं लकीरें सी जान पड़ती हैं उसके जलचर विशेष मरने लगतेहैं। अथवा जलका गंध रूप स्वाद स्पर्श बिगडे से हों उसमें क्लेदता अधिक हो तथा जिस जलाशय का जल सूखकर थोडा रहगया हो या जो जलप्रिय मालूम न पड़े या जिसमें अन्नपचाना तृषा शांत करना आदि गुण विपरीत होजावें ऐसे जलको दूषित जानना चाहिये।

दूषित जलके शोधनकी रीति।

धव अश्वकर्ण (पीपल केसे पत्रवाला पूर्व देशमें प्रसिद्ध वृक्ष है) बिजैसार फरहद पाटला सिंभालू मोख किरमाला सफेदखैर इन्हें जलाकर भस्म करले और ठंढा होनेपर इसमें से सरोवरों तथा कूपों में डाल देने से उनका जल शुद्ध और निर्विकार होजाता है।

तथा इस भस्ममेंसे १ अंजली भरकर एक घड़े भर पानीमें घोल कर रखदेवे जब वह सब भस्म नीचे बैठकर साफजल होजावे तो उस शुद्ध और निर्विकार समझना चाहिये उस जलको छान लेना और नितारकर पीने आदिके काममें लावे ।

दूषितवायुके लक्षण ।

ऋतुसे प्रतिकूल वायु चलना अत्यंतगीली बहुत तेज निहायत ठंढी अतिगर्म अतिरूक्ष अत्यंतभारी जिसमें गंधप्रतिकूल हो वाष्पके परमाणु मिले हों जिसमें रेत छिन धूल धूँवा आदि मिलेहों तथा जिसमें पक्षी व्याकुल होहोकर गिरें जिसके लगनेसे मनुष्योंकी खांसी जुखाम शिरमें दर्द रुधिर विकार और नेत्रोंमें पीडाहो तो उस वायुको दूषित जानना चाहिये ।

दूषितवायुको शुद्धकरनेकी रीति ।

लाख हलदी अतीस हरीतकी नागरमोथा हरेणु इलायची पत्रज दालचीनी तथा कूट और प्रियंगु इन्हें अग्निमें डाल धूनी देनेसे दूषितवायु शुद्ध होजाती है ।

और यदि वायुमें जंतुओंके गले सडे परमाणु कृमि विशेषहों तो गंधककी धूनी देनेसे शुद्ध होजाती है ।

गूगलकी धूनी देनेसे अथवा लोबानकी धूनीसे अथवा कपूर जलानेसेभी वायु शुद्ध हो जाती है ।

परमाणुरूप विष ।

हर एक पदार्थ विशेषकर सजल (जिसमें गीलापन अर्थात् नमी

हो) पदार्थ अपनी अवधिसे अधिक अयोग्यरीतिसे रहने (पड़ारहने) से वह गलने और सडने लगजाताहै और गल सडनेकी अवस्थामें उनमें दुर्गंध (विपरीत गंधि) तथा विष का प्रभाव उत्पन्न होजाताहै जैसे गले सडे फल सडाहुवामांस सडादूध दही तथा अनेक भोजनके पदार्थ ये सभी उस अवस्थामें विषैले होते हैं इनके खायेजाने अथवा दुर्गंध पहुँचनेसे तथा शरीरसे उनका संपर्क होनेसे ये विषकासा प्रभाव करते हैं—जैसे विषमें मंदता तीक्ष्णता आदि होती है ऐसेही इनमेंभी किसीमें कभी मंदविषत्व होताहै और कभी किसीमें इतना तीक्ष्ण विषका प्रभाव होता है कि जिसका परिणाम बड़ा भयंकर होजाताहै।

इन गले सडे पदार्थोंमेंसे जिनमें वानस्पत्य सडांध अर्थात् वनस्पतिके अंशांशही विशेष होतेहैं उनके उपयोगसे ज्वर जुखाम मूर्च्छा आदि उपद्रव होते हैं और जिनमें जांतविक अंशांश अधिक होते हैं उनके उपयोगसे वमन होना जीमिचलाना और विशूचिका (हैजा) इत्यादि उपद्रव होते हैं।

इसमें यहभी ध्यानदेनेके योग्य बातहै कि हरएक पदार्थमें जल और अग्निके संयोग होने से उसमें विकृति उत्पन्न होती है अन्यथा प्रायः विकृति नहीं होती इसीलिये ठंढे देशों और ठंढी ऋतुवों (शरदी) में प्रायः हरेक पदार्थ अधिक दिनतक बहुत कम बिगड़ताहै और गर्मी और वर्षामें बहुतशीघ्रही सडने लगजाताहै इसका कारण यह है कि गर्मीमें वायुमें अग्निका भाग (गर्माई) विशेष होती है और वर्षामें जलके परमाणु वायुमें विशेष होकर हरएक पदार्थको विशेष नमी पहुँचाते हैं और उससमय सामयिक गर्मी होतीही है इसीसे इन दिनोंमें बहुत शीघ्र हरएक पदार्थमें विकृति होजाती

इसलिये उक्त दो मौसमोंमें (गर्मी और वर्षामें) इस बात का विशेष विचार रखना चाहिये विशेषकर हमारे भरतखंड जैसे गर्म देशोंमें बहुतही विचार का स्थल है।

इससे सदा सर्वदा विशेष करके गर्मी और वर्षाऋतुमें गलेसडे कच्चे पक्के फल अधिक समय का दूध उखराया खट्टा दही बासीमांस अधिक दिनकी मिठाई पकान्न तथा बासी भोजन कई दिनका रक्खा पानी सबसे बचे रहना चाहिये।

विषूचिका।

यह विषूचिका (हैजा) काले सर्प के विषसेभी कभी अधिक भयंकर और शीघ्रमारक होता है डाक्टर वैद्य और हमीम तक पहुँचने नहीं देता है कभी कभी बडे २ डाक्टरों वैद्यों और हकीमों सभीके मनखोल यत्न करते रहने परभी दुःसाध्य होता चलाजाता है और प्राण लिये बिना नहीं छोड़ता जब यह इतना भयंकर और शीघ्रमारक है तो इसका वर्णन भी इस पुस्तकमें करना परमावश्यकीय बात है।

कोई इसे निकम्मी हवा से और कोई पानीके बिगाडसे कोई अनुचित भोजनसे कोई गर्मीकी अधिकतासे कोई अजीर्ण से और एक प्रकार के अतिसूक्ष्म कृमियोंसे इसका होना बतातेहैं परंतु हम युक्ति पूर्वक ठीक ठीक इसका विवेचन करतेहैं।

यद्यपि हमारे आयुर्वेदमें इसका मुख्यहेतु अजीर्णही लिखाहै तौभी यह बात प्रत्यक्ष है कि हरएक रोगके कमसेकम दो कारणहोतेहैं जिन्हें वैद्य संनिकृष्ट और विप्रकृष्ट कारण कहते हैं तथा डाक्टरीमें परीडिसपोजिंगकाज और इकसाइजिंगकाज कहेत हैं—सुतरां हमने बहुत

विचारके साथ यह निश्चयकिया है कि इस भयंकर रोग का आदिम कारण उसप्रकार के वायु का विष है जिसमें सड़ेहुवे जांतविक परमाणु अर्थात् एनीमल्स (animals) अंशांश हैवानी माद्दे अधिकहों।

इसका प्रमाण यह है कि प्रथम तो यह रोग गर्मीमें प्रायःविशेष होता है जबकि जंतुवोंके शरीरसे समल बाष्प (पसीना) अधिक निकलकर उसके अंशांश वायु में मिलतेहैं और सबही जांतविक मल मूत्रादि शीघ्र दुर्गंधित होकर (सडकर) उनका विष वायुमें मिलाहोता है दूसरे जहां बडे मेले जिनमें थोडी जगहमें हजारों लाखों मनुष्यादि इकट्ठे होते हैं और कुछ दिन अप्रबंधित अवस्थामें रहतेहैं और उनके श्वास पसीने तथा मल मूत्रादिके परमाणु अधिक संचय-होकर वायुमें मिलते हैं वहां यह दारुणरोग करालकालकी भांति संहारकारक होता है—तीसरे जिन प्रांतोंमें विष्ठा मूत्र तथा मृतजीवोंके अवयव एवं अन्य जंतुजन्य सडांध होती है या जहां वेही परमाणु इकट्ठे के इकट्ठे वायुद्वारा प्रसरण करते हैं वहांही यह व्याधि अधिक होती है—चौथा प्रमाण यह है कि सड़ाहुवा दूध या दही या मांस या अन्य वस्तु जिनमें ऐसे परमाणु अधिक हों खाया जाने बल्कि सूंघनेहीसे जी बिगडजाता है जी मिचलाने लगता है और छर्दि (कै) होजा-तीहै जो विषूचीकासमागमसा प्रतीत होने लगजाता है इत्यादि।

सारांश यह है कि जैसे वारीके तपका आदिमहेतु वानस्पत्यजन्य मलयुक्त वायु (मेलेरिया) है और दूसरा कारण उसके भडकाने वाला अजीर्ण शर्दी गर्मी आदि अधिक लगजाना होता है उसीप्रकार इस भयंकर विषूचिका का प्रथम कारण तो जंतुजन्य मलयुक्त वायु है

जो श्वास आदि द्वारा मनुष्योंके शरीरमें प्रविष्ट होताहै और दूसरा कारण उससमयका अयोग्य भोजनादि ।

यह जांतविक मल परमाणुरूप वायुमें मिलकर श्वासादिसे मनुष्योंके शरीरमें प्रवेश होता है इसीसे यह रोग ववाई और संक्रामक (एकसे दूसरोंको लगनेवाला) होता है ।

यह जांतविक मलजन्य विषयुक्त वायु जिस प्रांत और समयमें अधिक होता है और जिनमें प्रवेश होता है उनके फेफड़े, आमाशय (मेंदे) और जिगरको इतना क्लेदित और अयोग्यसा करदेता है कि फिर थोडेहीसे खान पान आदिकी खराबीसे झट मनुष्य इस कालरूपरोग (कालरा) के फंदेमें पड़जाता है ।

कइयोंको अत्यंत क्षुधाके पीछे अयोग्य खान पान आदिसे भी यह रोग होजाताहै इसका कारण यह होता है कि कोठा खाली (निहायत खाली) होजानेके पीछे जठराग्नि अवशिष्ट रस तथा मलादिकको चोषण करती है और उनके चोषण होनेके पीछे शारीरक अवयवोंकी द्रवतादिको चोषण करती है इससे वहांके शारीरक अवयवोंके परमाणु दूषित और विदग्ध होकर उसके आमाशयादिमें उसी उपरोक्त प्रकार का शारीरक जांतविक मल विष रूप संचित होजाता है फिर उस अवस्थामें अतिकरडा वासी या अधिक भोजन या अयोग्य खान पान कियाजानेसे उसका परिपाक ठीक नहीं होता और फिर वह भोजन पानादि भी उस पूर्व संचित जांतविक विषके संसर्गसे विषरूप धारण करलेता है जिससे वही वमन अतिसरण और विषूचिकादि उग्र व्याधि होजाती हैं ।

इसी सं० १९५७ के वैशाखमासमें मालवे और मारवाड आदिदेशके क्षुधित कंगलों (अकालग्रस्तों) में यह विषूचिकारोग (हैजा) बहुत भयंकर रूपसे फैलाथा उसका कारण भी प्रथम तो यह हुवा कि भूखके मारे बहुत मनुष्य सूख और मरगयेथे जिससे वायुमें वही भयंकर जांतविक विष अधिक होगयाथा और दूसरे यही उपरोक्त कारण अति क्षुधित को अयोग्य या अधिक खान पानका संपर्क समझना ।

कइयोंको निरापद स्थानमें शरदीके दिनोंमें भले चंगे और क्षुधारहित व्यवस्थामें भी यह व्याधि होजाती है इसका कारण ऐसा प्रतीत होता है कि व्याधि होनेसे कुछ दिन पहले यातो सडे मैले जांतविक परमाणु किसी खास तौरपर उसके शरीरमें प्रविष्ट होरहे हों अथवा व्याधिसे पूर्व असमीचीन दूध दही घृत या मांस आदि जांतविक पदार्थोंका अयोग्य या अधिक वर्ताव भोजनादिमें हुवा हो जिसके विदग्ध अंशांशादिका मलीन भाग आमाशय पक्काशयादिमें उपस्थित हो ।

कभी कभी दही छांछ आदिके योगसे पकायेहुए खाटे कढी राबडी आदि खानेकी वस्तुवोंमें भी गर्मी वर्षाके समय इसप्रकारके मलीन जांतविक विषके अंशांश पैदा होजाते हैं जिनसे इस भयंकर व्याधिका होना संभव है—इसी अभिप्रायसे हमारे देशके पुराने कानून अर्थात् धर्मशास्त्रमें भाद्रपदमें दही और आश्विनमें दुग्धखाना दूषित लिखाहै और हमारे देशमें चातुर्मास्य विशेषकर श्रावणमें कढी खानेको दूषित समझते हैं और इस प्रकारके भोजन (खाटेके

पदार्थ) चातुर्मास्यमें बनाना और खाना शिष्टाचार नहीं है-हमने कई मनुष्योंको चातुर्मास्यमें ऐसे पदार्थ खानेसे यह भयंकर रोग होते देखाहै तथा अत्यंत और अयोग्य तथा बार बार खानेवालेभी कई इस दारुण रोगमें फँसजाते देखे हैं ।

(वक्तव्य) इसमें यहभी है कि यह तीक्ष्णाग्निवाले बालकोंके तथा मंदाग्निवाले वृद्धोंके बहुत कम होताहै किंतु समाग्नि और विषमाग्नि वाले युवा मनुष्योंमेंही यह विशेष करके होताहै इन्हेंही प्रायः भयंकर होताहै-इसकी रिपोर्ट (अर्थात् मृत्युका लेखा) देखनेसे यह बात भलीभांति सिद्ध होसकती है कि जितने इस व्याधिसे युवा मनुष्य मरते हैं उतने बुड्ढे तथा बालक नहीं मरते और हम स्वयंभी इस बातको विचारते हैं तो विशेषकर जवान इसमें ज्यादे बीमार हुवे तथा मृत्यु होते पायेजाते हैं- कारण इसका यह है कि तीक्ष्ण अग्निवालेका भोजन झट पचजाताहै जिससे आमाशयादिमें विशेष ठहरने तथा सडजानेका अवसर उसे प्रायः नहीं मिलता और मंदाग्निवालोंके आमाशयमें भोजनको गर्माईही कम पहुँचती है और बिना अधिक गर्मीके कोई पदार्थ शीघ्र सडनहीं सकता इसीसे इनके कोठेके आहारादिको बहुत ठैरने परभी सडनेका (और उससे जांतविक मादे सूक्ष्म विषैले कृमि पैदाहोनेका) अवसर बहुत दिनतक नहीं मिलता-किंतु इनके सिवाय विषमाग्नि और समाग्निवालोंके ये दोनों बातें नहीं होतीं इससे उन्हें प्रायः इस व्याधिका भय अधिकहै ।

इसकी संप्राप्ति और साध्यासाध्यता ।

इसमें दोषका प्रभाव आमाशय (स्टमक अर्थात् मेदे) तथा

पक्वाशय (इंटिस्टाइंस अर्थात् अमआ) और यकृत् (लिबर अर्थात् जिगर) तीनोंमें होताहै आमाशयगत दोष होनेसे जी मिचलाना वमन होना तृषा तथा पेटमें सूंडीके ऊपर दर्द होताहै और पक्वाशय गत दोष होनेसे पतले और अधिकदस्त होते हैं तथा सूंडी (नाभि) के नीचे मरोडेका दर्द होताहै तथा जिगरमें दोषका प्रभाव होनेसे जठराग्नि नष्ट होजाती है परिपाक होना बंध होजाताहै जिगर अपना काम नहीं करता आमाशयसे द्रव भाग नहीं खैंचता जिससे मूत्र उतरना बंद होजाताहै और मूर्च्छा (बेहोशी) शरीर ठंढा होना हाथ पाँव ऐंठना कंपहोना आंखें फटजाना और गड जाना इत्यादि दारुण उपद्रव होते हैं आमाशयगत दोषसे सुखसाध्य समझना और पक्वाशयमें पहुँचनेसे कष्टसाध्य तथा आमाशय पक्वाशय और जिगर तीनों दूषित होजानेसे असाध्य होजाताहै वस्तुतः यह जिगरके दूषित होनसे घोर और भयंकर रूप धारण करताहै और मृत्युकारक होजाताहै।

यह अनुलोमज और प्रतिलोमज दोनों प्रकारसे होताहै प्रथम आमाशयमें विकार होकर फिर नीचे पक्वाशयकी तरफ पहुँचे वह अनुलोमज होताहै जैसे पहले जी मिचलाना वमन होना आदि होकर फिर दस्तहों- तथा पहले पक्वाशयमें विकार होकर फिर ऊपरको गमनकरे वह प्रतिलोमज है जैसे पहले पतले दस्तहों फिर जीमिचलावे वमनहो इत्यादि इसमें वायु ऊर्ध्वगामी होताहै कभी दोषका प्रभाव दोनोंमें बल्कि जिगरमें भी एक साथही होताहै अनुलोमजकी अपेक्षा प्रतिलोमज कठिन और तीक्ष्ण होताहै और जिसमें तीनो

स्थानोंमें दोषका प्रभाव एकदम होताहै वह तो महाभयंकर और दुःसाध्यही होताहै ।

कभी कभी वमन और दस्त नहीं होते जरा जी मिचलातेही मनुष्य मूर्च्छितसा होजाता है उस विलंबिका अर्थात् बंधहैजा कहतेहैं—और जिसमें सूखी वायुके गोलेसे ऊपरको चढें और मल और अधोवायु रुक जावे पेट फूल जावे और दर्दभी हो तो इसे अलस कहतेहैं इसमें घोर उपद्रव हों तो यह असाध्य होजाती है—डाक्टरीमेंभी इसके तीन दर्जे लिखेहैं ।

इससे बचे रहनेकी विधि ।

सदा और विशेषकर गर्मी तथा चातुर्मास्य के समय में जांतविकमलके अंशोंसे यथासंभव बहुतही बचे रहना चाहिये—खूब सफाई रखना मकान शरीर मेदा और वस्त्रादि सब साफ रखने चाहिये—बहुत मनुष्यों तथा पशुवोंके भारी समूहमें यथासंभव नहींजावे गरिष्ठ वासी सड़े भोजन नहीं खाने—बहुत देरका दूध उखराया खट्टा दही दुर्गंध युक्त घृत और मांस खानेवालोंको वासी मांस कभी नहीं खाने चाहिये कच्चे या बहुतदिनके टूटे गले सड़े फल तथा ककडी खरबूजे आडू कोहला टेंडसीं इनका भी वर्त्ताव ऐसे दिनोंमें अनुचितहै ।

स्थानमें गूगल या धूप या लोवान या कर्पूर या गंधक नित्यजलाना चाहिये विशेष करके गंधकका जलाना अत्यंत श्रेष्ठहै क्योंकि अतिसूक्ष्म जांतविकमल (कृमियों) के नष्ट करनेमें गंधक जितना उत्कृष्ट और उत्तम प्रभाव रखताहै उतना और नहीं ।

कपूर या केवडा पोदीना वगैरह सुगंधित पदार्थ पास रखना और कभी समय समयपर सूंघते रहना–ताजा चरपरा स्वाद भोजन भूंख लगेपर करलेना–अधिक भोजन और भोजनपर भोजन भी नहीं करना चाहिये–साफ कूवेंका ठंढा ताजा पानी पीना, पोदीना कालीमिरच सेंधानमक तथा हींग आदि पाचन वस्तु कभी खाते रहना (ऐसे पाचन औषधों की गोली चूर्ण या चटनी बनाकर कभी कभी खाते रहना अच्छा है ।

इसका उपाय ।

इसका प्रथम कारण जांतविक्रमल होनेपरभी दूसरा कारण कुत्सित खान पान या कुछ न कुछ अजीर्ण अवश्य है आमाशय की क्षुद्रनतासे हो चाहे निकम्मे भोजनादिकी दुष्टतासे हो परंतु जब कोई वस्तु आमाशयमें पहुँचे और आमाशय उसे नहीं पचावे अथवा जिगर उसके भागको ग्रहण नकरे तभी यह होता है क्योंकि आमाशयमें पहुँचाहुवा भोजन आदि थोड़ी देरभी योंही रहे और पचने नहीं लगे तो वह विषके समान होजाता है इसीसे इसरोगकी मुख्य औषध तेजपाचनहै जिनसे तत्कालही डकारें आकर वह भोजन उलट पलट होकर पचने लगे नहीं तो जितनी देर अधिक उस अपच विषरूप भोजनका अंश आमाशयमें रहता है उसका विष प्रभाव सारे शरीरमें फैलने लगता है और जिगरकी अग्निको नष्टकरता है और उसके कार्यको विगाडदेता है जिससे तीव्र वमन और दस्त होते हैं क्रांति

घटजाती है कंप मूर्च्छा आदि दारुण उपद्रवः होतेहैं मूत्र नहीं उतरता इससे इसका यत्न बहुतही शीघ्र करना चाहिये ।

इसके आरंभमें पाचन औषध देनी चाहिये जैसे ।

पोदीना ६ माशे कालीमिरच ६ माशे सेंधानमक १ तोला और मुनीहींग १ माशे इन्हें पीस चूर्णबनाकर आरंभमें एकएक माशे-कईबार देतेरहना अच्छाहोता है ।

अथवा नौसादर १ तोला सेंधानमक ६ माशे जवाखार ६ माशे सोंठ १ तोला कालीमिरच एकतोला भुनीहींग ३ माशे सबको बारीकपीस कर आकके फूलके जीरे (अर्थात् बीचकी फुल्ली) की नमी देकर घोटकर चनेके बराबर गोली बनावे एक एक या दो दो गोली दोतीन बार घंटेभरके अंतरसे देना श्रेष्ठ होता है ।

अथवा गंधकवटी जो हम पहले गंधकके प्रकरण में लिखआये हैं उनमें से एक एक या दो दो घंटे घंटेभरके अंतरसे देनीचाहिये यह गंधकवटी विषूचिका के नष्टकरनेमें बहुत श्रेष्ठ होती है क्योंकि जितना प्रभाव गंधक में इसके कृमि नष्ट करनेका है उतना और में नहीं है जब गंधककी धूनी इसके कृमियोंको नष्ट करदेती है तो आमाशय आदिमें हुए इसके कृमियों और विकार को अवश्यही नष्ट करदेती है

अथवा बृहत् शंखवटी १ या २ गोली देना भी उचित है अथवा अमृतसंजीवनी गुटी २ देना श्रेष्ठ होता है ।

(वक्तव्य) बृहत् शंखवटी और अमृतसंजीवनी गुटी बनानेकी विधिग्रंथ बढजानेके भयसे हमने यहां नहीं लिखी वैद्यकके भावप्रकाश योगचिंतामणि आदि पुस्तकोंमें जिनकी इच्छा हो देख लेवें ।

विषूचिकामें उपद्रवानुरूप यत्न ।

यदि नेत्र फटेसे हों गड़ जायँ तो उसमें यह अंजन लगाना चाहिये त्रिकटु, करंजके बीज, हलदी इन्हें बिजौरेके रसमें गोली बनाकर छायामें सुखाले फिर इनका अंजन करे ।

यदि तृषा बहुत अधिक हो तो पीपलकी छाल अग्निमें तपाकर अग्निरूप होनेपर उन्हें जलमें बुझालेवे फिर उस पानी को नितारकर थोडा थोडा एक एक घूंट पिलावे ।

यदि मूत्र पैदानहो और न उतरता हो तो गुरदोंपर राईका पिलस्टर लगावें बल्कि जिगर परभी इसका लेप करदें तो और भी अच्छाहै ।

वमन (कै) अधिक हों तो आरंभमें तो रोकना ठीक नहीं पर यदि बहुतही अधिक हों तो रोकदेना ठीकहै मेदेके ऊपर कौडीके पास अफीमका लेप करनेसे वमन रुकजाती है अथवा वहां राईका लेप करे ।

यदि दस्त बहुतही अधिक और बहुत पतले हों तो उन्हेंभी रोकदेना उचित है दस्तबंध करनेके लिये अफीममें चौथाई पोदीनेका फूल (सूखा पेपरमेंट) मिलाकर मोठके बराबर गोली बनाले उनमें से एक या दो या तीन तक देवें ।

यदि शरीरमें कंप या ऐंठन हो तो सोंठ या अजवायन की पोटली से मले ।

यदि शरीर ठंढा पडने लगे तो कायफलको अफीमके तेलमें मिलाकर मालिश करनी चाहिये ।

डाक्टरलोग यथायोग्य रीतिसे उपद्रवोंके अनुसार पेपरमेंट कपूरका अर्क—क्लोरोडाइन इत्यादि औषध देते हैं—कपूरके अर्ककी दो तीन बूंद बताशेमें डालकर दी जाती हैं ऐसे एक या दो या तीन बताशे घंटे घंटे भरमें देते हैं पर कपूरके अर्कपर पानी पीना मनाहै ।

साधारण रीतिसे आरंभमें पोदीनेका फूल चावलके बराबर योंही या बताशेमें रखकर खाना भी अच्छाहै ।

यूनानी हकीम जहरमोहरे खताईको गुलाब या पानी में चनेके बराबर घिसकर देतेहैं इसके साथ पानी २ तोले के अनुमानतक घोलनेमें लेसकतेहैं वास्तवमें यहभी फायदा करताहै कै और दस्त दोनोंको रोकताहै ।

अथवा इसीतरह दरयाई नारियल और पपीताभी गुलाब या पानी में घिसकर देतेहैं ।

इस व्याधि के लिये अन्य शिक्षा ।

यह व्याधि संक्रामक होतीहै इससे इसके रोगी को और मनुष्योंसे अलग रखना चाहिये और इसके दस्त कै वगैरह को मिट्टीसे दबा देना चाहिये ।

इसके रोगी के पास जानेवाले मनुष्यको गंधक की धुनी अपने शरीर और अपने कपडोंमें लगाकर अन्यत्र जाना चाहिये ।

इसके रोगीको जहांतकहो कच्चा पानी नहीं पिलाना चाहिये और डकारशांति हुय विना भोजन देनाभी ठीकनहीं ।

साधारणसी वमनादिहो तो भी चावल तरबूज ऐसी चीजें खिलाना उचित नहीं ।

यदि व्याधि उग्र मालूम देवे तो आरंभहीमें किसी सुज्ञ डाक्टर वैद्य आदिसे चिकित्सा करावे ।

डाक्टरीमतसे कुछ विषोंका वर्णन ।

अंग्रेजीमें विषको पाइजन (Poison) कहतेहैं यद्यपि इनके यहां प्राकृतिक (स्वयंपैदाहुए स्थावरजंगम) विष भी माने जातेहैं और काममेंभी आतेहैं परंतु कृत्रिमविष इनके यहां बहुत होतेहैं अर्थात् किसी वस्तुका तेज सत्त्व निकाला हुवा महातीक्ष्ण विषके तुल्य होजाता है उसेभी एक प्रकारका विषही समझना चाहिये जैसे नाइट्रिक एसिड (शोरेका तेजाब) इत्यादि ।

इनके यहां विषके तीन मुख्य भेद किये हैं (१) इरीटेंट जिससे के और दस्त बहुत ज्यादे जारी होजावें (२) नारकोटिक जिससे दिमाग या दिलके कर्तव्यमें अंतर आजावे और शरीरके हरेकभागकी गति म सुस्ती होकर बेहोशी वगैरह होजावे (३) नारकोटिक्यूइरीटेंट (जिसमें दोनों बातेंहो)

यद्यपि डाक्टरी मतके अनुसार विषोंकी कुछ गिनती नहीं और हैं भी असंख्यात परंतु जो जो बहुत प्रसिद्धहैं प्रायः उनके नाम उपद्रव मारकमात्रा तथा मारकअवधि यहां लिखेदेतेहैं जिससे मनुष्य एह-तियात (विचार) रक्खें और साथही साथ हरेकका संक्षेप मात्र कुछ-यत्नभी लिखेदेतेहैं कि दैवयोगसे किसी ऐसी जगह काम पडजावे जहां डाक्टर वैद्य हकीम कोई भी नहो तो वहां यथासंभव कुछ तो यत्न करसकें ।

विषका नाम.	मारकमात्रा	उपद्रव	मारक अवधि	यत्न
आर्सनिक (संखिया)	२ ग्रेन	खानेके पीछे मेदेमें दर्द, जलन, मिचली, कै, दस्त, प्यास, गलेमें ऐंठन, खुश्की, फिर श्वासमें तकलीफ क्लेद, शरीर ठंढाहोना,	२ घंटेसे २४ घंटेतक	ईस्टमक पेंप लगाना नीलेथोथेसे कैकराना सीलगरमपानीमें ईस्ट्टिडपर ऑक्साइड आफआइरन मिलाकर पिलाना जादे भिकदारमे लाइटमेगनेशिया देना
स्ट्रैकनिया (कुचलेका सत्व)	$\frac{1}{8}$ ग्रेनसे १ ग्रेन तक	पट्ठोंका खिचना, वदनटूटना, और ऐंठना, कंठमें खुश्की	१० मिनटसे ६ घंटे	क्लोरल क्लोरोफारम टिंचर एकोनाइट टिंचर ब्लाडौना इनमेंसे कोईसा ठीक मात्रासे देना क्लोरोफार्म सुंघाना
एकोनाइटरूट (सींगी मोहरा)	आधेड्राम (२ माशे) से जादे	मुँह हलकमें सुन्नता, झन्नाटा, शिर घूमना, कै, दस्त येभी होसकतेहैं	डेढघंटेसे २० घंटे	नीलेथोथेसे कै कराना उत्तेजक दवा देना तथा मलना–देशीदवा जदवार (निर्विषी) पिलाना
एकोनाइटीना (सींगीमोहरेका सत्व)	ग्रेनका दशवां भाग	”	”	उपरोक्त

(१) ग्रेन अनुमान आधरत्तीके बराबर होताहै और ड्राम चारमाशेका होताहै तथा औंस अढ़ाई तोलेका होताहै और आधासेर (४०) तोलेका पौंड और १० पौंड (पांचसेर) का १ गेलन होताहै ।

(२) इस्टमकपेंप वह होताहै कि एक पिचकारीमें एकतरफ रबडकी नली होती है उसे मेदेमें प्रवेश करदेते हैं दूसरी तरफ और नली होती है पिचकारीसे मेदेके अंदरका विषयुक्त द्रव खैंचकर दूसरी तरफकी नलीसे बाहर निकालदेते हैं ।

विषका नाम.	मारकमात्रा	उपद्रव	मारक अवधि	यत्न
इस्ट्रीमूनिया (धतूरा)	आधेड्रामसे जादे	मुंह और कंठमें खुश्की अतिप्यास मिचली कै नेत्रोंकी पुतली फैलजाना	२४ घंटेके अंदर	सफेदतूतियेसे कै कराना, तथा शिरपर ठंढेपानीके तरडे देना
ओपियम (अफीम)	४ ग्रेनसे जादे	शिरमें चक्कर, नींद, बेहोशी श्वासमें खर्राटे	२४ घंटेतक	सफेदतूतियेसे कै कराना चलाना फिराना, स्टमकपंप लगाना देशीदवा हींग देना
भंग, गांजा, चरस	एकड्रामसे जादे	इनसे आदमी कम मरता है पर मूर्च्छा होजाती है कंठमें खुश्की. शिरमें चक्कर,	"	शिरपर पानीका तरडादेना, तथा वमन करादेना
ओकजिलीक एसिड	आधा औंस	कंठ और मेदेमें जलन, हेररंगकी कै होना ।	१० मिनटसे जादे	वमनकराना, स्टमट पंपलगाना खडियामिट्टी मेगनेशिया पानी में घोलके पिलाना
बेलाडौना	"	इसके उपद्रव धतूरेके समानहैं	२४ घंटा	पानीका तरडा देना कै कराना
टारट्रामिक	२ ग्रेन	आँतोंमें मेदेमें जलन, कै, दस्त, प्यास, और दर्द तथा ठंढा पसीना	कई घंटे	टैनन कत्था और वानस्पत्य संग्राहक वस्तु देना
टुबेको (तमाखू)	आधाड्राम	चक्करआना, कै होना, बेहोशी ।	चंदघंटे	ताजादूध पिलाना देशीदवा है

विषका नाम.	मारक मात्रा	उपद्रव	मारक अवधि	यत्न
सलफेटऑफकापर (तूतिया)	आधाऔंस	जी मिचलाना, कै, मेदेमें दर्द, चेहराफीका होना।	४ से ८ घंटेतक	गर्मपानी पिलाना, दूधमें अंडे फेंटकर देना
सलफेट औफजिंक (सफेद तूतिया)	,,	,,	,,	,,
एसीटेट औफ कापर (जंगार)	दोड्रामसे विशेष	तीक्ष्ण के हरीनीलीहों, शिर और पेटमें दर्द, आरंभसे वमन होनेसे तांबेके अंश कम मारक होते हैं ।	,,	इस्टमक पंपलगाना पानीपिला खूब कै कराना हैवानी कोयला अंडेकी सफेदी देना
मुरंजान (कड़वी)	,,	जलकादर्द पेटमें होना क दस्त, प्यास, प्रलाप	चंद घंटे	तेज दवासे कै कराना गृसीमें संच.लन दवा देना
बाइसलफ्यूरेट औफ आरसनिक(मेनसिल)	एक ड्राम	इसके उपद्रव संखियेके समानही प्राय: होतेहैं (ऐसेही तबकी हरताल है)	,,	यत्नभी संखियेके विषनाशकही के समान करें
सलफ्यूरिक एसिड (गंधकका तेजाब)	,,	शीघ्रमुँह हलक मेदेमें जलनका दर्द, जहां लगे वहांका गलना गलाघुटना	१ या २ दिन	मेगनेशिया लुआबदार चीजें पिलाना
फास्फोरस	१ ग्रेन	पेटमें जलनका दर्द, प्यास चमकीलीकै	४ घंटे	लुआबदार अर्क पिलाने थोड़ीसी अफीम देना

विषका नाम.	मारक मात्रा	उपद्रव	मारक अवधि	यत्न
कारवोलिक एसिड	आधाऔंस	मेदेमें जलन, दर्द, प्यास, बेहोशी	चंदमिनटसे चंदघंटे	,,
क्रोटिनआइल (जमाल गोटेका तेल)	दसग्रेन	हाजमेकी नलीमें जलन का दर्द, बहुत दस्त आना, आतोंमें गर्मी और जखम पड़ना	२४ घंटे	शीघ्र मालूम हो तो खूब वमन कराना डिमलसेंट वस्तु देना अफीम देना
क्रोजोसिवलीमेंट (रसकपूर)	४ ग्रेन	खातेही गर्मी जलन, कंठमें होना पेटमें दर्द कै में खून, कभी दस्त भी	४ घंटे	एलव्यूमन अंडकी सफेदी देना
कोनाइन	दो ड्राम	गलेमें खुश्की प्रलाप श्वास रुकना शिरमें चक्कर गर्मी और बहरापन	कईदिन	तत्काल कै कराना पीछे दूध पिलाना
क्लोरोफार्म	१ ड्राम	बेहोशी खर्राटेसे श्वास शरीरढीला होना दिलकी चाल रुकना	चंदघंटे	ताजाहवा पहुँचाना बिजली लगाना कृत्रिम श्वास दिलाना उत्तेजक दवा
कैंथराइड्ज	४८ ग्रेन	मेदेमें जलनका दर्द कै दस्त कमरमें दर्द मूत्रबंध होना रुधिर आना मेढ्र उन्नत होजाना	१ या १½ दिन	वमन कराना लुआबदार अर्क पिलाना अफीम देना जरूरतमें रुधिरभी निकालना

विषका नाम	मारकमात्रा	उपद्रव	मारक अवधि	यत्न
नाइट्रिक एसिड (शोरे का तेजाब)	२ ड्राम	गंधकके तेजाबके बराबर	२ दिन	यत्नभी गंधकके तेजाब के समान समझिये
निकस्वामिका (कुचला)	३ ग्रेनसे ज्यादे	कंठमें खराश खुश्कीकुजाज (पट्ठोंमें ऐंठन)	६ घंटे	तमाखूके खिसांदे (शीतकषाय) की बस्ति देना देशी यत्न घृत दूध पिलाना
हैड्रोस्यानिक एसिड	१ ग्रेन	एकाएक बेहोश होजाना, दमरुकना	२ मिनटसे २० मिनटतक	ताजीहवा ठंढापानी छिड़कना
हैड्रोक्लोरिक एसिड	२ ड्राम	सलफ्यूरिक एसिड के समान	१ दिन	यत्नभी सलफ्यूरिक एसिडही के समान
नाइट्रेट औफ सिलवर [कास्टिक]	”	इसके लगनेसे त्वचा जलजाती है	”	खानेका नमक देना

(वक्तव्य) ऊपर जो मारक मात्रा तथा अवधि लिखी है यह सर्वदा पूरातौरसे ठीक नहीं होती क्योंकि इसमें रोगीका बल और प्रकृति देश तथा मौसम तथा खाली भरापेट इत्यादि के अंतरसे विषोंके प्रभावमें भी न्यूनाधिकता होती है।

का :

क्या इ...
यदि ह...
औरत...
बननेव...

भा...
पुरुषों...
कम अनुपातों में है

आयु भी स्त्री की तुलना में अधिक है। यहा आकंड़े पुरुष के पक्ष में हैं फिर यह असंतोष और स्त्री के प्रति बदले की भावना क्यों?

प्रगति और शिक्षा की लहर

शिक्षा के मामले में भारत बहुत पिछड़ा हुआ है। १९८१ में साक्षरता का प्रतिशत २४.८८ स्त्रियों में और ४६.७४ पुरुषों में था। विकास के आंकड़ों के अंक घटते–बढ़ते रहते है किन्तु स्त्रियों की शिक्षा के मामले में हम अन्य देशों से बहुत पीछे है।

शहरों व गांवों में विकास कार्यक्रमों के तहत जो सुधार हुआ है उससे स्त्रियां शिक्षा के महत्व को समझने लगी हैं। ऊंची पढ़ाई करके लड़कियां आगे बढ़ भी रही है लेकिन कुल मिलाकर इन स्त्रियों की संख्या इतनी नहीं है कि हम स्त्री शि... दावा ढोल बजाकर कर सके। आज की ...क्षित स्त्रियों की संख्या इतनी अधिक है कि हमारे सारे प्रगति के दावे झूठे लगते है।

कामकाजी और नौकरीपेशा औरतों की परेशानी

आज जो औरतें आर्थिक रूप से अपने घर–परिवार की सहायता कर रही है उनकी हालत भी कोई बहुत अच्छी नहीं है। इनको दोहरी मेहनत करनी पड़ रही है। हमारे मुल्क ...

...किया कि ...ां अपने ...ुविधायें ...रुष को ...ी और ...कोशिश ...सा में
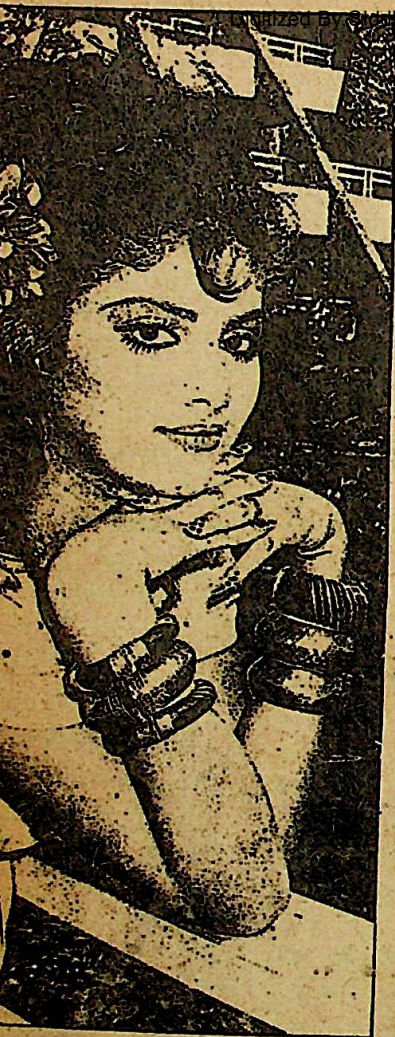
में स्त्री जन्म सेही हीन–भावना लेकर पलती बढ़ती है। कि वह दुनिया पुरुषों की है। उसे सब सहकर जीना है। शमा की तरह जलकर भी उसे हर हाल में रोशनी रोशीनी है।

समझौतावादी आचरण

आमतौरपर स्त्रियां भाग्यवादी परम्परावादी, स्थितियों से समझौता करने वाली, सहनशील व संतोष होती है। उनके हिस्से में सुख की ...

...तलाक, वे... नियति के... कोने की... औरत बि... चूनर ओढ... विदेशी स्त्रि... पाती।

उत्तरा... में सुरक्षा, ... है? साहित... एक सुघड़... औरत ने... म... पुरु... कविता... का सुन्दर... है तो औ... सकता? ... महिला सं... क्या सत्री... पाए है? अ... नहीं, मिटा... यथार्थ की... औरत को...